श्रीमुनीन्द्राय नमः

अथ श्रीबोधसागरे

सप्तमस्तरंगः

ग्रन्थ हनुमानबोध

अजर ज्ञान करुणा यतन, सत्य कबीर अवतार।
तासु चरण वन्दन किये, होवे जगत उधार।

धर्मदास वचन--चौपाई

धरम दास विनवे करजोरी। तुम समरथ हौ बन्दी छोरी॥
युगन युगन में तुम चलि आये। आदिअंत की खबर लगाये॥
एक अनुराग मोरे मन आया। सो प्रभु कहु करि मो पे दाया॥
हनुमतको कब मिल्यो गुसाँई। सो प्रभु मोहिं कहिये समुझाई॥

---

१ हु इति प्रसिद्धे नु इति वितर्के इस व्युत्पत्तिसे जो मान्य के योग्य होवे, अथवा-"मैं माया तत्कार्य नहीं और वह मेरा नहीं किन्तु मैं तिसका द्रष्टा हूँ" इस निश्चयवानका नाम हनुमान है। सो मन इन्द्रियादिक जड पदार्थोंकी अपेक्षा प्रत्येक आत्माही (चैतन्य होनेसे) मान्य करने योग्य है। इससे प्रत्येक आत्माको ही हनुमान कहते हैं, अथवा —

अनादि पक्षके षट् वस्तुओंमें जीव ईश्वर दोनों आई हैं। उनमें राम ईश्वर हैं और लक्ष्मण जीव रूप मुमुक्षु हैं। मानरूप इन्द्रदेवको जीतनेवाला गुरु ही इन्द्रजीत है। सो गुरुरूप इन्द्रजीतके ज्ञानरूप शक्ति के मारने से मुमुक्षु रूप को मूर्च्छा हुई अर्थात्-आवरण विशिष्ट अज्ञानांशका नाशही मूर्च्छा है, तब विक्षेप विशिष्ट अज्ञानांश रूपमानने शरीररूप पर्वतसे प्रारब्ध रूप संजीवन बूटी लाकर मुमुक्षुरूप लक्ष्मण की मूर्च्छा छुडायी अर्थात् निज स्वरूपसे भिन्न सर्व नाम रूप जगत् मिथ्यात्वका भाव निश्चयरूप बोधिक होना अर्थात् संसारकी प्रतीतिपूर्वक जो जीव मुक्ति सोई मूर्च्छा-

हनुमत कहिये महा अभिमाना । कैसे लीन साहब सो पाना ॥
कैसे हनुमत सेवा ठानी । कैसे उन बचने सो मानी ॥
यह वृतांत कहो तुम ज्ञानी । रामचन्द्र के हनुमत मानी ॥
कैसे तिन हिरदय नाम समाई । सब दया करि तुम कहहु सो साँई ॥

कबीर वचन

कहै कबीर सुनु धर्मनि आयी । त्रेता युग महँ हनुमत चिताई ॥
सेतुबन्ध रामेश्वर हम गयऊ । तहवाँ पहुंच हम मुनीन्द्र कहयऊ ॥
साखी-सेतु बन्द में जायके, देखा हनुमत वीर ।
बहुत कला है तासुकी, सबही बजर शरीर ॥
कहत मुनीन्द्र सुनो हनुमाना । तुमको अगम सुनाऊ ज्ञाना ॥
तुम्हरे मनमें जो अभिमाना । तजि अभिमान सुनहु तुम ज्ञाना ॥
सत्य पुरुष की कथा सुनाऊँ । अगम अपार भेद बतलाऊँ ॥
सत्यसुकृत की कथा यह भाई । जाकर तुम मर्म नहिं पाई ॥
सत्यपुरुष की कथा अपारा । ताकर तुमही करहु विचारा ॥
ताकी गति तुम जानत नाहीं । जो पुरुष पूरण सब माहीं ॥
काहि की सेवा करहू भाई । सो सब मोहि कहो समझाई ॥
रामचन्द्र कहिये औतारा । परलय जाय सो बारम्बारा ॥
साखी-सेवत हौ तुम कौन को, करो कौन को जाप ।
सो मोको बतलावहू, कौन तुम्हारो बाप ॥

—चुसना है । आशय है कि, हनुमान नाम अज्ञान विशिष्ट किन्तु विवेकको धारण करनेवाले जीव का है। अथवा इसी प्रकार से गुरुमुखद्वारा पंथका आशय जाननेके प्रयत्न करनेवाले को ज्ञान पारखी गुरु उत्तम रीतिसे समझावेगा तब इन ग्रन्थों का आशय समझमें आसकता है नहीं तो स्वयम् अभिमानमें मरनेवालोंको सत्यका पथ कदापि नहीं मिलता ।

दोहा—बेद उदधि बिन गुरु मुख लखे, लागत लौन समान ।
बादर गुरुमुख द्वार होय, अमृत सो अधिकान ॥

हनुमान वचन–चौपाई

सुनो मुनीन्द्र दृढकरिके बानी । तुम जग महँ हौ बड सुज्ञानी॥
मेरी कला न जगहि छिपानी । तुम मेरी गति नाहीं जानी ॥
पौरुष पराक्रम बल है मोरा । मोसम और नहीं कोइ जोरा ॥
बावन बीर वसौं जग माहीं । मो सम प्राकम कोइ को नाहीं॥
सब बीरन में मैं सरदारा । मेरी कला सब में अधिकारा ॥
सब जग जाने सब मोहि पूजे । मो सम इष्ट और नहिं दूजे ॥
जो चाहो सों कारज सारों । इष्ट करे तो तुरत उबारों ॥
ऐसो प्रसिद्ध जग हम आहीं । सब कोइ जाने तुम जानत नाहीं॥

साखी–सुनो मुनीन्द्र मोरी गति, मोसम और न देव ।
चाहै सो कारज करूँ, दृढ के साधे सेव ॥

मुनीन्द्र वचन

सुनु हनुमान वीर ते बंका । आपे थापे बजावै डंका ॥
आपा थापे भला न होयी । आपा थापी सब गये विलोयी ॥
समरथ की गति तुम ना पाये । आपा थापि तुम रहे भुलाये ॥
समरथ पुरुष और है कोई । ताकी गति जानैं नहिं लोई ॥
हनुमान तुम छोड़ो अभिमाना । तो समरथ को भाषों ज्ञाना ॥
समरथ हुकुम चले जग माहीं । तुम उनकी गति जानत नाहीं ॥
बावन वीर कहै हम जानी । कालपुरुष की सब अगुवानी ॥
सब बैरिन को काल धरि खावे । जो सत्यपुरुष को गम नहिं पावे॥
चौसठ योगिन बावन बीरा । काल पुरुष के बसै शरीरा ॥
काल पुरुष सब रचना कीना । बीरन को सरदारी दीना ॥
मारहि मार सबन को करई । यह अपराध कौन शिर परई ॥
काल पुरुष को करम अपारा । कैसे धौं करिहो निरवारा ॥
सो अब मोहि बताओ भाई । बल पौरुष कछु काम न आई ॥

तुम हनुमंत सांच हौ बीरा। तुमरे इष्ट अहै रघुवीरा ॥
ताको तुम जो करो बड़ाई। तुम समरथ को गम्य नहिं पाई॥
राम काज तुम भले सुधारा। ताके हुकुम लंका तुम जारा ॥
वह जग में कहिये अवतारा। अगम भेद तुम नाहि विचारा ॥
उनकी लागि रहै सब कोई। जो जस सुमिरें पावे तस सोई ॥
तुम भूले प्रभुता की माहीं। प्रभुता जग में अस्थिर नाहीं ॥
स्थिर घर कोई नहिं जाने। प्रभुता बड़ाई सब मन जाने ॥
जो तुम मानों कहा हमारा। तो तुम पाओ समरथ दर्बारा ॥
साखी-समरथ गति अति निर्मल, प्रभुता अहै मलीन।
जिनकी तुम सेवा करो, सोउ न पावैं चीन ॥

हनुमान वचन चौपाई

सुनो मुनीन्द्र वचन हमारा। रघुपति हैं सबके सरदारा ॥
इनही समान कोउ दूसर नाहीं। तीन लोक के साहिब आहीं ॥
उन प्रताप हम जग सत जाना। हमसों कहा कथौ तुम ज्ञाना ॥
रघुपति को हम जानै परचा। हमसों कहा कथौ तुम चरचा ॥
सागर ऊपर पथर तिराया। ऐसा नाम अहै रघुराया ॥
मैं पौरुष बल आपन जानूँ। कहा कोई का नाहीं मानूँ ॥
यती नाम जानै जग मोहीं। सो मैं भाव सुनाऊँ तोही ॥
तुम जो पूछी पिता की बाता। पिता कहत हूँ औ फिर माता ॥
महादेव देवन सरदारा। जिनको पूजे सकल संसारा ॥
नाहिं बीज की काया मोरी। बजर अंग पायो सब जोरी ॥
गौतम ऋषि की पत्नी नारी। नाम अहिल्या राम उबारी ॥
नाम अंजनी पुत्री ताकी। जनम लियो कूख में जाकी ॥
साधु रूप धरि शिव वन आये। जहाँ अंजनी को मंडप छाये ॥
प्यास प्यास कहि बोले बानी। शिवकी गति माता नहिं जानी॥

कह अंजनी तुम पीयहु पानी। तब शिव बोले और हि बानी॥
तैं निगुरी हम साधु विचारा। तेरा जल नहिं करौं अहारा॥
कहे अंजनी गुरु कहँ पाऊँ। जँगल ते मैं उठि कहँ जाऊँ॥
तब शिव कहे साधु हैं हमही। दीक्षा लेओ देत हम तुम्हही॥
सिंगी नाद रहैं शिव पासा। फूक्यों कान रही तब आशा॥
छल करि बीज दीन्ह तब डारी। तासों उपजी देह हमारी॥
कान रहा लीन्हा अवतारा। पवन पुत्र जाने संसारा॥
पिता मात की सब बिधि भाकी। कहो तो और सुनाऊँ साखी॥
सत्य बात मोरी है भाई। सेवा करौं सदा रघुराई॥
समरथ और नहीं है कोई। रामचन्द्र बड समरथ होई॥
समरथ समरथ कहा बखानो। मैं तो समरथ रामको जानो॥
बहुत कहत हौं बात बनायी। राम नाम तुमहूँ नहिं पायी॥
जाकी थाप तीन पुर माही। राम समान और को आही॥
बुद्धि ज्ञान तबही बनि आवे। जो कोइ राम पदारथ पावे॥
ज्ञान भक्ति सब लागे नीका। विना राम सब जानो फीका॥
सुनो मुनीन्दर बात हमारी। सेवो राम सदा सुख कारी॥
राम विना नाहीं कहुँ जागा। राम नाम मेरा मन लागा॥
दशरथ घर लीन्हा अवतारा। उनकी गति है अगम अपारा॥
बडे बडे उन कारज कीन्हा। तुम मुनीन्द्र भेद नहिं चीन्हा॥

साखी–सुनो मुनीन्द्र मोर गति, रामनाम है आदि।
सो दशरथ घर औतरे, उनका मता अगादि॥

मुनीन्द्र वचन-चौपाई

कहे मुनीन्द्र सुनो हनुमाना। साधु भाव गति तुमहुँ न जाना॥
राम नाम सब जग गोहराई। काहे साधु होय नहिं भाई॥

राम नाम हम नीके जाना । तुमका मोसों करो बखाना ॥
रमता राम बसे सब माहीं । ताहि राम तुम जानत नाहीं ॥
ऐसो राम आहि अवतारा । जिन लंकापति रावन मारा ॥
काल रूप सब करे सँघारा । ताको सुमिरन करै संसारा ॥
घट घट बोले कालकी छांहीं । भेद भाव तुम जानत नाहीं ॥
यह तो राम अहैं अवतारा । विना राम नाहीं निस्तारा ॥
परलय तर जिव रहै भुलायी । काल गम्य काहूँ नहिं पायी ॥
सुनु हनुमत तुम मानत नाहीं । काल गह्यो है तुम्हरी बाहीं ॥
ताते तोहि बूझि नहिं परई । यह औतार काल सब धरई ॥
बार बार धरि यह औतारा । तीनों पुर को करै सँहारा ॥
काल कला कोइ जानै नाहीं । सूक्षम व्यापि रहै सब माहीं ॥
समरथकी गति कालसों न्यारी । ताको कहा जानै संमारी ॥
जो तुम हेतु करि पूछौ मोंही । तौ सब भाषि सुनाओं तोही ॥
समरथकी गति अगम अपारा । तुम नहिं जानो मर्म विचारा ॥
दृढ प्रतीति करौ तो कहिये । साधु होइ साधूगुण लहिये ॥
समुझा बिना को करे विवेखा । विना विवेक सत्य को देखा ॥
विना सत्य उतरे नहिं पारा । राम राम कहि करौ पुकारा ॥
एसे कारज होय नहिं भाई । कौन भांति ते साधु कहाई ॥
यती नाम जो अहै तुम्हारा । षट सो यती बसैं संसारा ॥
कार्तिक[१]भीष्म शंकर अरु गोरख। लछिमन महाबली बड पौरख॥
छोटे तुम हनुमान कहाये । षटमिलिके जग नाम चलाये॥
सो यती षट सब बसे संसारा । विना सतगुरु सब यमके चारा॥
कालरूप का सकल पसारा । कैसी विधि करिहौ निरुवारा ॥

---

१ इन षट यतियों के नामोंमें कई ग्रन्थोंमें कई प्रकार से लिखा है जो ठीक जान पड़े यही रहने दिया है ।

सुनो हनुमंत मेरी बाता। सत्य पुरुष है समरथ दाता॥
ताका तुमसों कहौं संदेशा। सुमिरण करो तजो यम भेशा॥
सत्य समरथ है पैले पारा। काल कला उपज्यो संसारा॥
सोइ समरथ है सिरजन हारा। तीनों देव न पावैं पारा॥
साखी–समरथकी गति को लखै, शिव विरंचि नहिं जान।
काल अकाल तहाँ नहीं, पूरण पद निर्वान॥

हनुमान वचन-चौपाई

कहत मुनीन्दर अकथ कहानी। काल काल की बोलो बानी॥
काल काल कहि मोहि डराओ। तुम तो काल कर गति ना पाओ॥
काल पुरुष आपे वह होई। और काल देखा नहिं कोई॥
आपुहि करता आपुहि काला। चौदह भुवन आपे रखवाला॥
कालपुरुष ते और न कोई। निश्चय कै मैं माना सोई॥
सबका पिता काल है जोई। ताकी गती लखै ना कोई॥
ज्योति स्वरूप जग उजियाला। ताका नाम धरा तुम काला॥
जो तुम कहो सबै हम जानी। सुनो मुनीन्दर मोरी बानी॥
रचना सकल काल की ठानी। तुम अपने मन हो बड ज्ञानी॥
काल पुरुष गति परे न जानी। सो हम जानि छानि के पानी॥
काल पुरुष ते बडा न कोई। उनके ऊपर और न होई॥
जाको नाम निरञ्जन राया। तीन लोकमें ताकी माया॥
उनते और नहीं कोइ दूजा। तीनलोक में उनकी पूजा॥
तीनों देव जो उनको ध्यावें। ते भी उनको पार न पावें॥
ताको तुम सूक्षम करि जानो। तुम्हरे मन काहे नहिं मानो॥
इतनी भयी हनुमान मुख बानी। रचना सकल काल की खानी॥
उनको पार बताओ मोहीं। उठि के शीश नवाऊँ तोहीं॥
जो तुम आदि अंत सब जानो। तो तुम ज्ञान अब हमसे ठानो॥

पहिले सुनो हमारी बाता । तुम मुनीन्द्र हो बडा ज्ञाता ॥
मोरे पौरुष है बड जोरा । जन्म लेत कीन्हे घनघोरा ॥
जांदिन जन्म भयो महि मोरा । उदय भानु देखि मैं दौरा ॥
सूरज बाहर आवन नहिं दीना । निकसन तुरत लीलि मैं लीन्हा॥
एक फलांग उर्धाचल गयऊँ । सो पौरुष मैं तुमसे कहेऊँ ॥
माता कीन जब बोल अधीना । उनके कहे छाडि हम दीना ॥
सूरज छाडि दीना हम जबहीं । जग प्रकाश भयो पुनि तबहीं॥
जन्मत की यह कथा सुनाई । कहो तो और सुनाऊँ भाई ॥
राम प्रताप का हम कीन्हा । सो मुनीन्द्र नाहीं तुम चीन्हा॥
एक समैं जो राम बतायी । लंका खबर लाओ तुम जायी॥
लंका छोडि पलंका गयऊँ । जाय नगरमें ठाढो भयऊँ ॥
तब तिन कही यह नहिं लंका । पीछे तजि आयेऊ पलंका ॥
कहांलो कथा कहौं जो भाई । अपने मुख कहा करौं बडाई ॥
लक्ष्मण मूर्छित गिरे भुई भाई । तब द्रोणागिरि आनि जिवाई॥
जेहि पै वही सजीवन होती । दैत्यन छली कीन्ही बहु जोती॥
रातहिं को द्रोणगिरि लाये । रामवीरं को तुरत जगाये ॥
यही द्रोणगिरि लेके दौरा । फिरि के धरो जाइ तेहि ठौरा ॥
ऐसे कारज अनेक सवाँरे । उनहि प्रताप कार्य उजियारे ॥

साखी–सुनो मुनीन्दर मोर गति, पौरुष औ बल जोर ।
अपना गुण मैं जानिके, कासों कहों निहोर ॥

---

१ जब शमदमादिका अभ्यास करके मुमुक्षु ज्ञान प्राप्त करनेके निकट पहुंचाता है तब यदि प्रारब्ध उसी शरीर तक होती है तब तो आत्मज्ञानको प्राप्त हो जाता है और जीवन्मुक्त पद को भोगता है किन्तु यदि वर्तमान शरीरका प्रारब्ध अनेक शरीरका कारण होता है तब वह ज्ञान कुछ समय के लिये छिप जाता है।

२ वीर-भाई । रामवीर अर्थात् लक्ष्मण ।

मुनीन्द्र वचन चौपाई

बड हनुमान पौरुष तुव आही । आदि पुरुष तुम जानत नाहीं ॥
समरथ रूप नहीं कोइ जाने । उरली बात सब कोइ बखाने ॥
समरथ गति कोइ नहिं जाने । बिनु देखी सो कही को माने ॥
बल पौरुष हम सब विधि जाना। तीन लोकमें सो करत पयाना ॥
तीन लोकमें अमल तुम्हारा । चौथा लोक सतगुरुका न्यारा ॥
तुमतो निरञ्जन निजकर जानी । ताका हुकुम लीन्ह शिर मानी॥
पुरुष निरञ्जन ते है पारी । समरथ लगी है बास हमारी ॥
तहां काहु को बास न होई । वहां पहुँचि सकै नहिं कोई ॥
यहाँ तुम कार्य करत हो भाई । तुम्हरे इष्ट अहैं रघुराई ॥
सोऊ कला निरञ्जन केरी । सत्य पुरुष गति तुम नहिं हेरी॥
साखी-तीन लोकमें नाम निरञ्जन, जाकी तुम सिफत करी ।
वह कोइ समरथ और है, जिन यह सब मांड धरी ॥

हनुमान वचन चौपाई

सुनो मुनीन्दर दृढ करि ज्ञाना । तब तो भेद भया निरबाना ॥
समरथ को अब भेद बताओ । हम सों नहीं कछु भेद दुराओ ॥

मुनीन्द्र वचन

सुनु हनुमत कहों निज ज्ञाना । तोसों भाषों भेद विधाना ॥
समरथ को अब भेद बताऊँ । तुम सों भेद अब नाहिं दुराऊँ॥
आदि अनादि पार के पारा । ताको अगम्य अब सुनो विचारा॥
जो प्रतीति होय जिव माहीं । सत्य शब्द समरथ की छाहीं ॥
समरथ शरण बडा है भाई । बल पौरुष सुखसागर पाई ॥
तादिन की यह कथा सुनाऊँ । जो मानो तो कहि समझाऊँ ॥
समुझि करो अपने मन माहीं । वह तो अकथ कहनकी नाहीं ॥
जो कहौं तो कौन पतियायी । देखी सुनि नहिं वेदन गाई ॥

हंस गति पाये नहिं कोई । मोर सँदेश मानै नहिं सोई ॥
ताते गये विगोइ विगोई । नहिं मानै दुख पायो सोई ॥
सत्य शब्द मैं कहौं बखाना । बूझ होय तो बूझो ज्ञाना ॥

साखी–बूझ करो हनुमत तुम, हौ तुम हंस स्वरूप ।
राम राम कह करत हौ, परे तिमिर के कूप ॥
राम राम तुम कहत हौ, नहिं सो अकथ सरूप ।
वह तो आये जगतमें, भये दशरथ घर भूप ॥
अगम अथाह तुमसों कहौं, सुनि लो अगम विचार ।
उत्पति परलय तहँ नहीं, साहब सिरजन हार ॥

चौपाई

सुनो हनुमत यह कथा नियारी । तब नहिं हती सो आदि कुमारी ॥
जाते भयी सकल विस्तारी । सो नहिं होती रचने हारी ॥
आदि भवानी सो महमाया । ताकी रचना हती न काया ॥
नहीं निरञ्जन की उत्पति कीन्हा । समरथ का घर काहु न चीन्हा ॥
तब नहिं ब्रह्मा विष्णु महेशा । अगम ठौर समरथ को देशा ॥
तब नहिं चन्द्र सूर्य्य औ तारा । तब नहिं अंध कूप उजियारा ॥
तब नहिं सात सुमेरु औ पानी । समरथ की गति काहु न जानी ॥
तब नहिं धरणि पवन आकाशा । तब नहिं सात समुद्र प्रकाशा ॥
पांच तत्त्व तीन गुण नाहीं । नाहीं तहाँ और कछु माहीं ॥
दश दिगपाल लखे नहिं लेखा । गम्य अगम्य काहू नहिं देखा ॥
दशों दिशा इन रचना रांची । वेद पुराण गीता इन बांची ॥
मूल डाल वृक्ष नहिं छाया । उत्पति परलय हती नहिं माया ॥
तब समरथ हते आपु अकेला । धरम माया नहिं मनको मेला ॥
विन सतगुरु को ठौर लखावे । भूली राह कौन समुझावे ॥

साखी–हनुमत यह सब बूझिके, करो आपनो काज ।
निर्भय पद को पाइके, होय अभय सो राज ॥

हनुमान वचन-चौपाई

सुनो मुनीन्दर वचन हमारा। हम नहिं जानै भेद तुम्हारा॥
कहो प्रतीति कौन विधि आवे। कैसेके यह मन पतियावे॥
यह प्रतीति कौनो विधि आयी। तब हम जानि करब सेवकायी॥
जहँ समरथ तहाँ हम जावे। तबही हमरा मन पतियावे॥
उहाँ जाइ इहाँ फिरि आऊँ। तब मैं मन परतीति लगाऊँ॥
जो तुम सत्य सत्य कहि भाखी। तो मोको दिखलाओ आँखी॥
करौं प्रतीति गहौं तुव शरणा। बारम्बार बंदौ तुव चरणा॥
जो गहि तुम दिखावो मोको। तबही झूठ न जानौं तोको॥

साखी-सुनो मुनीन्दर मोरि गति, बिन देखे नहिं पति आउँ॥
आदि सृष्टिकी तुम कहत हौ, तहाँ कौन विधि जाउँ॥

मुनीद्र वचन-चौपाई

जब ऐसो कह्यो हनुमाना। उठे मुनीन्द्र मनमाहीं जाना॥
उठते देखा फिरि नहिं देखा। देह विदेह भये अवरेखा॥
पवन रूप होइ गये अकासा। बैठे पुरुष विदेही पासा॥
चहुँदिशि देखे हनुमत वीरा। कौन सुरतिको भयो शरीरा॥
गैल महिं चले पगधारी। परम प्राण तहँ लगी खुमारी॥
देखत चन्द्र वरण उजियारा। अमृत फलका करे अहारा॥
असंख्य भानु पुरुष उजियारा। कोटिन भानु रोम छवि भारा॥
देखा चारों दिशा सब झारी। पता न पाय रहे जब हारी॥
तब हनुमत हाकँ तहँ मारी। तुम मुनीन्द्र अहो सुखकारी॥
अब प्रगट होइके दर्शन दीजे। तुम्हरी विरह मम हिरदय भीजे॥

साखी-भये विदेही देहधरि, आये हनुमत पास।
और वरन अरु भेषही, सत्य पुरुष परकाश॥

चौपाई

तब हनुमत सत्य के मानी । सही मुनीन्दर सत्य हो ज्ञानी ॥
अब तुम पुरुष मोहि दिखाओ । मेरा मन तुमते पतियाओ ॥
अगली कथा कहो कछु मोही । कौन नाम तुम्हारा होही ॥
कैसी विधि समरथको जाना । सो कछु मोहिं सुनाओ ज्ञाना ॥
वचन तुम्हारो है परमाना । कहु अब समरथ कौन अस्थाना ॥
निज गुरुज्ञान आपन मुहिं दीजे । दास आपनो मुहिं करि लीजे ॥

साखी-समरथको अस्थान अब, मोको देहु बताय ।
कौन जगत वह रहत है, सो मुनि कहु समझाय ॥

मुनीन्द्र वचन-चौपाई

करि परतीति मानो हनुमाना । बल पौरुष मोरा तुम जाना ॥
नहिं जानो तो और जनाऊँ । समरथको अस्थान बताऊँ ॥
योगजीत मोरा है नाऊँ । होय ज्ञानी मैं जगमें आऊँ ॥
दोऊ नाम लोक के भाई । देह धारि जग करो लखाई ॥
तादिन को अब कहौं सँदेशा । जब मैं हतो समरथके देशा ॥
एक बार करि सुनो हमारी । समरथकी गति कहौं विचारी ॥
पहिले भये निरञ्जन राया । फिरिके ध्यान पुरुष उपजाया ॥
फिरि तब भयी शक्ति भवानी । मेरो नाम धर्चो तब ज्ञानी ॥
यह तो कथा बहुत है भारी । तुम अपने मन लेहु विचारी ॥
कछु संक्षेप सुनाओ तोहीं । निश्चय के जो मानो मोहीं ॥
महामाया समरथ सो आयी । ताको धरम ग्रास्यो जायी ॥
लीलत कन्या कीन्ह पुकारा । समरथ मोरा करो उबारा ॥
तब मोकहँ भयो हंकारा । योगजीत तुम करो उबारा ॥
मारो धर्मराय शिर फोरो । महाशक्ति को बन्धन छोरो ॥
महाशक्ति को बन्धन भारो । धर्मराय शिर काट जो डारो ॥
तबही तुरत तहाँ में आया । काट्यो माथ कढी महमाया ॥

मोरे मन तब आयी दाया । अमी सींचि के फेर जिवाया ॥
धर्मराय समरथ के चोरा । सेवा करिके कीन्ह निहोरा ॥
काल नाम धर्मराह कहाया । जबते वह ग्रास्यो महमाया ॥
माया ब्रह्म दोऊ मिलि साजा । तासों तीन लोक उपराजा ॥
तीन पुत्र तिनकर सो भयऊ । तिन सब रचना सो करिलयऊ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश बखाना । इन तीनोंको सब जग जाना ॥
समरथ को कैसी विधि पावे । जाको तीन देव भरमावे ॥

हनुमान वचन

सुनि हनुमत तब भये अधीना । अहो मुनीन्द्र हम तुमको चीना॥
सत्य प्रतीत भयी जिव मोरे । अब मैं तुमसे करौं निहोरे ॥
होय आधीन पूछत हौं स्वामी । सो मुहि कहिये अन्तरयामी ॥

साधु लक्षणविषयक प्रश्न

साधु साधु संसार बखाने । कहो साधु कैसी विधि जाने ॥
साधु बडे की महिमा बड भाई । साधु नाहि महिमा अधिकाई ॥
ऋषि मुनि सबही साधु बखाने । कहो साधु कैसे विधि जाने ॥
सेवा साधू सब गोहरावें । कहो साधु कैसे लखि पावें ॥
कौन साधु सो मोसे कहना । साधु शरण मोहि निश्चय गहना॥
सोई साधु बताओ मोही । उठिके शीस नवाऊँ तोही ॥
तुम तो साधु साधु मत जानो । सोइ दृढकरि मोरे मन आनो॥
जो तुम कहो साधु मैं सोई । इन्द्री साधन मोपहँ होई ॥

अर्थ-हनुमानजी कहते हैं कि, हे साहिब ! यदि आप कहो कि इंद्रीजित पुरुषको साधु कहते हैं तो मैंने सब इंद्रियोंको वशमें कर रक्खा है तो क्या मैं साधु हूँ ?

साधन चेते साधु कहाई । के कोइ साधु और है भाई ॥
सो निश्चय मोहि कहो समझाई । मैं परतीति तुम्हारी पायी ॥

साखी—कहो मुनीन्द्र सत्य कै, कौन साधु जगमाहिं।
सो मोहि भेद बतावहु, कछु कछु संशय नाहिं॥

साधु लक्षण

मुनीन्द्रवचन—चौपाई

साधु महिमा सुनो हनुमाना। जाके संग पुरुष को जाना॥
मोह मद सो निरसंशय भाई। सोई जग महँ साधु कहाई॥
साधु पुरुष समरथ है सोई। राग द्वेष दुख सुख नहिं होई॥
सोई लक्षण साधु कहावे। सोई साधु अगम घर पावे॥
प्रथम इन्द्री मनही जीते। पूरण ज्ञान कबहुँ नहिं रीते॥
तत्त्व प्रकृति अपरबल माया। इनको जीते साधु कहाया॥
काम क्रोध लोभ हंकारा। सोइ साधु जिन ये सब मारा॥
होना साधु सुगम नहिं भाई। साधु सरूप अति कठिनाई॥
हार जीत मान न अपमाना। ऐसे रहित सो साधु निबाना॥
शील संतोष दया कर भाऊ। क्षमा गरीबी साधु कहाऊ॥
प्रेम प्रीति धीरज गुण खानी। सो है साधू निर्मल ज्ञानी॥
हनुमाना यहै साधु सुभाऊ। तुमही साधो साधु कहाऊ॥
साधुलक्षन मैं तुमहिं सुनाया। ऋषिमुनि कोइ गम्य नहिं पाया॥
साधू महिमा है अति सांची। साधु वचन ते यमते बांची॥
आदि अंत गति साधु न जानो। सो साधू समरथ मन मानो॥
सत्य सत्य साधु मन जाना। सो साधूको निर्मल ज्ञाना॥
साधु बडे बडापन नहिं चाहे। साधुन की मति ऐसी आहे॥
साधु समान कौन नहिं दूजा। जाको अगम निगम सब सूझा॥
तन मन धन सब साधि है जोई। जिन अपनी दुर्मति को खोई॥
सोई साधु जगमाहिं कहावे। नहिं तो बहुत जगत रहावे॥
साखी-सुनु हनुमत यह साधु गति, को करि सकै बखान।
जाको सत संगति भयी, सो कछु पायो जान॥

हनुमान वचन-चौपाई

सुनो मुनीन्द्र मोर यक बाता । कहां रहत हैं समरथ दाता ॥
ताको नाम कहो निय जागा । अब मेरा मन तुमसों लागा ॥
सकल भेद कहि दीजे मोही । मोरी सुगति लगी है सोही ॥
तुमतो संत सकल सुखदायी । तुम्हरे हे नहिं कछु मान बडायी ॥
सत्य साधु सत्य मैं जाना । सत्य सत्य है तुमरो ज्ञाना ॥
पूरण पद है ध्यान तुम्हारा । मैं अपने दिल कीन्ह विचारा ॥

साखी-पूरण पद निज ध्यान है, सो मोहि देहु बताय ।
धर्म निरञ्जन तहाँ नहिं, काल दगा नहिं खाय ॥

मुनींद्र वचन-चौपाई

सुनो वीर हनुमान विचारा । कठिन विवेक खांडेकी धारा ॥
ताका तुम कीजै इतवारा । निश्चय कारज होय तुम्हारा ॥
अब सन्देह रहे कछु नाहीं । साधु भये साधो मन काहीं ॥
समरथ का तोहि नाम सुनाऊँ । सो युक्ती तोको दिखलाऊँ ॥
सुनो हनुमंत खुशी मन आऊ । ऐसा अगम तोहि ठौर दिखाऊँ ॥

साखी-अगम ठौर जेहि गम्य नहिं, तहां नहीं कोइ जाय ।
सुरति निरति यक घर धरो, हनुमत गहो तुम आय ॥

हनुमान वचन-चौपाई

हे स्वामी यक संशय आयो । कौन भाति तहँ सुरति लगायो ॥
कौन भांति मैं लागूँ धायी । सो तुम मोहि कहो समझायी ॥
पौरुष बलसों लागो जाई । क्षण इक जाओं तेहि ठाई ॥
राह बाट तेहि मोहि बताओ । काया को सब भेद लखाओ ॥
तुम समरथ समरथ को जाना । सो मोहि कहिये ठौर ठिकाना ॥
जेतिक युक्ति तुम्हारे पासा । सो मोहि दिखलाओ अगम तमासा ॥

कहो शिताब[1] विलम्ब नहिं करना । निश्चय हम आयो शरना ॥
ले पहुँचाओ ठौर दिखाओ । ऐसी वस्तु गहर जनि लाओ ॥
साखी—गहर न लाउ मुनींद्र तुम, हौ समरथ मतिधीर ।
मैं सेवक निज दास हौं, अरपूँ सकल शरीर ॥

मुनीन्द्र वचन

धन हनुमन्त तुम्हारी वानी । तुम मोरी गति नीके जानी ॥
समरथ मिलत है दोय प्रकारा । भक्ति ज्ञानसे होइ उबारा ॥
तीसरि योग युक्ति है भाई । मुक्ति होय संदेह मिटाई ॥
तीन प्रकार है समरथ केरो । सो गर्भवास नहिं लेउ बसेरो ॥
जासों भक्ति जो होय सबेरा । पावे अगम ज्ञान सो टेरा ॥
सतगुरु केवल है निज ज्ञाना । सो बिरले कोई साधुन जाना ॥
तीन गुप्त तीनों तोहि भाखा । परदा अन्तर कछू न राखा ॥
सो अपने मन करो विचारा । समरथ नाम सो पइयो सारा ॥
प्रथम भक्ति करो समरथकी । योग युक्ति ज्ञान सुनु नीकी ॥
निष्कपटी होयके साधुमनाओ । साधुनके चरणों चित लाओ ॥
जो साधू अपने धर्म रहाओ । सेवो ताहि परदा नहिं लाओ ॥
ऐसी भक्ति जेही मन भावे । भवसागर को भर्म मिटावे ॥
साधु कहै सो राह गहि लीजे । साधु कहै सोई पुनि कीजे ॥
सुनु हनुमंत कहों जो बानी । कूर्म वायु सो अनुभव ज्ञानी ॥
नाग वायु धरि वास समानी । तामें अमी अंक जल पानी ॥
अमीमाहि यक बेलि उपजायी । तासों नागबेलि चलि आयी ॥
पान सोई सन्धि राखे भाई । समरथ मुख ऐसी फरमायी ॥
पुनि समरथ ऐसी अर्थायो । पान जाहि तुम देहो जायी ॥
सो हंसा हमारे घर अइहैं । अभय अशंक सदा सुख पइहैं ॥

---

१ जल्दी शीघ्र ।

तिनुका तोरि करो जिव कोरा । छूटे काल मिटे झकझोरा ॥
चौका आरति करि बिस्तारा । हनूमान तुम लेहु निरधारा ॥
समरथ हुकुम भक्ति यह ठानी । जाते यम नहिं बांधे तानी ॥
बनि आवे तो करिये भाई । नातो लीजो पान बनाई ॥

साखी—यहि समरथ की भक्ति है, सुनो ज्ञानकी रीति ।
योग युक्ति निज भाषेऊँ करौ सो निजके प्रीति ॥

चौपाई

अब तुम ज्ञान सुनो हनुमाना । समरथ को है निर्मल ज्ञाना ॥
निराधार आधार न कोई । पहुँचे साधु शूरमा सोई ॥
निर्गुण सगुन ध्यान करिपावे । तहां सगुन निरंजन नहिं आवे॥
अनुभव वाणी करे परकाशा । सो साधू मोर स्वाँस उस्वाँसा॥
महाकठिन खाँडे की धारा । ऐसा निर्गुण ज्ञान हमारा ॥
निर्गुण सर्गुण दोनों नाहीं । है सो हंस नामकी छाहीं ॥
तीनों गुणते सगुण सो होई । चौथा गुण निर्गुण है सोई ॥
निर्गुण सगुण दोउ के पारा । शब्द अरु स्वास नहीं ओंकारा॥
अदभुत ज्ञान विकट है भाई । विकट राह कोइ बिरले पाई ॥
ज्ञान गहे बिनु मुक्ति न होई । कोटिक लिखे पढ़े जो कोई ॥

---

१ इस चौपाईके तीन पाठ सब ग्रन्थोंमें अलग २ मिलते हैं । एक तो यही है । दूसरा पाठ यह है—
"निर्गुण ज्ञान ध्यान धरि आवे । तहँ कोइ सगुण नजर नहिं आवे ॥"
तीसरा पाठ यह है—
"निर्गुण ध्यान धरे जो पावे । निर्गुण सगुण नजर ना आवे ॥"

इसी प्रकारसे अनेक प्रतियोंमें अनेक मतभेद हैं कहां तक कहा जाय । पश्चातके लेखक महाशयोंकी कृपासे न मालूम कबीरपन्थी साहित्यमें क्या २ फेर हुआ है और होता जाता है ।

साखी—भक्ति ज्ञान तुमसों कह्यो, सुनि लो योग अपार।
रोम रोम को गुण कहूँ, काया का विस्तार॥

चौपाई

काया है यह समरथ केरी। काया की गति काहु न हेरी॥
शिव गोरख जो योग कमाया। काया को ओर छोर नहिं पाया॥
कौन गुननसे ठाढी काया। कौन सुरति कौन है माया॥
कुंज गली सुनो हनुमाना। यह निज भेद काहु नहिं जाना॥
सोई भेद कहों तुम पाहीं। सुनिके तुम समझो मन माहीं॥
बडे बड़ाई सब पचि हारे। यह निज भेद है अगम अपारे॥
समरथ सागर समरथ वासा। तासों उपजी समरथ स्वासा॥
स्वासा अन्तर बोले जो बानी। अमी बुन्द ढरके यक जानी॥
तासों बीज भये अकूरा। काया कारण सब भरपूरा॥
सोई बीज धर्मराय जो पाया। शक्ति एक धरि जामन लाया॥
सो वह शक्ति रक्त की मूला। तासों भयो बीज अस्थूला॥
कायाकी गति अगम अपारा। हनुमत ताको तुम करो विचारा॥
तीन लोक जाहिर है भाई। सो सब काया भीतर आई॥
सो कायाका करो विचारा। हनुमत सो तुम करो निरधारा॥
अष्ट चक्र कमल है आठा। लागे बन्धन तीनसे साठा॥
नौ नाडी है बहत्तर कोठा। अन्तर पट संपुट सो घोठा॥
परम सुमेरु है दस दरवाजा। पांच तत्त्व तीन गुण छाजा॥
चन्द्र सूर वहाँ दोउ विराजैं। इंगला पिंगला सुख मनि साजैं॥
समुन्दर सात काया के माहीं। नौ सौ नदी बहे तिहि ठाहीं॥
दशौ दिशा कायाके भीतर। यहि देवल सब देव अरु पीतर॥
यहि काया वैराट स्वरूपा। ज्योति स्वरूप वसत है भूपा॥
निरंजन है कायाके माहीं। ओम ओंकार माया की छाहीं॥

रंरकार गरज ब्रह्मण्डा । सप्त द्वीप परगटे नौखण्डा ॥
समरथ अंश बसे अस्थीरा । अस्थिर बस्तु वसैं घर धीरा ॥
ताको कोई चीन्हे नाहीं । ताते सब जग मरि मरि जाहीं ॥

साखी–कायाके गुण अगम हैं, सुनु तुम हनुमत वीर ।
नहिं काहुको लखि परे, अटपट रचा शरीर ॥

हनुमान वचन–चौपाई

अहो स्वामी मैं सब विधि जानी । तुमही समरथ तुमही ज्ञानी ॥
कहा अस्तुति तुम्हारी कीजे । अमृत बचन सुनी हम भीजे ॥
सब संदेह मिटायो मोरा । जनमजनमका मिट्यो झकझोरा ॥
सुखसागर अमर घर चीन्हा । भले सतगुरु मोहि दर्शन दीन्हा ॥

साखी–दर्शन देइ मुनीन्द्र तुम, मोको किया सनाथ ॥
भौ सागरसे लै चले, केश पकडि गहि हाथ ॥
हनूमान आधीन है, लीन्हो सहज को पान ॥
जब मुनीन्द्र शिष्य किये, दे समरथको ज्ञान ॥ *

खण्ड ब्रह्माण्ड पारके पारा । तहँ समरथको घर तत सारा ॥
निर्भय घर है तहां सो भाई । रोग न व्यापे काल न खाई ॥
ताका तुम जो सुनो विचारा । समरथ का घर है सबके पारा ॥
सबके पार रहे निरधारा । पिंड ब्रह्माण्ड ताके आधारा ॥
सो समरथ है सबसों न्यारी । सुनु हनुमत तुम लेहु विचारी ॥

---

* पुरानी प्रतियोंमें यह पुस्तक इसी साखी तक समाप्त हो गई है किन्तु १९१३ सम्वत्‌वाली प्रतिमें और भी अधिक है सो इस साखी के आगे से आरम्भ होकर अन्ततक है।

इतना ही नहीं बहुत पुरानी प्रतियोंमें आदिमें "सेतुबन्ध में जायके, देखा हनुमतवीर" से ही पुस्तक आरम्भ भी होती है किन्तु उस साखीके ऊपर की चौपाई नवीन प्रतियोंमें पाई जाती है, और उससे कोई किसी प्रकारका बिगाड नहीं होता इस कारण उसे लिख दिया है।

अक्षर सो निःअक्षर है न्यारा । ओम ओंकार ताहि आधारा ॥
तीनों गुणका जो विस्तारा । रंकार है सबके पारा ॥
ताके दरे निःअक्षर धारा । सोई भेद निज आहि हमारा ॥
ये सब हैं समरथ आधारा । समरथ शक्तिको वार न पारा ॥
ताकी आश करे जो कोई । उतरे पार भौसागर सोई ॥

हनुमत कहे साहिब सुनो, तुम हो दीन दयाल ॥
तुम समान रघुपति नहीं, काट्यो यमको जाल ॥

कबीर वचन—चौपाई

कहै कबीर सुनो धर्मदासा । वही ज्ञान मैं तुम्हें प्रकाशा ॥
हनुमत अंश पुरुष का होई । तब हम उनको मिलिया सोई ॥
हनुमत बोधि चले हम जबहीं । चतुर्भुजके ढिग पहुँचे तबहीं ॥
उनसे कीना ज्ञान विचारा । वह हंसनका है सरदारा ॥
चतुर्भुजको हम दियो गुरु आई । ताहि बनायो दर्भंगा राई ॥
जो कोइ तुम्हारा वीरा पावे । सो हंसा सतलोक सिधावे ॥
इतनी कहिके हम काशी आये । चलत चलत कछुवार नहीं लाये ॥
काशी विद्या गुरु बहुतोई । पण्डित ज्ञानी बहुते होई ॥
धर्मदास तुम वंश हमारा । तुम्हरे काज हम यहां पगु धारा ॥
तुम्हरे हाथ पान जो पावे । बहुरि न योनी संकट आवे ॥

साखी—कहे कबीर धर्मदास सों, हनुमत बोध्यो जाय ।
पान परावना देइके, तुमको मिलिया आय ॥
धर्मदास वन्दन करे, धनधन हो सत्यकबीर ।
हनुमतको दर्शन दियो, धन है हनुमत बीर ॥
छन्द—धन्य साहिब धन्य हो तुम दर्शन दीनो ।
कीजे दया अब दासपे जाऊँ चरण लागु धाइके ॥

वीर हनुमान बोध के ले दिया पान प्रसादहो ॥
शेष शारद विष्णु नारद नाहि न पावें आदि हो ॥
सोरठा—नाहिं न पावे आदि, शिव ब्रह्मा अरु नारद ॥
तुम्हरो वदन निहारि, धर्मदास वन्दन करे ॥

इति श्रीबोधसागरांतर्गतकबीरधर्मदाससंवादे
हनुमानबोधवर्णनो नाम सप्तमस्तरंगः

सारविचारपचीसी

★

साखी-ब्रह्मादि सनकादिले, मुनिवर आदि प्रयन्त ॥
विन गुरु मोह निशा शयन,सुख अपने न लहन्त ॥ १ ॥
गुरुके गुण गावे सभी, सत्य सही विनु लक्ष ॥
मायाके उपदेश अज, हरिहर कालके भक्ष ॥ २ ॥
कर्म धर्म मति तीन ले, अज हरिहर समुदाय ॥
गावहिं ध्यावहिं ताहि कह,जेहि सब जीव नशाय ॥ ३ ॥
कहने को चूके नहीं, जेती जिसकी दौर ॥
सबे शब्द सहिदान है, परख शब्द सो ठौर ॥ ४ ॥
वही प्रमाण सबन मिलि कीन्हा,ज्यों अंधेरे की हाथी॥
आदि बाप कौ मरन जाने, पूत होत नहिं साखी ॥ ५ ॥
अँधरे को हाथी सांच है, साचे हैं सगरे ॥
हाथन की टोई कहें, आंखिन के अंधरे ॥ ६ ॥
शब्दातीत शब्दते पाइन, बूझे विरला कोइ ॥
कहैं कवीर सतगुरु की सैना,आप मिटे तब ओइ ॥ ७ ॥
जीव दुखी चाहे छुटन, चीन्हे नाहीं काल ॥
आसा देवे निवृत्ति का, भोरे भवके जाल ॥ ८ ॥

तामस केरे तीन गुण, औंर लेइ तहँ वास ॥
एके डारी तीन फल, भांटा ऊख कपास ॥ ९ ॥
जीव फँसे तेहि जाल में, सूझे वार न पार ॥
त्राहि त्राहि निशि दिन करे, साहब लेहु उबार ॥१०॥
साहब को जाने नहीं, हाकिम चोर प्रचण्ड ॥
यह ठाकुर यम देशमें, खण्डपिण्ड ब्रह्मण्ड ॥११॥
नित उपजे नित खपे, निश्चय नष्ट सो मूल ॥
परखहु काल कला सबै, देखि जगत मत भूल ॥१२॥
झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छुटी न काहु ॥
गोरख अटके काल पुर, कौन कहावे साहु ॥१३॥
बिनु पारख वाणी सुने, धावे ताके साथ ॥
घायल अनेकन भावसो, तजहिं न पीटहिं माथ ॥१४॥
बहु कर्महिं अरुझाइ जिव, डोरी अपने हाथ ॥
नाच नचावे यम सदा, कारण कारज साथ ॥१५॥
चाहहिं जो निस्तारन को, इन कर्मन छुटकाय ॥
तेहि तिहुँ फाँस ले धावहीं, बंदी देहि दृढाय ॥१६॥
करम कमाई सबन पर, राज दाम परमान ॥
जन्मत मरत न छोड़ई, विविधि कर्म की खान ॥१७॥
बन्दी खाना जो पडे, जेहि राजा खुशियाल ॥
लोभ गरासे जीवको, सूझे नहीं भव जाल ॥१८॥
जहर जमी दे रोपिया, अमी सींचे सौबार ॥
कबीर खुलुक ना तजै, जामें जौन विचार ॥१९॥
इन्ह आखिन पथरा दिये, समझ दिये भ्रम जाल ॥
क्षण क्षण जीवन जीवके, भोगे काल कराल ॥२०॥

---

१ स्वभाव, प्रकृति ।

मूस बिलाई एक सँग, कहु कैसे रहिजाय ॥
अचरज यक देखो संतो, हसती सिंहहि खाय ॥ २१ ॥
पूरण पिण्ड ब्रह्माण्डसो, त्रिगुण फांस लगाय ॥
नाशक नाशे जीवको, आपे आप कहाय ॥ २२ ॥
बन्दी छोड छुडावई, मेटि मेटि यम फांस ॥
धन्य धन्य सो जीव हैं, तजहिं महा भोगांस ॥ २३ ॥
प्रभु शरणागति परख दृढ, सत्य लोक परमान ॥
संसत जीव विलास है, टूटा काल गुमान ॥ २४ ॥
पारख सीढी झांकिके, उलटि बहै भवधार ॥
थाह न पावहिं बूडहीं, हो ताके निस्तार ॥ २५ ॥

इति

श्रीमुनीन्द्राय नमः

अष्टमस्तरंगः

ग्रन्थ लक्ष्मणबोध

मंगलाचरण-दोहा

जय सुकृत जय मुनीन्द्र प्रभु, जय करुणामय ईश ॥
जय कबीर कलि दुख हरण, सदा नवाऊँ शीश ॥

उत्थानिका (धर्मदास वचन)

दोहा-विनय करत धर्मदास हैं, दोऊ कर को जोर ॥
लक्ष्मण बोध्यो काहि विधि, कहहु सो बन्दी छोर ॥

सत्य कबीर वचन

प्रथम सो सत्यनाम गुण गाऊँ । भक्त हेतु संसारहि आऊँ ॥
अनन्त बार आयो संसारा । देख्यो जमीं[1] खलक[2] मंझारा ॥
साधु संत देखौं सब ठाऊँ । कतहुँ न देखों मुक्त का नाऊँ ॥
झुण्ड झुण्ड बहु देखौं विरागी । कथहिं ज्ञान अल्पे बुधि लागी ॥
तत्त्व शब्द सुने नहिं काऊ । कतहुँ न सुनी परे वहि गाऊ ॥
एक दिन चले द्वारका भाई । देह तजी जहां त्रिभुवनराई ॥
गड रोके बल भद्र रहाये । बहुत चिंता तिन मन उपजाये ॥
कृष्ण देह नहिं दाग लगायी । तब सपने कृष्ण बात जनायी ॥

---

१ पृथ्वी । २ संसार ।

बलभद्र सो कहा समझायी । अगली बात सब दई बुझायी ॥
बलभद्र तुम भक्त हमारा । तुमसे कहूँ मैं सत व्यवहारा ॥
हमरी सीख मानिकर लीजे । जो हम कहैं सोई अब कीजे ॥

बलभद्र वचन

कहै बलभद्र तुम साहब मेरा । हम तो जनम जनम का चेरा ॥
जो तुम कहो सोई मैं करिहों । मानि सिखापनशिरपर धरिहों ॥

श्रीकृष्ण वचन

जैसे कांचली सर्प तजाई । कांचलि रहे सर्प नहिं भाई ॥
याते तनको देहु जलायी । याहि राखी कछु फल नहिं आयी ॥
ठाट दहन तब तहवां भयऊ । जरत ठाठ फेफरा रहेऊ ॥
तब बोले अस गोविन्द राई । पेई एक तुम बेगि बनाई ॥
मट्ठी धरो पेइके माई । सो पेई तुम देह बहाई ॥
पेई सोइ उडीसा जायी । बौद्धावतार की मांड मडायी ॥
ठाकुर कहा सो बलभद्रर कीना । एक पेई बनाय कर लीना ॥
ता पेई पर हीरा जड़िया । सो माटी पेई में धरिया ॥
समुद्र माहिं दइ पेइ बहाई । सो पेई बहत उडीसा जाई ॥
तब राजा को सपना भयऊ । सपना में तेहि बात यक कहेऊ ॥

कृष्ण वचन

राजा सीख हमारी लीजै । बुद्धावतार कि थापन कीजे ॥

राजा वचन

राजा कहै कौन हो भाई । सो मोहि बात कहो समुझाई ॥

श्रीकृष्ण वचन

तब बोले सो गोविन्द राई । हम तो कृष्ण अहैं रे भाई ॥
द्वापर बाचा सम्पूरण भयऊ । ताते ठाट हमहुँ तजि दयऊ ॥

---

१ पेटी, बाकस, सन्दूक ।

अब कलियुग बैठेगा सोई । बौद्ध थापना हमरो होई ॥
जगन्नाथ मम नाम है सोई । हमरी थापना यहि विधि होई॥

सत्यकबीर वचन

राजा जब स्नानको गयऊ । पेई गडी रेत में पयऊ ॥
तब राजा परिकरमा दीना । पेई उठाय के शिर पर लीना ॥
तुरतहि राजा महल ले आवा । तबहि रानि कहँ तुरत बतावा ॥
करे निछावर मंगल गावे । घर घर नगर में बाजु बधावे॥
राजा ब्राह्मण लीन बुलायी । सपने की सब बात सुनायी ॥

ब्राह्मण वचन

ब्राह्मण कहै सुनो महराजा । सुफल जनम सरिहैं सब काजा॥
शुभ नक्षत्र वार धरि लीजे । तब देवल की थापना कीजे ॥
रोहिणी नक्षत्र वार बुध लीना । तब देवल की नींव जो दीना ॥
जब देवल सम्पूरण भयऊ । तबही राजा जग मंडयऊ ॥

पुरातन वार्ता

मंथन उदधि विष्णु जब कीन्हा । निकसी वस्तु बांटि सो लीना ॥
और त्रेता में बांध बँधाये । ताको बैर उदधि मन लाये ॥

उदधि विचार

तबका बैर अबहीं मैं लेऊँ । देवल गाडि रेतमें देऊँ ॥

सत्य कबीर वचन

लगन मुहूरत पहुँचे आयी । तबही देवल गाडि के जायी ॥
छे बार देवल गाड्यो भायी । तब हम हतो जगत के माही॥
पूर्विल कौल सुरति धरि लीना । जाय आशन समुद्र पर कीना॥
उदधि साजि दल जबही आवा । तब हम डाट समुद्र बतावा ॥
तब हंकार समुद्र बतावा । महा क्रोध करि हम पे आवा॥

तब करि क्रोध समुद्र ललकारा । महाफटकार समुद्र फटकारा ॥
तबही पृथ्वी फाटि सो गयऊ । धसी समुद्र पताले गयऊ ॥
तबही खबर लक्ष्मी पाई । बैठा साधु समुद्र के ठाई ॥
तब लक्ष्मी आपे चलि आयी । तब हम शोभा कर्म बनायी ॥
लक्ष्मी कीन दण्डवत आयी । धँसाइ समुद्र पताल पठायी ॥

लक्ष्मी वचन

तब लक्ष्मी संतन सो कहेऊ । महाप्रसाद तुम जगको लेऊ ॥

संत वचन

संत कहे सुनु लक्ष्मी आई । नेवता देहु कबीरहि जाई ॥

सत्यकबीर वचन

तबहीं लक्ष्मी हम पे आयी । आइके कहे हमहि गोहरायी ॥
तबहीं संत कहैं सुनु माई । बैठे कबीरा परले ठाई ॥
तब लक्ष्मी ध्यान पुरुषका कीना । करमी सभा मेटि सब दीना ॥

लक्ष्मी वचन

तबहीं हमसों बात जनायी । तुम करो प्रसाद जगतके मायी ॥

सत्यकबीर वचन

तब हम कहा बात समुझायी । हम तो प्रसाद पुरुषको पायी ॥

लक्ष्मी वचन

लक्ष्मी कहे तुम कौन हो भाई । तुम कैसे गम पुरुष को पाई ॥

सत्यकबीर वचन

कहे कबीर सुनु लक्ष्मी आई । हम तो सेवें पुरुष को पाई ॥
जिन साहिब तुमको कीन्हा । साहिब पति तुम तनको दीन्हा ॥
तुम तो गरबभुलानी सोई । ताते काज सिद्ध नहिं होई ॥
श्याम देह कीना तुम सोई । तब ते तुमरी मुक्ति न होई ॥

लक्ष्मी वचन

तब लक्ष्मी कहे समझायी । तुम कहो सो हम मानें भाई ॥

सत्यकबीर वचन

बावन अटका जगन्नाथ चढाओ । चार अटका समरथ अरपाओ ॥
तब हम न्योते तुमरे आवें । जब तुम सेवो पुरुषके पावें ॥
सुनत लक्ष्मी ठाकुरपहँ आयी । जो कुछ सुनी सुकहि समझायी ॥

लक्ष्मी वचन

भक्त कबीर नाम जो आहीं । सो तो बैठे समुद्र की ठाहीं ॥
जब उन डांट समुद्र बताया । तबहीं समुद्र पाताल समाया ॥
तब हम न्योत कबीरहि दीना । तब कबीर हमसों छल कीना ॥
करमी सभा बनाय सो लीन्हा । तब हम ध्यान पुरुषका कीन्हा॥
मिटिगयी सभा कबीर यक रहेऊ। तब कबीर ऐसे पुनि कहेऊ ॥
जिन साहबने तुमको कीन्हा । काहे विसार तुम उनको दीन्हा॥
तुम तो गर्व भुलाने सोई । ताते कार्य्य साधन नहिं होई ॥
छप्पन अटका जगन्नाथ लगाये । सत समरथ को धरे विसराये ॥
कहा करूँ प्रसाद तुम्हारा । हमको समरथ देवन हारा ॥
हम बिन्ती सतगुरु सों कीन्हा । तब सतगुरु सिखावन दीन्हा ॥
बावन अटका जगन्नाथ चढाओ । चार अटका समरथको अरपाओ॥
तब हम न्योते तुम्हरे आवें । हम तो अंश पुरुष के भावें ॥
उनकी गति मति लखी न जाई । तुम त्रिगुण होय सृष्टि बनायी ॥
हम सतगुरु होय जिव मुक्तावें । हम ती सवें पुरुष के पावें ॥
तुम त्रिगुण का राज कराई । तब बोले गोविन्दे राई ॥

श्रीकृष्ण वचन

ज्योति अंश से हम उत्पानी । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी ॥

लक्ष्मी वचन

तब लक्ष्मी कहै समुझायी । वह तो ज्योति हमारी आई ॥
तुमको तो हम उत्पन कीन्हा । चारि स्वरूप हमहिं रचि दीन्हा ॥
त्रिगुण स्वरूप जो सृष्टि बनायी । चौथे अंश ज्योति थपायी ॥

सत्यकबीर-वचन

तब ठाकुर मन चकित भयऊ। सुनत तब गरव गलि गयऊ॥
तब गोविन्द आपु चलि आये। तब कबीर उठि मिले जो धाये॥
लक्ष्मी गोविन्द कबीर बैठाये। तब गोविन्द एक बात सुनाये॥

गोविन्द वचन

हम तो गतिमति तुमरी न पाई। हमको लक्ष्मी अब समझाई॥
साखी-जो तुम अंशपुरुष के, सतगुरु हौ तुम सोउ।
देवल गाडे रेत में, ताहि वन्दन करि लेउ॥

चौपाई

जबहिं उदधिपल सजिके आया। तबहिं कबीर पुकार जनाया॥
धँसि समुद्र पताले भयऊ। देखत गोविन्द चकित भयऊ॥
तब विन्ती सतगुरु सो कीन्हा। दोयकर जोरि लक्ष्मी आधीना॥
चलो कबीर यज्ञमें पगधारो। तुमते शोभा रही हमारो॥

सत्यकबीर-वचन

छप्पन भोग चढाओ जाई। सत्य समरथको भोग लगाई॥
तब तुम हमको देखो जाओ। अरध प्रसाद रखा जब पाओ॥
तब गोविन्द स्थान उठि आये। जाई उपदेश राजहि सुनाये॥
छप्पन भोग चढाओ जायी। सत्य समरथ को भोग लगायी॥
राजा पंडा कहै बुझाई। छपन भोग चढावहु जाई॥
सो समरथ को भोग लगायी। तब तुम पावो प्रसाद अघायी॥
आध प्रसाद ऋषी जब पाई। तब तुम हमको दिखाओ भाई॥
हारि समुद्र तब ब्राह्मण भयऊ। हाथ जोरिके ठाढे रहऊ॥

समुद्र वचन

कौन हौ भाइ कहांते आये। वस्ती छोडि यहां कस बैठाये॥
यहां तो लहर समुद्रकि आई। आओ यज्ञमें भोजन पाई॥

सत्यकबीर वचन

तबहि कबीर कहे समुझायी । तुम समुद्र कस वरण छिपायी॥

समुद्र वचन

तब समुद्र अस वचन सुनाई । कहा है नाम तुम्हारो भाई ॥

सत्यकबीर वचन

हम तो अंश पुरुष सरदारा । भक्त कबीर है नाम हमारा ॥

समुद्र वचन

तब समुद्र बोले ऐसी बानी । हमतो हार तुमहिं से मानी ॥
हमरो मंथन जब इन कीया । बड़दुख तब इन हमको दीया ॥
और त्रेतामें पैज बँधाई । तबका वैर हमको साले भाई ॥
तुम तो हो सतगुरु होहु सहाई । तुमते हमार कछू न बसाई ॥

सत्यकबीर वचन

तब समुद्र को हम समझायी । निर्धनको चोर कहा ले जायी॥
सब जग साख तुम्हारी देई । तुम दाता हम भिक्षुक होई ॥
इतनी दया तुम हमपर कीजो । बोली करी कथा सुनि लीजो ॥
इनको टहल शीश जो दीना । तापर दुष्ट दगा जो कीना ॥
त्रिया हरण इनकी जो भयऊ । जब इन बनहि बसेरा लियऊ ॥
राम लक्ष्मण हनुमान मिलायी । तब तिन मति असकीन बनायी॥
सागर बाँधनका मता जो कीना । मच्छरूप तुमही धरि लीना ॥
तब तुम ला उनके ठगिरहेऊ । करि विश्वास बहुतै दुख सहेऊ॥
यह अपने मन गरब भुलाना । हमरे नाम सो शिला तराना ॥
राम नाम जब अंक चढावा । धरे पैर जब लीन चुवावा ॥
खत राम तब चकित भयऊ । तबही शीश धूनि कर रहे ऊ ॥
अतिही शोच करे बल वीरा । शीश डुलावे सागर तीरा ॥
जलमें जंतु देख्यो बड भारी । यह तो झूंठी पैज हमारी ॥

तेहि अति दुःखित जब हम देखा। तब हम पृथ्वी ओर अवरेखा ॥
चहुँ फेर बना कंचन का कोटा। ता बिच बैठा रावन खोटा ॥
लक्ष्मण इन्द्रीजीत कहावें। हम चेतावन ताको जावें ॥
प्रथमै हम रावण गढ गयऊ। तब हम तपसी वेष धरयऊ ॥
जब हम रावन सों बात जनाई। वह काढे खडग हम पर भाई ॥
तब हम आडा तृण जो दीना। घाव अठारह तृण पर कीना ॥
कटे न तृण खिसियाना भयऊ। जाय घाव खम्भपर कियऊ ॥
कटि गया खम्भ भया दो भागा। सो मंदोदरि दृष्टिहि लागा ॥
तृणके ओट सो सृष्टिका करता। जग देखत ही भूले समता ॥
कहै मंदोदरि गहि ता पाई। गरब न छाडे रावन राई ॥
तब हम चले ताहि वन गयऊ। लक्ष्मण राम दोऊ जहँ रहेऊ ॥
देख लक्ष्मण धायके आया। आवतही अस वचन सुनाया ॥

लक्ष्मण वचन

कहे लक्ष्मण सुनो ऋषिराई। पिता हुकुम मेटो नहिं जाई ॥
भरत दे राज राम बन अयऊ। तापर दुष्ट दगा जो कियऊ ॥
सीता हरी रावन तेहि ठाऊँ। मैं तो शरण तुम्हारे आऊँ ॥

सत्यकबीर वचन

लक्ष्मण देखि भयी मोहि दाया। अचिंत नाम हम ताहि सुनाया ॥
अचिंत नाम का किया विवेका। गिरिपर लिखी सत्यकी रेखा ॥
काष्ठ समान सो गिरिवर तारी। उतरी सेना सकल भयि पारी ॥
तबही राम लक्ष्मण फरमावा। हमको मुन्दरी आनि चढावा ॥

मुनींद्र वचन

तब कहैं मुनीन्द्र सुनो रघुराई। मुन्दरी धरो कमण्डलमाई ॥
तबहि रामजी आप सिधाये। मुन्दरी डारि ऋषी पै आये ॥
तब मुनीन्द्र यह बात सुनाई। लाओ मुद्रिका दिखाओ भाई ॥
देखि कमण्डल चक्कृत भये भाई। सोचे राम अपने मनमाई ॥

रामचन्द्र वचन

अकथ कथा कही नहिं जायी । कहो ऋषिराय बात समझायी॥
तुम तो धोखा बहुत उपजाये । ऐसी मुँदरी कहां तुम पाये ॥
सोई बात कहो समझायी । जाते संशय जीका जायी ॥

मुनीन्द्र वचन

मुनीन्द्र बोले राम चित धरिया । एति बार तुमसृष्टि औतरिया॥
जिते आकाश में तारा ठयऊ । उते लंका में रावण भयऊ ॥
साखी—नगर अयोध्या राम तुम, भये अनेकहिं वार ।
अपनी आदि भुलाइया, तुम कैसे करतार ॥

रामचन्द्र वचन—चौपाई

रामचन्द्र कहे सुनो ऋषिराई । तुमरी गति मति कही न जाई॥
अजहुँ शिखापन हमको दीजै । जाते काज सिद्धि करि लीजे ॥
काष्ठ समान गिरपर्वत भारी । सेना उतरि सकल भइ पारी ॥

सत्यकबीर वचन

पुरुषोत्तम परतीति बैठायी । ताते काज सिद्धि तब पायी ॥
जाउ समुद्र तुम अपने ठाई । यहि गुनाह मोहि बखशो भाई॥
तुम दाता हम भिक्षुक तुम्हारे । तुमरी साख बडी संसारे ॥
तुम छीलर न होउ बकशो भाई । हम तो जाते यज्ञके माही ॥
अब तुम जाहू अपने ठाई । कञ्चन द्वारिका लेहु बुडाई ॥
जगन्नाथ की महिमा होने दीजै । कञ्चन द्वारिका जलमें कीजे ॥
मानि वचन गयो अपने ठाई । या विधि दीन समुद्र हलाई ॥
इतना कहि हम ठाकुर पर गयऊ। लक्ष्मी रू राम त्रिभुवन रहेऊ॥
छप्पन भोग चढै है द्वारा । लागा भोग ठौरहीं ठौरा ॥
परोसै पण्डा बडी पकौरी । दाल भात और खीर झुंगौरी॥
बहु अचार गिनो नहिं जायी । छप्पन भोग परोसे आयी ॥

ऋषी मुनी सब गरब भुलाये । तब हम एक कला दिखलाये ॥
ऋषि मुनी प्रसाद जब करहीं । जित तित पण्डा परसत फिरहीं॥
जहाँ तहाँ हम ठाढ रहाये । आदर भाव कछू नहिं पाये ॥
जब पण्डा कोइ देखै मोही । तबहीं वचन कहै अस सोई ॥
ऋषि मुनि जब प्रसाद करिलेई । ता पीछे तुमही धरि देई ॥
तब हमही अस चरित दिखावा । कबीर हो गयो ठावहिं ठावा ॥
पुरुष प्रताप अजर शरीरा । होय अन्तर बिच बैठु कबीरा॥
जित देखें तित दास कबीरा । भागे ऋषि समुद्र के तीरा ॥
भागे पण्डा दूर से भाई । किय अस्नान समुद्रै जाई ॥
जाय अस्नान समुद्रमें कीना । काय देखि तब भये मलीना ॥
गलित कोढ सबहिन को भयऊ ।जायफिरियाद रायसो कियऊ॥
वहाँ तो देखा एक शरीरा । यहाँ तो देखा सकल कबीरा॥
ऐसा जादू चेटक कीना । सबका धर्म भ्रष्ट करि दीना ॥
तब राजा छडीदार पठायो । दास कबीर को बेगि बुलायो॥
करि सलाम छडीदार सिधाये । कबीर मिले द्वार के माये ॥
आये कबीर राजाके ताई । तब राजा उठि टेके पाई ॥

राजा वचन

तबही राजा विन्ती कीना । हम तो सेवक सदा अधीना ॥
करहु दया दरद है देही । ब्राह्मण दुःख पावत है तेही ॥

मुनीन्द्र वचन

बडा अपराध उन ब्राह्मण कीन्हा । अन्नदेवको दूषण दीन्हा ॥
अन्नदेव को रोष उपजी भाई । अन्नदेव मनावहु जाई ॥
ऊंच नीच गनो मति कोई । तब काया कंचन सी होई ॥
जगन्नाथ अयोनि अवतारा । उनका है सब सत्य व्यवहारा॥
अन्नका छूत करे जनि कोई । करे तो निश्चय कोढी होई ॥

किनका किनका चुनि चुनि खायी। तबहीं कोढ दूर होय जायी ॥
तबं सब ब्राह्मण सो नाक घसायी। सबका कोढ तबै मिटि जायी ॥
जगन्नाथ का भाव तब भयऊ। राजा रानी मिलि सब गयऊ ॥
जब राजा को दर्शन भयऊ। जगन्नाथ यक बात जनयऊ ॥

जगन्नाथ वचन

मलयागिरि को काठ मँगाओ। ताकी मूरति बेगि बनाओ ॥
तब राजा जासूस पठाई। मलया गिरिको खोज कराई ॥
देख जासूस फिरि नगर मँझारा। आइ राजाको कीन जुहारा ॥

जासूस वचन

अहो राजा चन्दन है यक ठाई। लगे भुजंग देखे बहुताई ॥
तब राजा यह बुधि उपजाई। सेना साथे लयी सिधाई ॥
जहाँ चन्दन तहाँ काष्ठ जगकीना। ताके समक्ष अग्नि सो दीना ॥
भयी प्रचण्ड अग्नि तेहि ठाहीं। जरे सर्प तब अगिन के माहीं ॥
काष्ठ चन्दन जबहीं ले आये। तब कारीगर तुरत बुलाये ॥

राजा वचन

बौद्ध औतारकी मूर्ति गढि देहू। हमसे गाम परगना लेहू ॥

कारीगर वचन

तब कारीगर बात जनावे। राजा सुनो बनै नहिं आवे ॥
देखी मूरति सब कोइ गढई। अनदेखा काम कैसे बनई ॥
देवल काज हम चूक पराई। तो हम जरामूल से जाई ॥

---

१ पुरानी प्रतिमें इस चौपाईके आगे नीचे लिखे वचन नहीं हैं, किन्तु नवीन प्रतियों में हैं। किन्तु यह नवीन प्रतिका वचन कबीर पंथके दोहा ग्रन्थोंसे भी नहीं मिलता।

"जगन्नाथ योनि बिन अवतारा। उनका है यह सत्य व्यवहारा ॥
उनकी भक्ति करं जो कोई। ताकी काया कोढे न होई ॥

साखी—जगन्नाथ भात से हितकारी जो पाय। जो उनकी निंदा करं, निश्चय नरक को जाय ॥"

सत्यकबीर वचन

ऐसी कहि अपने घर वह गयऊ। तब राजा मनमें सोचत भयऊ॥
जगन्नाथ की जो मूर्ति बनाई। गाम परगना तेहि देउँ लिखाई॥
तब लक्ष्मी हमसे विन्ती कीना। यहि शोभा तुमही भल दीना॥
देखी मूरति तब कोइ गढि देई। अनदेखे सो कैसे करई॥
जो तुम हमसे टहल कराओ। यही काम करो तुम जाओ॥
हम पर भार जो सृष्टिका दीना। करो यह काम होहु ना भीना॥
हमको टहल सृष्टिका देहू। इतना कारज अपने शिर लेहू॥
लक्ष्मी विन्ती ऐसी लायी। नातो विरद तुम्हारी जायी॥
तब हम भेष सुतारका लीन्हा। बरस सौकी आयुर्दा कीन्हा॥
आये पौरि मैं ठाढ़ रहाये। पवरिया राजकहँ वचन सुनाये॥
राजा मैं तोहि देउँ बधाई। कारीगर आया पौरके माई॥
कांधे बसुला बोले लौ लीना। हाले गर्दन बोले झीना॥
राजा मनमें भये अनन्दा। जैसे चकोर पायो निशि चंदा॥
राज प्रधान पौरीमें आयी। कारीगरसे अस कहे अर्थायी॥
जगन्नाथकी मूरति बनाओ। तौ तुम ग्राम परगना पाओ॥
देवलमाहिं मूर्ति धरि दीजै। जो चाहो सो हमसे लीजै॥

कारीगर वचन

हम तो गुरु मुखा आहैं भाई। लोभ लालच नहिं हमरे ठाई॥
देवलकाज सिद्ध करि देहों। लालच चित में नहीं करैहों॥

सत्यकबीर वचन

इतना सुनि राजापहँ गयऊ। राजा सुनि मन हर्षित भयऊ॥
तबही राजा महलमों जायी। रानीसों सब बात जनायी॥
तब मुक्ताहलसो थार भरायी। कारीगरको लीन बुलायी॥

कारीगर

राजा कहा हमारा कीजे । सोलह दिनकी अवधी दीजे ॥
हमको साज मूरति का देओ । देवलको द्वार मूँदि कर लेओ ॥
जबही साज देवल ले जाऊ । तबहीं द्वार मूँदि हो भाऊ ॥
तबही कह्यो मूँदि पोरिहि दीजे । सब कोइ गमन यहांसे कीजे ॥
सोलह दिनमें द्वार खुलै हो । तौ कछु विघ्न नहीं तुम पैहो ॥
देइ कपाट तब ताला दीना । चहुँ दिशि पण्डों चौकी कीना ॥
दिन दंश सो बीति जब गयऊ । चलत फिरत गोरख तब अयऊ ॥

गोरख वचन

गोरख कहे दर्शन मोहि दीजे । नहिं तो शाप हमारो लीजे ॥

सत्यकबीर वचन

तब पण्डा राजा पहँ जायी । राजा से सब बात सुनायी ॥
राजा पण्डा सों कहे बुझाई । कौन शाप गोरखकेर उठाई ॥
तब पंडा गोरख पे आये । हाथ जोरिके विन्ती लाये ॥
दिनछः हम तुमसों माँगे भाई । ता पाछे हम दरश कराई ॥

गोरख वचन

साखी–मैं गोरख प्रसिद्ध हूँ, हमरे आड जनि होहु ।
मोको दरश करावहू, के शाप हमरो लेहु ॥

चौपाई

तब राजा गोरख पगु पडिया । बहु विन्ती भावसों उच्चरिया ॥
जब गोरख नहिं माने राई । तब राजा अस कह्यो बुझायी ॥

---

१ इस चौपाईमें दशदिनके पश्चात् गोरखका आना बतलाया है किन्तु नवीन प्रतियों में सात ही दिन लिखा है।

"दिना सात बीते पुनि आई । फिरत फिर गोरख पुनि आई ।।"

नवीन प्रतियोंमें सब ऐसे ही बेतुकी वाणीका ऐसा गडबड हुआ है कि सब यहां पर लिखना असम्भव है।

तब राजा कहे सुन गोरख आयी । ऐसा तुम करिहो तैसा पायी ॥
नहिं माना गोरख द्वार उघारा । तब सतगुरु एक कला परचारा॥
भागा गोरख दूर ते भाई । सतगुरु शरण सो बैठा जाई ॥
जगन्नाथ कहे सुनु गोरख आई । योगी हमरो दरश न पाई ॥
यहि औगुन गोरख से भयऊ । ताते योगी दरश न पयऊ ॥
जगन्नाथ राजा सो कहेऊ । अवधिपूर नहीं सो भयऊ ॥
ताते हाथ ठूंठ रहि जायी । दिन सोलह बीते नहिं पायी ॥
देह सम्पूरण होन न पायी । झगरू पण्डहिं को समझायी ॥
झगरू पण्डा शिष्य भयो आयी । केतिक दिन ऐसे बिति जायी॥
तब जगन्नाथ सो भेंट करायी । जगन्नाथ कह सुनो जी आयी ॥
तुम्हरी हमरी भली बनि आयी । तब हम तेहि कहा समुझायी ॥
कहैं कबीर सुनो त्रिभुवन राई । सिंघल द्वीप हम देखन जाई ॥

साखी–सिंघल द्विप हम जावहीं, जगन्नाथ चित लाउ ।
समुन्दरका भय मेटिके, अटल राज कराउ ॥

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदाससम्वादे जगन्नाथ-
स्थापनवर्णनो नाम सप्तमस्तरंगः
इति ग्रन्थ लक्ष्मणबोध

संक्षेप सार

और

ग्रन्थपर साधारण दृष्टि

यद्यपि इस ग्रन्थमें लक्ष्मणजीको भी बोध करनेकी प्रसंगसे थोडी चर्चा आगयी है किन्तु प्रधानतः इस ग्रन्थमें वर्णन जगन्नाथजी की स्थापनाका है । इस जगन्नाथकी स्थापनाके विषयमें भी अनेक ग्रन्थोंमें बहुत मत भेद हैं इस कारण और-और ग्रन्थोंका भी इस विषयमें वर्णन थोडासा लिख देता हूँ ।

जब श्रीकृष्णजीका स्वधाम गमन हुआ तब बौद्धावतार हुआ। और जब जगन्नाथजीका अवतार हुआ उस समय उडीसा देशका राजा इन्द्रदमन था। उस राजा इन्द्रदमनको कृष्णजीने स्वप्न दिखलाया कि तू मेरा मन्दिर उठा। जगन्नाथजीकी आज्ञानुसार राजा मन्दिर बनाने लगा, जब मन्दिर तैयार होगया तब समुद्र आया और मन्दिरको ढहाकर लेगया और भूमि बराबर कर गया। इसके उपरान्त फिर राजाने मन्दिर बनवाना आरंभ किया फिर उसकी वही दशा हुई। फिर बनवाया फिर वही दशा होगयी। इस प्रकार कई बेर राजाने मन्दिर बनवानेकी इच्छा की पर समुद्रने उसको तैयार होने नहीं दिया तब राजाने दुःखी होकर उस इमारत का बनवाना ही छोड़ दिया इस समय कबीर साहबने अपने वचनका स्मरण किया जैसा कि निरंजनगोष्ठि आदि ग्रन्थोंमें लिखा है कि, निरंजनने कबीर साहबसे निवेदन किया था कि जब मेरा जगन्नाथका अवतार होगा तब समुद्र मेरे मंदिरको तोडेगा, उस समय आप कृपा करके समुद्रको हटा देवें और मेरे मंदिरको स्थापित करा देवें तब आप वचनबद्ध हुए थे कि, मैं तुम्हारा मंदिर स्थापित करा दूँगा और समुद्रको हटा दूँगा। उसी वचनके अनुसार कबीर साहब उडीसा देशमें आन उतरे और राजा इन्द्रदमनके पास जाकर बोले, कि हे राजा! तुम जगन्नाथके मंदिरको बनाओ तब राजाने निवेदन किया कि, महाराज समुद्र मंदिरको बनाने नहीं देता मेरा कुछ वश नहीं चलता, जब मैं बनाता हूँ तब वह आकर ढहा जाता है मैं क्या करूँ? कबीर साहबने कहा कि राजा! मैं इसी प्रयोजनसे आया हूँ अब प्रसन्नतापूर्वक ठाकुरद्वारा बनवाओ

मैं समुद्रको हटा दूँगा अब उसका कुछ वश नहीं चलेगा. तब राजाने पुनः मंदिरको बनवाना आरम्भ किया और मदिर बनने लगा, कबीर साहब समुद्र तटपर गये और एक चबूतरा बनाकर उसपर समुद्रकी ओर मुँह करके बैठ गये। उधर ठाकुरका मंदिर बनकर तैयार होनेके समीप आगया और समुद्र ने देखा कि अब तो ठाकुरका मंदिर बन गया तब बडे वेगसे दौड़ा और लहरें आकाशको उठीं। जब लहरें मारता कबीरके चौराके समीप पहुँचा तब सामने कबीर साहबको बैठे देखा देखते ही समुद्र ठहर गया और आगेको चरण बढा नहीं सका और ब्राह्मणका स्वरूप धरकर कबीर साहिबके पास आया और दण्डवत प्रणाम करके निवेदन किया कि, हे महाराज ! मैं तो जगन्नाथके धोखेसे आया और मंदिर ढहाना चाहा अब तो सामने आप बैठे हैं अब मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है कि आगेको चरण बढा सकूं, आप न्यायकर्ता हैं मेरा बदला दिलाओ। तब कबीर साहिबने कहा कि हे समुद्र ! मैं तुम्हारा बदला जानता हूँ पर अब इस कलिकालमें जगन्नाथजीका माहात्म्य होगा तथा उनकी पूजा होवेगी इस कारण अब तुम ठाकुरका मंदिर उठने दो और किसी प्रकारकी बाधा उपस्थित मत करो, मैं तुमको इस ॥ मंदिरके बदले द्वारकापुरी देता हूँ तुम जाकर उसको डुबा लो। तब समुद्र प्रसन्नतापूर्वक वहांसे पीछे पलटा और द्वारकापुरीको डुबा लिया और उधर जगन्नाथजीका मंदिर बनकर पूरा होचुका. समुद्रके हरिमंदिर तोडनेका कारण यह था कि जब रामचन्द्रका अवतार हुआ था उस समय श्रीरामचन्द्रजीने समुद्रपर बलात्कार किया था और सेतुबन्धपुल बांधकर पार उतरे थे किन्तु समुद्र

राम अवतारमें और कृष्णावतारमें भी बदला ले नहीं सका पर जगन्नाथके औतारमें अपना बदला लेने के निमित्त ऊद्यत हुआ और उसके बदले द्वारकापुरीको डुबा दिया। इससे यह सिद्ध होता है कि कियेका बदला अवश्य भोगना पडता है। इस प्रकार जब ठाकुरका मन्दिर बनकर भली भांति प्रस्तुत होगया तब कृष्णजीने अपने पण्डाको स्वप्न दिखलाया कि हे पण्डे! कबीर साहिबने मेरा मन्दिर स्थापित कर दिया अब तुम लोग आकर मेरी पूजा करो। जब जगन्नाथजीने ऐसा स्वप्न दिखलाया तब पण्डा घरसे चलकर पहले समुद्र तटपर आया और कबीर चौरे पर गया वहां कबीर साहबको बैठे देखा। उस समय सत्य गुरुका वेष जिन्दा साधुका था और वैष्णववेष नहीं था। इस कारण वह वेष देखकर उस ब्राह्मणने अपने मनमें अनुमान किया कि प्रथम मैंने अशुभ दर्शन किया ठाकुरका दर्शन नहीं किया, ऐसा अनुमान करके वह पण्डा ठाकुरके मन्दिरमें पहुँचा, तब कबीर साहिबने उसके मनकी समस्त बातें जान लीं और ऐसा कौतुक दिखलाया की जब वह पण्डा ठाकुरके मंडपमें आया तब उसको विचित्र कौतुक दिखलाई दिया कि ठाकुरका समस्त मन्दिर कबीर साहिब-की मूर्तियोंसे भरा हुआ है। जिस ओरको वह ब्राह्मण देखता है उधर वह कबीर साहबकी मूर्तिको उपस्थित पाता है और ठाकुरकी मूर्ति कहीं दिखाई नहीं देती, तब वह ब्राह्मण अक्षत और पुष्प लिये चकित होकर खडा रह गया कि मैं किसकी पूजा करूँ। ठाकुर तो कहीं दिखलाई नहीं देते। समस्त मन्दिर कबीर साहिब-की मूर्तिसे भरा हुआ है। तब वह अपने मनमें सोचने लगा

कि इसका क्या कारण है और फिरसे भोजनके समयमें भी कबीर साहबने सर्वत्र दर्शन दिया जैसा इस ग्रन्थ लक्ष्मणबोधमें वर्णन है। अन्तमें उसने अपने दोषको जान लिया कि मैंने जो कबीर साहब को म्लेछ समझा था इस कारण ही मुझको यह दंड मिला है, और मुझको यह कौतुक दिखलाया। यह शोच समझकर वह ब्राह्मण कबीर साहबकी स्तुति और दोषके निमित्त क्षमा प्रार्थना करने लगा। जब इस पण्डाने सत्यगुरुकी बहुत प्रार्थना और स्तुति की और अत्यन्त नम्रतापूर्वक अपने दोषोंके निमित्त क्षमा प्रार्थना की तब आप दयालु हुए और अपनी सब मूर्तियोंको समेट लिया केवल एक मूर्ति रह गई और ठाकुर-की मूर्ति दिखाई देने लगी। तब कबीर साहबने उस ब्राह्मणसे कहा की हे पण्डा! अब तुम ठाकुरको पूजो पर इस बातका ध्यान रखना कि आजके दिनसे इस जगन्नाथपुरीमें छूत न रहेगी और जाति पाँतिका ध्यान तनिक भी न रहेगा। प्रत्येक जाति एक दूसरे जातिके साथ निधडक भोजन करेगी। अबलों पुरुषोत्तम-पुरीमें वही नियम प्रचलित है। सब जातिके लोग एकही स्थानपर भोजन करते हैं कोई किसीके जूठेका कुछ भी ध्यान नहीं करता।

इस ग्रन्थकी भी कई प्रतियां मेरे पास उपस्थित हैं, कोई प्रति भी किसीके साथ मिलती नहीं है। सब प्रतियोंमें प्रसंगका तो ऐसा उलट पुलट है कि, कहीं किसीका पता नहीं मिलता और कविताकी तो यह दशा है कि चौपाईके किसी चरण में २२ मात्रा हैं और किसीमें १४। और लिखायी की जो बात है उसको कहनेकी आवश्यकता ही नहीं है, इस कारणसे यह

पुस्तक सबसे पुरानी प्रति जो १८६० संवत् की लिखी हुई है उसके अनुसार रखा है। हाँ, नवीन प्रतियोंमें से भी प्रसंगानुसार जो उपयुक्त जान पडा है वह भी इसमें रक्खा है किन्तु सो बहुत कम।

इतिलक्ष्मणबोधः सम्पूर्णः

अथ श्रीबोधसागरे

नवमस्तरंगः

मुहम्मदबोध

★

धर्मदास--वचन

साखी–धर्मदास विनती करे, कृपा करहुं गुरुदेव ॥
नबी महम्मद जस भये, सो सब कहिये भेव

सत्यकबीर वचन--चौपाई

धर्मदास पूछ्यो भल बानी । सो सब कथा कहूँ सहिदानी ॥
जेहि औसुर मुहम्मद औतारा । धरम आपनो जगत पसारा ॥
मारि काटि निज धर्म चलायो । जाते जीव बहुत दुख पायो ॥
परम पुरुष दिल दाया आयी । मुक्ता मणि कहँ कह्यो बुझायी॥
मुक्तामणि संसार सिधाओ । काल कष्टते जीव बचाओ ॥
विगसी कमल उठी असबानी । मुक्तामनि सुनिओ तुम ज्ञानी ॥
भवमें जाओ जीवके काजा । जीवन कष्ट देत यमराजा ॥
मुक्तामणि चले शीस नवायी । तेही क्षण भव प्रकटे आयी ॥
साखी–दोसौ युग कलि युग गयो, तब आयो संसार ॥
बहुतक जीव चितायऊ, कोइ कोइ हंस हमार ॥

चौपाई

ऐसे बहुत दिन गयो सिरायी । सिंघल द्वीपमें पहुंच्यो जायी ॥
तब वह मिले मुहम्मद पीरा । जिन सब हुकुम कीन तागीरा ॥

तहाँ जाय हम कीन सलामा । मात रहे अलमस्त इलामा ॥
नजर दिदार जो कीन हमारी । मत्त गयन्द करे असवारी ॥
कहु भाई तुम कहँ भरमाये । कहां ते आये कहां को जाये ॥
नाहक को नहिं साहब राजी । पढ़ि कुरान पूछौ तुम काजी ॥
हुए हैरान नजर नहिं आये । किया नसीहत अल्ला फरमाये॥

मुहम्मद वचन

साखी—कहाँ ते आये पीर तुम, क्यों कर किया पयान ॥
कौन शक्सका हुक्म है, किसका है फरमान ॥

रमैनी

पीर मुहम्मद सखुन जो खोला । अल्ला हमसे परदे बोला ॥
हम अहदी अल्ला फरमाना । वतन लाहूत मोर अस्थाना ॥
उन भेजे रूह बारह हजारा । उम्मतके हम हैं सरदारा ॥
तिस कारण जो हम चलि आये। सोवत थे सब जीव जगाये ॥
जीव ख्वाबमें परो भुलाये । तिस कारन फरमान ले आये ॥
तुम बूझो सो कौन हो भाई । अपनो ईस्म कहो समुझाई ॥
साखी—दूरकी बाते जो करौ, करते रोजा नमाज ॥
सो पहुँचे लाहूतको, खोवे कुलकी लाज ॥

कबीर वचन

कहैं कबीर सुनो हो पीरा । तुम लाहूत करो तागीरा ॥
तुम भूले सो मरम न पाया । दे फरमान तुम्हें भरमाया ॥
फिर फिर आव फिर फिर जाई । बद अमली किसने फरमाई ॥
लाहूत मुकामें बीचको भाई । बिन तहकीक असल ठहराई ॥
तुम ऐसे उनके बहुतेरे । लै फरमान जाव तुम डेरे ॥

---

१ नाम । २ इसका वर्णन ग्रन्थ सारमें देखो । ३ स्थान ४ जांच ।

साखी–खोजत खोजत खोजियाँ, हुवा सो गूना गून ॥
खोजत खोजत ना मिला, तब हार कहा बेचून ॥
बेचूँन जग राँचिया, साई नूर निनार ॥
आखिर केरे वक्त में, किसकी करो दिदार ॥

रमैनी

तुम लाहूंत रचे हो भाई । अगम गम्य तुम कैसे पाई ॥
यह तो एक आदि विसरामा । आगे पाँच आदि निज धामा ॥
तहँते हम फरमाँ ले आये । सब बदफेलको अमल मिटाये॥
उन फरमान जो हमको दीना । तिनका नाम बेचून तुम लीना ॥

साखी–साहब का घर दूर है, जासु असल फरमान ॥
उनको कहो जो पीर तुम, सोइ अमर अस्थान ॥

मुहम्मद वचन–रमैनी

कहे मुहम्मद सुनो कवीरा । तुम कैसे पायो अस्थीरा ॥
लाहूत मेटि जो अगम बतायो । खुद खुदाय हमहूँ नहिं पायो ॥
हम जानैं खुद आपै आही । तुम कुदरत कर थापो ताही ॥
हम तो अर्श हाजिरी आयो । तुम तो कुदरतसे ठहराये ॥
तुम्हरे कहे भरम मोहि आयो । खुद खुदाय तुम दूर बतायो ॥
आप सुनाओ खुदकी बानी । आलम दुनियाँ कहो बखानी ॥
लाहूत मुकाम हम निजकर जाना। सो तो तुम कुदरत कर ठाना ॥
हलकी मुलकी बासरी भाई । तीन हुक्म अल्ला फरमाई ॥

साखी–साईं मुरशिद पीर है, साँचा जिस फरमान ॥
हलकी मुलकी बासरी, तीन हुकुम कर मान ॥

कबीर वचन–रमैनी

सुनो मुहम्मद कहूं खुदवाणी । खुद खोदायकी कहूँ निशानी ॥
कादिर थे तब कुदरत नाहीं । कुदरत थी कादिरके माहीं ॥

ख्वार सभीको चीन्हो भाई। असल रूहको देउँ बताई॥
असल रूहकि दीदार जो पावे। पावे निज मुसलमान कहावे॥
हो आवाज जहां परदा पोशी। है वह मर्द कि है वह जोशी॥
जब लग तख्त नजर नहिं आवे। दिल विश्वास कौन विधि पावे॥
जब खुद की खबर न पावे। तब लग कुदरत भ्रम ठहरावे॥
हाल माशूक नजर जो आवै। एक निगाह दीदार जो पावै॥
चार वेद अक्षर निरमाई। चार अंश ताके सुत भाई॥
एकअंश चौभाग जो कीना। ताते एक गुप्त कर लीना॥
एक अंशते गुप्त छिपाई। तीन अंश संसार पठाई॥
अंशहि अंश भेद नहिं दीना। यह अचरज अक्षरने कीना॥
जो तुम कहा हमारा मानो। तो हम तुमते निर्णय ठानो॥

साखी-यह प्रपञ्च बेचूनका, तुमते कहा न भेव॥
आप सो रत होइ बैठा,तुम चार करत हो सेव॥

मुहम्मद वचन

कहैं मुहम्मद सुन खुद अहदी। इल्म लदुन्नी कहु बुनियादी।
जब नहिं पिण्ड ब्रह्माण्ड अस्थूला। तब ना हतो सृष्टिको मूला
तादनकी कहिय उपतानी। आदि अन्त और मध्य निशानी
साखी-बुजरुग हकीकत सब कहो, किस विधि भया प्रकाश
जब हम जाने आदिको, तो हमहूँ बाँधे आश॥

कबीर वचन

सुनो मुहम्मद सांचे पीरा। समरथ हुकुम खुद आदि कबीरा।
अब हम कहें सुनो चितलायी। आदि अन्त सब कहों बुझायी
प्रथमें समरथ आदि अकेला। उनके संग हता नहिं चेला

साखी-वाहिद थे तब आपमें, सकल हतो तेहि माहँ॥
ज्यों तरुवरके बीजमें, पुष्प पात फल छाहँ॥

चौपाई

आठों अंस त्रिदेव समेता । उतपति जगतकीन प्रभु एता ॥
तीनो दिन त्रैलोकको राजू । तिनवसपरि जिव भयेअकाजू ॥
तिन पुनि एक जुक्ति चित दीना । प्रथम ज्ञान चार जो कीना ॥
प्रथम क्षुद्रजो ज्ञान उपजाई । ध्यान अंशको तौन पठाई ॥
दूसर ज्ञान वाचा है भाई । राज अंशको तौन पठाई ॥
तीसर ज्ञान जो अनुभव कीना । धर्म राय को लेखा दीना ॥
चौथे ब्रह्मज्ञान उपजाई । माय अंश सो ध्यान लगाई ॥
पंचवा ज्ञान सहज की डोरी । सब जीवनकी बंदी छोरी ॥
जहाँसे चार ज्ञान जो आवा । सोई कला निरंजन पावा ॥
निरंजन भये राज अधिकारी । तिनके चार अंश सेवकारी ॥
चार ज्ञानते चारो वेदा । तिनते चारो भये कतेबा ॥
मूल कुरान वेद की वानी । सो कुरान तुम जगमें आनी ॥
हक्क कुरान जो तुमको दीना । इद्दहुक्म तुम आपन कीना ॥
चार कतेब के चारो अंशा । तिनके कहो भिन्न भिन बंशा ॥
वेद पढावत ब्रह्मा आये । ऋग वेद को नाम लखाये ॥
दूसर यजुरवेदकी वानी । राजनीति सो कीन बखानी ॥
तीसर सामवेदकी बानी । यज्ञ होम तिन कीन बखानी ॥
चौथ अथर्वन गुप्त छपाये । तौन हुक्म तुम जगमें आये ॥
ऐकै मूल कुरानमें चारी । चार बीर तुम हो सरदारी ॥
जब्बूर किताब दाऊदने पाई । नासूत मोकाम रहै ठहराई ॥
तौरेत कीताब मूसाने पाई । मलकूत मोकाम रहै ठहराई ॥
इंजील किताब ईसाने पाई । जबरूत मोकाम रहे ठहराई ॥
फुरकानकिताब नबी तुम पाई । लाहूतमोकाम रहे लौलाई ॥
कुरान वेहद्दको मरम न पावै । बिनदेखे विश्वास क्या आवै ॥

चार मोकाम किताब है चारी । पंचये नाम अचित सँवारी ॥
तहँते आइ रूह बारह हजारी । तहां अचित गुप्त व्योहारी ॥
साखी-पीर औलिया था किया, यह सब उरले तीर ॥
समरथ का घर दूर है, तिनको खोजो पीर ॥

* मारफत

चौपाई

औवलमोकाम नासूत ठेकाना । दुजा मोकाम मलकूतजो जाना ॥
सेउम मोकाम जबरूत ठेकाना ।चहारूममोकामलाहूतजोजाना॥
पंचये मोकाम हाहूत अस्थाना । छठे मोकाम सोहं जो माना ॥
हफतुम मोकाम बानी अस्थाना। अठयें मोकाम अंकूर ठेकाना ॥
नवयें मुकाम आहूत निशानी । दसयें मोकाम पुरुषरजधानी ॥

बेतुक

औवल शरी अत् १ । तरीकत् २ । हकीकत् ३ । मारफत् ४ । मरौवत् ५ । ध्यान दोरहिअत् ६ । जुलफकार चन्द्र गेटा ७ । हुकुममुरतद ८ । देयना कासो यही अंत् ९ । सचपावेसमरथकाय १० । अंकार ओंकार कलिमा नवी सचुपावे देखा हद बेहद

मुहम्मद वचन

तुम कब्बीर भेद अधिकाये ।खुद समरथकी खबरि जो ल्याये॥
अब तुमको हम बूझैं अंतू । सो कहिये खुद अहदी संतू ॥
को तुम आहु कहांते आये । क्यों तुम अपनो बर्ण छिपाये॥
सात सुरति समरथ निरमाई । यह अस्थान रहो की जाई ॥
यती मारफत कहु दुरवेशा । हम मानैं तुमरो उपदेशा ॥
सात सुरति केहि माहि समाई । जिव बोधे सो कह चलिजाई॥
समरथ गम तुमु साँच कबीरा । समरथ भेद कहो मति धीरा ॥

---

* इस विषय में लिखे हुये मुकामों का वर्णन पुस्तकके अन्तमें देखो ।

साखी–मेरे शंका बाढिया, थाके वेद कुरान ॥
वाहिद कैसे पाइये, समरथको मक्कान ॥

सत्यकबीर वचन

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई । जो खुद आदि अस्थान है भाई ॥
जो जो हुकुम समरथ फरमाई । सो सो हुकुम हम आनि चलाई ॥
सुर नर मुनिको टेरि सुनाये । तुमको बहुत बार समुझाये ॥
तुमपर मोह अक्षरने डारा । तेहि कारण आये संसारा ॥
सोलह असंख जुग जबै सिराई । सोलह असंख उतपति मिटि जाई ॥
सात सुरति तब लोकहि जाई । जिव बोधो तेहि माह समाई ॥
सात सुन्य तजि ते अस्थाना । ते सब मिटे होय घमसाना ॥
वेद कतेबकि छोडो आशा । वेदकतेव अक्षर प्रकाशा ॥
तीन बार तुम जगमें आये । फिर फिर अक्षरने भरमाये ॥
अक्षर चीन्हिके छोडो भाई । तीन अंश अक्षर निरमाई ॥
ब्रह्मकि सृष्टि आपको कीना । जीव वृष्टि तीरथ व्रत दीना ॥
माया वृष्टि ईश्वरी जानो । सबमें आतम एक समानो ॥
साखी–खोजो खुद समरत्थको, जिन किया सब फरमान ॥
पीर मुहम्मद तहँ चलो, सोई अमर अस्थान ॥

मुहम्मद वचन

पीर मुहम्मद मुख तब मोरा । कछु नहिं चलै तुम्हारी जोरा ॥
अक्षर हुकमको मेटनहारा । चार वेद जिन कीन पसारा ॥

कबीर वचन

सुनिये सखुन मुहम्मद पीरा । हम खुद अहदी आदि कबीरा ॥
मेटो अक्षरको बिस्तारा । मेटो निरंजन सकल पसारा ॥
मेटो अंचित्तकी रजधानी । मेटो ब्रह्मा वेद निशानी ॥
चौदह जमको बांधि नचावों । मृत अंधा मगहर ले आवों ॥

धर्मरायते झगर पसारा। निरंजन बांधि रसातल डारा॥
वेद कतेबको अमल मिटावों। घर घर सार शब्द फैलावों॥
समरथ हुक्म चलै सब माही। व्यापै सत्य असत्य उठिजाही॥

मुहम्मद बचन

पीर मुहम्मद बोले वानी। अगम भेद काहू नहिं जानी॥
सुनाकान नहिं आखिन देखा। बिन देखे को करे विवेखा॥
जो नहिं देखो अपने नैना। कैसे मानो गुरुको बैना॥
जो तुम खुद अहदी है आये। हुक्म हजूर फरमानले आये॥
जौन राहसे तुम चलिआवो। सोई राह मोकहँ बतलावो॥
हँसनको अस्थान चिन्हावो। समरथको मोहि लोक देखावो॥

साखी—हंसनको अस्थान लखि, तब मानो परमान्॥
जो समरथको हुक्म है, सो मेरे परवान्॥

कबीर बचन

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई। साहेब तुमको देउँ बताई॥
चलै सैल को दोनो पीरा। एक मुहम्मद एक कबीरा॥

मोकाम १

भूमिते छत्तिस सहस ऊँचाई। मानसरोवर तहां कहाई॥
तहँ नासूत आहि मोकामा। नबी कबीर पहुँच तेहि धामा॥
तहँ दाऊद पयंबर होई। जब्बूर् किताब पढे तहँ सोई॥
तहाँ सलामालेक सोई कीना। दस्तावोस उनहु उठि लीना॥

मोकाम

तहवाँते पुनि कीन पयाना। चौविस सहस वैकुंठ प्रमाना॥
तहवाँ पहुँच बैठे ऋषि वासा। देव सबै बैठे तेहि पासा॥
वह वैकुंठ विष्णु अस्थाना। मलकूत मोकाम मूसाको जाना
मूसा पैगम्बर पढै किताबा। उसका नाम तौरेत किताबा॥
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठि लीना॥

मोकाम ३

वैकुण्ठ ते आगे लायो डोरी । सुमेरते सुन्य अठारह कोरी ॥
येतो अधर सुन्य अस्थाना । जबरूत मोकाम ईसाको जाना॥
ईसा पैगम्बर पढै किताबा । उसका नाम इंजील किताबा ॥
सलामालेक तहाँ हम कीना । दस्ता बोस उनहु उठि लीना ॥
तहँवा बैठि विस्वंभर राई । वही पीर तो वही खुदाई ॥
उहँते अधर सून्य है भाई । ताकी शोभा कही न जाई ॥

मोकाम ४

महाशून्यको लागी डोरी । ग्यारह पालँग तहाँ ते सोरी ॥
लाहूत मोकाम कहावै सोई । जो देखे बहुतै सुख होई ॥
मुस्तफा पैगंबर बैठे तहाँ । फुरकान किताब पढत थे जहाँ॥
सलामालेक तहाँ हम कीना । दस्ताबोस उनहु उठि लीना ॥
दखत हौ मुहम्मद अस्थाना । तुम बेचून कहो यही ठेकाना ॥
वारो फिरिश्ते सलामालेक कीना। तब हम आगेका पग दीना ॥

मोकाम ५

तहँते चले अचिंत ठेकाना । एक असंख्य सुन्य परमाना ॥
हाहूत मोकामको वही ठेकाना । आगे है सोहं बंधाना ॥

मोकाम ६

तीन असंख्य शून्य परमानी । बाहूत मोकाम सो कहो बखानी॥
नवी कबीर चले तेहि आगे । मूल सुरति बैठे अनुरागे ॥

मोकाम ७

पांच असंख सुन्न विचआही । सात मोकाम कहत है ताही ॥

मोकाम ८

इच्छा सुरतिके पहुँचे द्वीपा । चार असंख है लोक समीपा ॥
ताको नाम राहूत मोकामा । नवी कबीर पँहुचे तेहि ठामा ॥

मोकाम ९

तहँते सहज द्वीप परमाना। दोय असंख तहाँते जाना॥
ताहि मोकाम नाम आहूता। सोभा ताकी देख बहूता॥

मोकाम १०

साखी–पहुँचे जायके लोक जहँ, सन्त असंख दस लाख॥
सो मोकाम जाहूतका, दस मोकाम यह भाख॥

चौपाई

सलामा लेक तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठिलीना॥
तहँते अमरलोकको छोरा। नबी कबीर पहुँच तेहि ठौरा॥
अमरलोकके हंस सब आये। तिनकी सोभा कही न जाये॥
भरि भरि अंक मिले तहँ आये। देखि मुहम्मद रहे भुलाये॥
सब मिलि हंस गये पुनि तहँवा। साहेब तखत पै बैठे जहँवा॥
जगर मगर छतर उजियारा। आम धनी का कहो बिहारा॥
असंख भानु पुरुष उजियारा। अमरलोकको कहो विस्तारा॥
सकल हंस तहँ दरशन पाई। तिनकी सोभा बरनि न जाई॥
तहँवा जाय बंदगी कीना। नबी भये जो बहुत अधीना॥

मुहम्मदवचन

चूक हमार बकस कर दीजे। जो तुम कहो सोई हम कीजे॥

पुरुषवचन

कहु मुक्तामनि वेगि तुम आये। दूसर कौन सँग ले आये॥

मुक्तामनि वचन

तब हम बचन पुरुषसे कीना। दोउ कर जोर बंदगी कीना॥
तुम जो राज निरञ्जन दीना। तापर हुकुम अक्षरको कीना॥
दोऊ अंश दोऊ दीन चलाये। तामें सृष्टि पकडि भुलाये॥
तामें एक सो हम ले आये। सो तो तुम्हरे कदम दिखाये॥

नबी मुहम्मद बन्दगी कीना । हशन पाय भये लौलीना ॥
तहँते फिर मृत्यु लोक चलि आये। निजमान कहे पानहु पाये ॥
तुम आपना कौल भरि देहो । पीछे पान जीवको पैहो ॥
साखी–शब्द भरोसे नामके, दिया नवीको पान ।
तब हम सांचे मानि हैं, जब फिर मिलोगे आन ॥

कबीरवचन--चौपाई

तुम अपनो फरमान चलाई । खुद को भेद तुम धरो छिपाई॥
जौ यह भेद तुम प्रकट करिहौ । तौ तुम कौल के बाहर परिहौ ॥
चारो कलमा प्रकट भाखो । पचवाँ कलमा गुप्त जो राखो ॥
पचवाँ कलमा इल्म फकीरी । जाके पढे कुफ्र हो दूरी ॥
हम काशीको जात हैं भाई । तबलो तुम अपनो कौल बजाई॥
तुम पर दाया समरथ केरी । पांचों कलमा दिलमें फेरी ॥
साखी–हम काशी को जात हैं, तुम मक्के अस्थान ॥
इम रामानन्द गुरु करें, तुम देओ जगत फरमान ॥
फरमान जगतको दीजिये, उलटी अदल चलाय ॥
तुम कलमाका हुक्म ले, निर्भय निशान बजाय ॥

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदास संवादे मुहम्मद
बोध वर्णनोनाम नवमस्तरंगः

अथ ग्रन्थसागर

★

यद्यपि साधारणतः देखनेमें यह ग्रंथ भी मुसलमानी धर्म के प्रवर्तक मुहम्मदको कबीर साहिबके बोध देनेका देख पडता है तथापि इसका भी अर्थ आध्यात्मिक है क्यों कि, मुहम्मद साहब के जीवन चरित्र में लिखा है कि इनके माता पिता

दोनोंही ईश्वरबिमुख मूर्तिपूजक थे उन्हींसे उनकी उत्पत्ति हुई थी। इसका आशय यह है कि, प्रकृतिपुरुष जब संसारमुख होते हैं तब ही अन्तःकरण विशिष्ट होकर चैतन्य जीव नाम धारी होता है। अर्थात् मुहम्मदसे आशय है अन्तःकरण विशिष्ट चैतन्य अर्थात् जीवसे॥

फिर मुहम्मद साहबके उत्पन्न होते ही उनकी माताकी मृत्यु होगयी थी और पिता तो प्रथमही मर चुका था इस कारण उनके जन्म लेनेके पश्चात् उनकी फूफूने उनका पोषण पालन किया था उसीने अपने गोद में उन्हे लिया था इसका आशय यह है कि, जब जीव अन्तःकरण विशिष्ट होता है तब पुरुष प्रकृतिका तो अभाव होजाता है अर्थात् स्वरूप विस्मृति होती है और देहकी प्राप्ति होती है और देहही द्वारा अन्तःकरण बडा होता है।

आगे चल कर मुहम्मदसाहबने चौदह विवाह किये हैं सो जीवका चौदह इन्द्रियों के साथ अहंभाव करना है।

आगे चल कर चालीस वर्षकी अवस्थामें मुहम्मद साहबको पैगम्बरी मिली है सो जब यह जीव पाँच ज्ञानेन्द्री, पांच कर्मेन्द्री पच्चीस प्रकृति और पंचप्राणका विचार करके उससे आपको अलग जानने लगता है तब यह मोक्षअधिकारी होता है यही पैगम्बरी मिलना है।

पैगम्बरी मिलने पर मुहम्मद साहबने जिहाद करके काफिरों को मारना आरम्भ किया था। और काफिरोंके उत्पन्न करने पर मक्का छोडकर मदीनाको गये थे। सो जब यह जीव अधिकारी होकर विषयसुख इन्द्रियों को साहिब मुख होनेके लिये उनका निरोध करता है तब इन्द्रियाँ बहुत उत्पात मचाती हैं तब जीव प्रवृत्तिरूप मक्कानगरको छोडकर निवृत्तिरूप मदीनामें जाता है।

अर्थात् प्रवृत्तिसे उदासीन होकर निवृत्ति को धारण करता है। और आसुरी सम्पत्ति रूप काफिरों को दैवी सम्पत्ति रूप फौज की सहायतासे मारता है।

इससे भी आगे बढकर मुहम्मद साहब मेआराज को जाते हैं। इस मेआराजके विषयमें अनेक मत भेद हैं। जिनका वर्णन स्वामी प्रमानन्दजीने कबीरमन्शूरमें बहुत उत्तम रीतिसे किया है पाठकोंके जाननेके लिये उर्दू कबीर मन्शूरसे अनुवाद करके यहां लिखता हूँ। स्वामी प्रमानन्दजीने प्रमाणके लिये मुसलमानी किताबोंके अरबी प्रमाण दिये हैं किन्तु उन प्रमाणोंका हिन्दी पाठकों को कुछ उपयोग न होनेसे केवल उनका आशय दिखा दिया है।

मुहम्मद साहबके हमेआराजका वर्णन

मुहम्मद साहबके मेआराजके विषयमें मुसलमानोंका भिन्न २ मत है। जो उनके हदीस और किताबोंसे प्रगट है।

तारीख मुहम्मदी में लिखा है कि, जब मुहम्मद साहबको पैगम्बरी करते बारह वर्ष बीत गये अर्थात् उनकी बावन वर्षकी अवस्था हुई तब एक रातको-जिबराईल और मेकाईल जो फिरिस्तों के मुखियों में से हैं मुहम्मद साहब के पास आये और उनका साना (कलेजा) चीर कर उसमें से सब पाप औ बुरे संकल्पों को धोकर शुद्ध कर दिया और जब उनका हृदय (अंतःकरण) शुद्ध होगया तब उन्हें एक ऐसे जानवर पर जिसका शिर तो मनुष्योंका था और नीचेका धड विच्छी के समान था सवार कराकर खुदाके पास लेगये जिबराईल ने तो रिकाब और मेकाईलने उसका बाग पकडा। इस प्रकारसे वह रवाना हुए। चलते २ वे सबसे पहले बैतअकसा अर्थात् बडे हैकल अर्थात् एक बडे भारी वृतके निकट पहुँचे। वहाँ बहुतसे फिरिश्ते

मुहम्मद साहबको प्रणाम करनेको आये जहाँ वह बुराक बाँधकर जब भीतर गये तब वहाँ सब पैगम्बरोंकी आत्मा को देखा। फिरा एक सीढी आकाशसे उतरी अरबी भाषामें जिसे मेसआराज कहते हैं फिर मुहम्मद साहब बुराकपर सवार होकर उस सीढी के मार्ग से ऊपर को चढे। जब प्रथम आकाश पर पहुँचे तब वहांका द्वार जिबराईल ने खुलवाया और सब भीतर गये। भीतर पहुँचने पर देखा कि, हजरत आदम बैठे हुए हैं और उनके बाई ओर नरकका द्वार खुला हुआ है और दहिनी ओर स्वर्गका। नरककी ओर देख कर हजरत आदम रोते हैं और स्वर्ग की ओर देखकर हँसते हैं। इस प्रकार से प्रत्येक आकाश पर होते हुए जिबराईल मुहम्मद साहब को जब सदरंह के द्वार पर ले गये तब वहाँसे जिबराईल पीछे हो लिये। आगे चल कर एक सुनहले पर्दे के निकट पहुँच कर जिबराईल ने कहा कि इससे आगे हम नहीं जा सकते आप स्वयम् जाइये। फिर वहां से मुहम्मद साहब ने अकेले सत्तर मंजिल पार किया। सत्तर पर्दे पार होकर बुर्राक भी ठहर गया और वहां से एक पक्षी जिसे जफ जफ कहते हैं आया और उस पर चढ कर मुहम्मद साहब खुदाके पास गये और वहां उन्हों ने खुदा से बहुत कुछ वार्तालाप किया और अपने धर्मके सब नियम उनको वहांहीसे मिले जिसको लेकर वह लौट कर अपने स्थान पर चले आये। इस स्थान पर लिखा है कि यह सब बातें इतनी जलदी हुई थीं कि, मुहम्मद साहेब के बुर्राक पर सवार होकर जाते समय एक कटोराको धक्का लगा था जो पानी से भरा हुआ था। सो धक्का लगतेही वह टेढा होगया था। मुहम्मद साहेब इतनी जल्दी लौटकर आये कि उस कटोरे का पानी अभीतक गिरने नहीं पाया था और

उसको उन्होंने आकर सीधा करके शेष पानी को गिरने से बचाया। किन्तु ऊपरोक्त सत्तर पर्दे जिनको मुहम्मद साहबने अकेलेही पार किया था उनमें से एक २ की दूरी इतनी थी कि, पाँचसौ वर्ष तक वेग पूर्वक चलने से पूरा होता था ऐसे सत्तर पर्दों को मुहम्मद साहब ने पार किया। और इधर लौट कर आने पर क्षण मात्रा से अधिक समय नहीं लगा। मुसलमानी धर्मते इसी वृत्तान्त को मुहम्मद साहबका मेआराज होना कहते हैं। इसी विषयमें मुसलमानी धर्मके बडे २ पण्डितोंमें बहुत मतभेद है। कोई तो कहता है कि, मुहम्मद साहबने स्वप्न देखा था, कोई कहता है केवल संकल्प से वहाँ पहुँचे थे, कोई कहता है केवल प्रथम भूमिका (बैतुलअकसा) तक गये थे, कोई कहता है कि, अन्तरदृष्टिसे मुहम्मदसाहेब वहाँ पहुँचे, कोई कहता है केवल जिबराईलको देखा खुदाको नहीं देखा, कोई कहता है पांचभौतिक शरीर सहितही मुहम्मद साहेब आसमानपर गये और इसी प्रत्यक्षकी दृष्टिसे खुदाको देखा। विस्तार भयसे अधिक मतभेदका लिखना छोडकर यथार्थ आशयकी ओर झुकता हूँ।

पैगम्बरी मिलनेके बारहवें वर्षके पश्चात् मुहम्मदसाहबको मेआराज हुआ था उसका आशय है कि, जब मुमुक्षु श्रवण मनन निदिध्यासन द्वारा बारह महावाक्यका विचार कर लेता है तब यह मोक्ष का अधिकारी होता है। और ५२ वर्षसे आशय है ५२ अक्षरसे सो जब यह ५२ अक्षर के वृत से बाहर होता है अर्थात् शब्द जालसे निकलता है तब इसको सच्चे सद्गुरु की शरणकी प्राप्ति होती है। जहाँ शुद्ध बुद्धि रूप जिबराईल जो शुद्ध सतोगुण से प्राप्त होती है और शुद्ध संतोष रूप में कार्दल जो रजोगुण की शुद्धता से मिलता है इसके साथ

होता है। और तमोगुण की शुद्धता से उत्पन्न हुए शौर्य्य (धीरता) रूप बुराकपर सवार होकर गुरुकी शिक्षा द्वारा यह ज्ञान की भूमिकाओंको पूर्ण करता हुआ यथार्थ पद को प्राप्त होता है। और यथार्थ पदको प्राप्त होकर जीवन मुक्त अवस्था से अन्य जीवों को उपदेश देकर काल जालसे छुडाता है।

इस मुहम्मद बोध ग्रन्थ के यथार्थ आशय को पारखी आत्मविद् गुरु अधिकार प्रति अनेक रूपकों में समझाते हैं और इसको आध्यात्मिकही अर्थ से ग्रहण करने के लिये दश मुकामी रेखताका भी प्रमाण है। सो यहां दशमुकामी रेखता लिख देता हूँ।

दशमुकामी रेखता

चला जब लोकको शाक सब त्यागिया हंसको रूप सतगुरु वनायी। भृग ज्यों कीटको पलटि भृङ्ग किया आप समरङ्ग दे ले उड़ायी। छोडि नासूत मलकूतको पहुंचिया विष्णुकी ठाकुरी दीख जायी। इंद्र कुबेर जहाँ रंभको नृत्य है देव तेतीस कोटि रहायी ॥ १ ॥ छोडि वैकुंठको हंस आगे चला शुन्यमें ज्योति जगमग गायी। ज्योति परकाशमें निरखि निस्तत्त्वको आप निर्भय हुआ भय मिटायी। अलख निर्गुण जेहि वेद स्तुति करैं तिनहूं देव को हैं पिताई। भगवान तिनके परे श्वेत मूरति धरे भागको आन तिनको रहायी ॥ २ ॥ चार मुक्काम पर खंड सोरह कहै अंडको छोर ह्यां ते रहायी। अंडके परे स्थान अचिंत को निरखिया हंस जब उहां जायी। सहस औ द्वादशे रूह है सङ्गमें करत कल्लोल अनहद बजायी तासुके बदनकी कौन महिमा कहौं भासती देह अति नूर छायी ॥ ३ ॥ महल कंचन बने मणिक तामें जडे बैठ तहँ कलश अखंड छाजै। अचिंतके

परे स्थान सोहंका हंस छत्तीस तहँवा बिराजै। नूरका महल और नूरकी भूमि है तहां आनन्द सो द्वन्द्व भाजै। करत कल्लोल बहु भांतिसे संग यक हंस सोहंगके समाजै ॥ ४ ॥ हंस जब जात षट चक्रको वेधिके सातमुक्काममें नजर फेरा। सोहंगके परे सुरति इच्छा कही सहसवामन जहँ हंस हेरा। रूपकी राशिते रूप उनको बना नहीं उपमा इन्दु जौनिवेरा। सुरतिसे भेटिकै शब्दको टेकि चढ़ि देखि मुक्काम अंकूर केरा ॥ ५ ॥ शून्यके बीचमें विमल बैकुण्ठ जहाँ सहज अस्थान है गैब केरा। नवो मुक्काम यह हंस जब पहुंचिया पलक बिलंब ह्वाँ कियो डेरा। तहाँसे डोरि मकरतार ज्यों लागिया ताहि चढि हंस गो दै दरेरा ॥ भये आनन्दसे फंद सब छोडिया पहुंचिया जहाँ सत्य-लोक मेरा ॥ ६ ॥ हंसिनी हंस सब गाय बजायके साजिकै कलश वहि लेन आये। युगन युग बीछुरे मिले तुम आइकै प्रेम करि अङ्कसो अँग लाये। पुरुषने दर्श जब दीन्हिया हंसको तपनी बहु जनमकी तब नशाये। पलटिकै रूप जब एकसे कीन्हिया मनहुं तब भानु षोडश उगाये ॥ ७ ॥ पुहुपके द्वीप पीयूष भोजन करै शब्दकी देह जब हंस पायी पुहुपके सेहरा हंस औ हंसिनी सच्चिदानन्द शिर छत्रछायी। दिपैं बहु दामिनी दमक बहु भांति की जहाँ घन शब्दको घमंड लायी। लगे जहाँ वरषने गरज घन घोरिकै उठत तहँ शब्द धुनि अति सोहायी ॥ ८ ॥ सुन सोह हंस तहँ यूत्थके यूत्थ है एकही नूर यक रङ्ग रागे। करत बिहार मन भामिनी मुक्तिमें कर्म औ भर्म सब दूरि भागे। रङ्क और भूप कोइ परखि आवै नहीं करत कल्लोल बहु भाँति पागे। काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब छाँड़ि पाखण्ड सत शब्द लागे ॥ ९ ॥ पुरुषके बदनकी कौन महिमा कहौं

जगत्‌में ऊपमांय कछु नाहिं पायी। चन्द्र औ सूर गण ज्योति लागै नहीं एकही नक्ख परकाश भाई। पान परवान जिन बंशका पाइया पहुंचिया पुरुषके लोक जायी। कहैं कब्बीर यहि भांति सो पाइहौ सत्य की राह सो प्रकट गायी ॥ १० ॥

देह नासूत स्वरे मलकूत और जीव जवरूतको रूह बखानै॥
अरबी में लाहूत कहै जेहि निराकार मानिके मंजिल्ल ठानै ॥
आगे हाहूत लाहूत है बाहूत खुद खाविन्द जाहूत जानै ॥
सोई श्री राम पन्नाह सबै जग नाहि पन्नाह यह अता गानै ॥

इस प्रकारसे सत्यके खोजियोंको तो ऐसे ग्रन्थोंका आध्यात्मिक अर्थही ग्रहण करने योग्य है। और स्थूल अर्थ तो स्थूल बुद्धिवाले पक्षपातियोंके लिये ही छोड देना उचित है।

इति

पृष्ठ (६८२) की टिप्पणीमें सूचित किये हुए दश मुकामोंका वर्णन

प्रथम नासूत का वर्णन

नासूत मुकाम सुमेरु पर्वतके उत्तर ओर पृथ्वीसे छत्तीस सहस्र योजन ऊंचा है और यहांपर दयाअंश रहता है और यह मायाका स्थान है–महामाया इस जगह अपने तेज सहित निवास करती है। और जब कबीर साहब और मुहम्मद साहब उस स्थानपर पहुंचे तब वहां हजरत दाऊदको बैठे तथा जबूर नामक पुस्तकको पढ़ते पाया। वहां पहुंचकर कबीर साहबने अस्सलामअलैक कहा–तब हजरत दाऊद अलैकमस्सलाम कहकर उठ खड़े हुए–और उनके हाथोंको चूमकर बड़ी आवभगत किया–तब कबीर साहब मुहम्मद साहबको उस स्थानकी विशेषता और गुणोंको बतलाकर आगे चले।

दूसरे मलकूत का वृत्तान्त

दूसरा स्थान मलकूत है–और यह स्थान नासूत से चौबीस सहस्र योजन ऊंचाई पर है–और पृथ्वीसे साठ सहस्र योजन की ऊँचाईपर है। और इस स्थानको दूसरे शब्दोंमें वैकुण्ठ कहते हैं, और यह वैकुण्ठ विष्णुका स्थान है–और इसी स्थानपर पाप पुण्यका लेखा लगता है–और इस विष्णुकी सभामें ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्रादिक समस्त देवतागण उपस्थित रहते हैं–इस विष्णुहीका नाम धर्मराय है–और आपकी आज्ञासे नरक तथा वैकुण्ठ और योनिका फिरना आदि सब कुछ होता है–और इसी स्थानसे विष्णु महाराजका परिभ्रमण समस्त पृथ्वी और आकाशादिमें हुआ करता है। चित्रगुप्तजी विष्णु के मंत्री सबके पाप पुण्यका लेखा तथा हिसाब रखते हैं। जब कबीर साहब मुहम्मद साहबको अपने साथ लेकर इस मलकूत पर पहुंचे-तो वहां मूसाको बैठे तौरते पढ़ता पाया–कबीर साहबने वहां पहुंचकरभी सलाम अलक किया–मूसा सलाम का उत्तर देकर उठे, और उनका हाथ चूमकर बड़ी आवभगतकी तब कबीर साहबने मुहम्मद साहबको इस स्थान के समस्त गुण बतला तथा वहांके वृत्तान्तसे विज्ञ कराकर आगे चले।

तीसरे जबरूतका वृत्तान्त

तीसरा जबरूत है–इस जबरूत स्थानको कबीर साहबने झांझरी द्वीप कहा है–और यह निर्गुण ब्रह्म अलख निरंजनका स्थान है जो तीनों लोकका कर्ता धर्ता है और यह स्थान वैकुण्ठसे अठारह करोड योजन ऊपर को ऊँचा है–यह बड़ा सुन्दर स्थान है–यहांपर चार करोड़ ज्योतिका प्रकाश है-और इस सभामें चारों फिरिश्ते उपस्थित रहते हैं–अर्थात् जिबराईल-इस-राफिल इजराईल–और मेकाईल। इन्हीं चारोंको ब्रह्मा विष्णु शिव और यम इत्यादिके नामसे पुकारते हैं। समस्त आज्ञाएं इसी स्थानसे प्रचलित हुआ करती हैं–और चारों फिरिश्ते इन्हींके आज्ञाकारी हैं। वेद तथा पुस्तकें सबके प्रचार कर्ता यहीं हैं और आपही के आज्ञाकारी तथा अधीन सब हैं। आद्या तथा निरञ्जन इसी राजधानीमें बैठकर तीनों लोकका राज्य करते हैं जब कबीर साहब रसूल अल्लाहको साथ लेकर पहुंचे तो देखा कि हजरत ईसा वहां बैठे हुए इञ्जील पढ़ रहे हैं। वहां पहुंचकर कबीर साहबने आसलामअलैक कहा और हजरत ईसा सलामका उत्तर देकर उठ खड़े हुए और उनके हाथको चूम लिया–तब कबीर साहब मुहम्मद साहबको उन स्थानोंके गुणका विवरण बताकर आगे चले।

चौथे लाहूतका वृत्तान्त

चौथा लाहूत है जबरूत और लाहूतके बीचमें ग्यारह पालंगका अन्तर है, और एक पालंग आठ करोड़ योजनका है। यह लाहूत स्थान अक्षरका है यहां अक्षर और योगमाया रहते हैं वह बडा सुन्दर स्थान है। जब कबीर साहब और मोहम्मद साहब इस स्थानपर पहुँचे तब कबीर साहबने मोहम्मद साहबसे कहा कि हे मुहम्मद! देखो यह तुम्हारा स्थान है–और यहांहो वह अक्षर पुरुष जिसको तुम बेचून बेचेरा खुदा कहते हो रहता है और उस स्थानके गुण दिखलाकर आगेको चले।

पाँचवे हाहूतका वृत्तान्त

पांचवां हाहूत है–यह हाहूत स्थान एक असंख्य योजन शून्यके ऊपर है–अर्थात् लाहूत और हाहूतके बीचमें एक असंख्य योजन शून्य और अंधकार है–यह हाहूत स्थान अचिन्त पुरुषका है–यहाँ अचिन्त पुरुष सपत्नीक रहता है–और यह स्थान बडा ही मनोहर है–अचिन्तके सामने तीन सौ अप्सराएँ नृत्य करती रहती हैं–और यह निःशंक तथा निर्द्वंद्व रहता है कबीर साहब इस स्थान और अचिन्त पुरुषका सब विवरण मुहम्मद से कह करके आगेको चले।

छठवाँ बाहूतका वृत्तान्त

यह बाहूत छठा स्थान है। और बाहूत और हाहूतके बीचमें तीन असंख्य योजन शून्य और अँधेरा है और हाहूतसे बाहूत तीन असंख्य योजनकी उँचाईपर है–यह अत्यन्त मनोहर स्थान है इस स्थानमें सोहं पुरुष रहता है–और सोहं पुरुषकी अर्धांगिनीका नाम ओहं है–यह सोहं पुरुष अपनी शक्ति ओहं सहित सिंहासनपर अधिकृत हैं–और उस स्थानमें सर्वत्र सोहंका शब्द सुनाई दिया करता है। अब कबीर साहब मुहम्मदको लेकर इस स्थानपर पहुँचे तो वहांके समस्त गुणोंका विवरण उन्होंने उनसे किया और फिर आगे चले।

सातवें साहूतका वृत्तान्त

यह साहूत बाहूतसे पाँच असंख्य योजन ऊँचा है, और बाहूत और साहूतके बीचमें पाँच असंख्य योजन शून्य और अत्यंत अंधकार है। यह इच्छाका स्थान है। इस स्थान को सुन्दरतम तथा यहांकी सुखसामग्रीका भी विशेष विवरण है कबीर साहब मुहम्मद साहबको दिखलाकर आगें चले।

आठवें राहूतका वृत्तान्त

राहूत साहूतके ऊपर चार असंख्य योजन ऊंचा है। साहूत तथा राहूतके बीचमें चार असंख्य योजन शून्य और अत्यंत अंधकार है और इस राहूत स्थानमें अंकुर पुरुष अपनी शक्ति सहित रहता है–यह अत्यंत सुन्दर तथा मनोहर स्थान है। जब कबीर साहब मुहम्मद साहबको लेकर इस स्थानमें पहुँचे तो उसके सब गुण दिखलाकर आगे चले।

नवमें आहूतका वृत्तान्त

यह राहूतके ऊपर दो असंख्य योजन ऊँचा है। और बीचमें शून्य तथा अंधकार है-इस स्थानमें सहज पुरुष रहता है-और सत्यपुरुषका सबसे बड़ा पुत्र यही कहलाता है। यह नवाँ स्थान सबसे सुन्दर और आनन्द पूर्ण कहलाता है। कबीर साहबने मुहम्मद साहबको वह स्थान दिखलाए और इसका विवरण करके फिर आगेको चले।

दशवें आहूतका वृत्तान्त

आहूत और आहूतके बीचमें दश असंख्य लाख योजनका अन्तर है अर्थात् स्थान आहूत आहूतके ऊपर दश असंख्य लाख योजन ऊँचा है और यही स्थान सत्यपुरुषका है इसकी सुन्दरताका विवरण किया नहीं जा सकता है इसी स्थानसे कबीर साहब सत्यपुरुषकी आज्ञा लेकर पृथ्वीपर आया करते हैं और इसी स्थानके रसूल पाक है और इसी सत्य पुरुषके सत्यलोकमें जब हंस पहुंचते हैं तब कालपुरुष उनको नमस्कार करता है और उन हंसका आवागमन फिर कभी नहीं होता। वे हंस सत्यपुरुषकी स्तुति किया करते हैं और वे सत्य-पुरुषके स्वरूपको प्राप्त हो जाते हैं : सत्यलोकके आधीन अठासी सहस्र द्वीप है और सब द्वीपोंमें सत्यपुरुषके हंस आनन्द करते हैं उनके भोजन तथा वस्त्रादिका विवरण नहीं हो सकता है।

सत्यकबीराय नमः

अथ श्रीबोधसागरे

दशमस्तरंगः

श्री ग्रन्थ काफिर बोध

मंगलाचरण--सोरठा

वन्दौ श्री सत्य कबीर, कुफर नसावन जगत गुरु ॥
पावौं सत मति धरि, टूटे कुफर जंजाल सब ॥

ग्रन्थारम्भः

कौन सो काफिर कौन मुर्दार । दोऊ शब्दका करो विचार ॥
गुस्सा काफिर मनी मुदार । दोऊ शब्दका यही विचार ॥
हम नहिं काफिर हम हैं फकीर । जाइ बैठे सरवरके तीर ॥
चोरी नारी दरोग सो डरें । राह सो लेखा सबका करें ॥
नंगे पायन पृथ्वी फिरै । हाट न लूटै बाट न परै ॥
हमतो(बाबा)किसीका कछु न बिगारै। दर्द मन्ददिल दया सवाँरै ॥
दुनिया लोक सो उल्टी करै । सत्यनाम सदा उच्चरै ॥
सिक्का देखि न कहिये फकीर । फकीर न कूटे पुरानी लकीर ॥
काफिर सो कुफराना करै । अलह खुदाय सो नाहीं डरे ॥
करे न बन्दगी फिरे दिवाना । गरभ बांधि फिरै गैबाना ॥
बोल कुबोल सेबै बिसरावै । खून खराफातको दूरि बहावै ॥
दिल में चोर कमर में कत्ती । लोगन के घर भाजे रत्ती ॥
अलह के नामे बाँटै खाना । सो कहिये सांचे मुसलमाना ॥
मुसलमान मुसावे आप । सिदक सबूरी कलमा पाक ॥
खडी ना छेडे पडी न खाय ।सो मुसलमान बिहिश्तको जाय॥

१ क्रोध । २ अभिमान । ३ व्यभिचार । ४ जारी ।

कलमा पढे न आवै बिहिस्त। हिरदे रहे पाप की दृष्टि ॥
हिन्दु मुसलमां खुदाके बन्दे। हमतो योगी (किसीका) नराखे छन्दे।
देवी देहरा मसीद मिनार। हमरे तो एक नाम अधार ॥
टाकी ले कौन ऊपर चढे। पाव न दावें हाथ न गढे ॥
तहांन अग्नि पवन का डर। ऐसा अलखपुरुष (जिन्दपीर) का घर
चूना पत्थर बनाइया दादा आदम की करनी ॥
हमतो रहें अलेख पुरुष जिन्दा पीर की शरनी ॥
मक्खी जाय बंधनमें परी। छानत छानत ताही गिरी ॥
काजी मुलमा करे बिचार। मक्खी किया बडा अहँकार ॥
मक्खीतो गाये भखे। मक्खी तो सूअर भखे ॥ मक्खी तो हलाल भखे। मक्खी तो मुर्दार भखे मक्खी जाय बिगारे खाना। तहां न चले बादशाह परवाना ॥ कोरा कलमा बहुतेरा बोले ॥
खैर मिहर का खीसा न खोले ॥ मिहर न बांटे मुर्दार खोरा। खैर न बांटे अल्लहका चोरा ॥ अरस परस बीच समाना। मोम दिल मोम दिल जाना ॥ सिदके सो परि पहिचाना। दर्दमन्द दुरवेश बखाना ॥ रहमत है मुरशिर पीरको। जहमत सूम महसूदको ॥
नेश्चयपरिचे निवाज गुजारे। श्रवणनेत्रको बर निहारे ॥ मुहम्मद मुहम्मद क्या करे। कुरान कलमा क्या पढे ॥ किधर किधर की राह बतावे। बिन गुरु पीर राह ना पावे ॥

साखी—हाजी गजी दोऊ गुरुचेला खोज। दश दर्वाजा ॥
अलख पुरुष कहँ माथ नवाओ, इस विधि करे निमाजा ॥
सभे साचे काजी, सांचे सांचे मुलना वेद कुरान ॥

कहे कबीर आबसो सब आलम उपजाना ॥ हिन्दू कहिये की मुसलमाना ॥ राम रहीम बसे एक थाना। मनको जाने सोई मोलाना ॥
दरको जाने सोई दरवेश। हमतो बाबा नेकबदी सो न्यारा ॥
दुनिया मति कोइ लावे दोष। हम तो कहि हैं अकेले दस्त ॥

ताका साहेब मक्का वस्त । मक्कवन्तका साहेब अकिल मन्द ॥
अकिलमन्द अकिल सोजाना । मन मुरीद दोस्ती दाना ॥
सहर गदाई कौन यार । सिर खुरदनी कौन यार ॥
वन्दी खाने कौन यार । तख्त बादशाही कौन यार ॥
काया यार सिर खुदनी । दिल यार मार मांहीं ॥
जीव यार बन्दी खाने । मन यार तख्त बादशाही ॥
मनलाल दिललालललपोतदा । रहमसा ही हमसा हसाहपोतदार ॥

इति कबीर साहब का वचन उचार विचार

अथ खान मुहम्मद अली पादशाहका प्रबोध ।

कलिक कीमोक लिस रसमें की चसमें । खदयर संयम करदम । ओजूद राह चकित करदम ।
औवल–अक्ले पीर है । मन मुरीद है । तन शहीद है असल गदाई है । तकबुर दुशमन है गुस्सा हराम है । नफ्स शैतान है । चोरी लानती है । जुवारी पलीदी है । अदब आदि है । आदब कम असल है । राह पीर है । बेराह बेपीर है । सांह-विहिश्त है झूठ दोजख है । मोमदिल पाक है । संगदि नापाक है । हिर्स हैवान है बेहिर्स वली है ॥

लाह लुई दरकत है । अचेत गुलाम है । असलजादेको सलाम है । कृतहीन जर्दरू है । दाना जौहरी है । असलकी दोस्ती है । दाना शायर है । बूझ महबूब है । बन्दगी कबूल है । अल्लाह नूर है । आलम हद है । साहिब बेहद है । यकीन मुसलमान है । शील रोजा है । शर्म सुन्नत है । ईमान मुसलमान है । बेईमान बेदीन है । दिल दलील है बाँग बलेल है । फकीरी सबूरी है नासबूरी मक्कारी है । दरोग द्वन्द है ।

इति समझौता

अथ बन्द

प्रथमबोलिये मूल बन्ध। दुजे बोलिये कमर बन्ध। तीजे बोलिये लंगोट बन्ध। पाँचवें बोलिये दानिश बन्ध। छठै बोलिये शस्त्र बन्ध। सातवाँ बोलिये सहस बन्ध। आठवाँ बोलिये अहूठ हाथकी काया। जाका मर्म काहू विरले पाया॥ मक्केहिसें मदीने छाया। औवल पीर हिन्दू कौबल वीर मुसलमान कहाया॥ मुसलमानकी काटी चोंचनी हिन्दू के छेदे कान। बोलता ब्रह्म नहीं हिन्दू नहीं मुसलमान। दादा आदम ने गाया। बडे बडे पीरन को फरमाया। खुदाने अली पादशाह को चिताया। हिम्मते बन्दा मददे खुदाया। दुआ फकीरा रहम अल्लाह। कदम दर्वेशाँ रद्द बलाय। दादा आदम मामा हौआ। मक्के मदीने में चढा तावा। पहिली रोटी फकीर को रवा। ना देवे रोटी तो टूटे कठवता फूटे तवा। बैठी रहो मामा हौवा। कुफ्र वले अपनी रावा। इतनी सवाल रतनहाजी ने कह्यो। कहै कवीर पीर को जानी। काफिर बोध सम्पूरण वानी।

इति श्री काफिरबोध प्रथम मंजिल समाप्त

फिरिश्तोंका ब्यान

१ औवल फिरिश्ता बसर है। जैसे खुदाकी सूरत मूरत नहीं है आदि अन्त नहीं है वैसे बरसकाभी कोई रूप रेख नहीं है। खुदाने यह फिरिश्ता सब। जीवधारीके संग लगा दिया है जो हरएकको बतलाता है कि, देख कर चलो ठोकर मत खाओ॥

२ दूसरा फिरिश्ता समअ (कान) है उसके द्वारा खुदा उपदेश करता है कि, मकरूह (बुरा) मरगूब (भला) आवाज और दोस्त दुशमन की बातको सुनो और समझो।

---

१ नेत्रेन्द्री, कर्णेन्द्री।

३ तीसरा फिरिश्ता शामा (घ्राणेन्द्रिय) है। यह फिरिश्ता सुगन्धि दुर्गन्धि को बतलाता है।

४ चौथा फिरिश्ता लमस (स्पर्शेन्द्रिय) है जो बतलाता है कठिन और कोमल को।

५ पाँचवा फिरिश्ता जायका (रसेन्द्री) है जो छः प्रकार के रसोंका ज्ञान बतलाता है।

६ छठां फिरिश्ता हाथ है जो हाथ से करने योग्य कामों को सिखाता है।

७ सातवाँ फिरिश्ता पाँव है जो चलने फिरने को बतलाता है।

८ आठवाँ फिरिश्ता जबान (जिह्वा) है जो भला और बुरा वचन बोलने को सिखाता है।

९ नवाँ फिरिश्ता आलातनासुल (जननेन्द्रिय) है जो मूत्र त्याग करने और संसारकी वृद्धि करने का मार्ग बतलाता है।

१० दशवाँ फिरिश्ता मेकअद (गुदेन्द्रिय) है जो शरीर के मलों को बाहर निकालता है।

११ ग्यारहवाँ फिरिश्ता दिल (मन) है जो इच्छा उत्पन्न करता है और राग द्वेष करता है। दिल वह नहीं है जिसको राक्षस मांसाहारी लोग कबाब बनाकर खाते हैं।

१२ बारवाँ फिरिश्ता इदराक (चित) है जो सर्व पदार्थोंका चिंतन करता है।

१३ तेरहवाँ फिरिश्ता अहंकार है जो जीवन की रक्षा करता है।

१४ चौदहवाँ फिरिश्ता अक्ल (ज्ञान) है जिसे जिबरईल कहते हैं और जो सबके भेद को जानता है और सबको उपयुक्त मार्ग बतलाता है।

१५ पन्द्रहवाँ फिरिश्ता शहवत (रजोगुण) है जिसको ब्रह्मा कहते हैं।

१६ सोलहवाँ तमीज (सतोगुण) है जो सत्य असत्य का विचार बतलाता है इसीको विष्णु कहते हैं।

१७ सतरहवाँ फिरिश्ता गजब (तमोगुण) है जो दुःखदाई पदार्थोंसे रक्षा करता है इसीको शिव कहते हैं।

इसी प्रकार पांच तत्व और सर्व प्रकृतियाँ आदि संसारके सर्व वस्तु फिरिश्तो हैं और जिस प्रकार शरीर का राजा जीव है उसी प्रकार सब जड चैतन्य का स्वामी साहिब है जिसके शरणमें जानेसे अटल सुख प्राप्त होता है।

इति काफिरबोध

इति श्रीबोधसागरान्तर्गत काफिरबोध नामकदशमस्तरंगः

ज्ञातव्य

काफिर बोध पुस्तक के प्रथम मंजिलकी एकही प्रति मेरे पास है। बहुत प्रयत्न करने पर भी उसकी दूसरी प्रति न मिल सकी इस कारण जैसी प्रति थी उसीके अनुसार ही रक्खा है। इस ग्रन्थ में फारसी और अरबी शब्दों का बहुत प्रयोग किया है किन्तु यह ग्रन्थ लिखा हुआ अशुद्ध हिन्दी अक्षरोंमें मिला है और दूसरी प्रति न रहने तथा छपने की शीघ्रता के कारण से कितने शब्द शुद्ध२न जान पडनेके कारण जो त्रुटियाँ रह गयी हैं उनको दूर करने के लिये प्रयत्न कर रहा हूँ प्रयत्न सफल होने पर दूसरी आवृत्ति में ठीक कर दिया जायगा।

इति

सत्यपुरुषाय नमः

अथ श्रीबोधसागरे

एकादशस्तरंगः

श्रीग्रन्थ सुलतानबोध

मंगलाचरण दोहा

अजर अमर सत नाम है, भंजि शोक तम पुंज ।।
तासु चरण मन रमि रहहु, कमल मीर जिमि गुंज ।।

धर्मदास वचन—चौपाई

धर्मदास उठि विन्ती लाये । सतगुरु मोहि कहो समुझाये ॥
कैसे करिये तजिय संसारा । ताको समरथ कहो विचारा ॥
आगे भये बलख के मीरा । माया सुख तजि भये फकीरा ॥
कही विधि तिन तजि पादशाई । सब वृत्तांत कहो समझाई ॥

सतगुरु वचन

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा । बलख भेद कहूं तुम पासा ॥
बलख शहर एक नगर अनूपा । तहँ सुलतान यक ज्ञान सरूपा ॥
बादशाह शाहन सरदारू । प्रेम प्रीति मन माहिं विचारू ॥
इब्राहीम अद्धम जेहि माना । राज माहिं भक्ती जिन ठाना ॥
विरह उठी शाह मन माही । कारज अपना कीना चांही ॥
मनुषा जनम अमोलक पायी । ऐसे तन पाई खुदा मिलि जायी ॥
जो यहि अवसर अछह न पाया । क्षण महँ विनशि जायगी काया ॥
ऐसी फिकर उठी मन माई । तब षट दर्शन लिये बुलाई ॥

पण्डित साधु संन्यासी आये। जोगी जंगम यती बुलाये॥
ज्ञानी ध्यानी सबके पीरा। काजी मुल्ला सेख फकीरा॥
सब मिलि भेष जुड़े तहँ आयी। तिनसों वचन बूझा अर्थायी॥
तबहि शाह सब टेर सुनायी। अल्लह रूप मुहि देहु दिखाई॥
खुदा मिले कह कौन उपाई। कौन राम अरु कौन खुदाई॥
एक खुदा यक और को होई। काहे भयो एक अस दोई॥
दोऊ दीन मिलि कहो समुझायी। दोमें सांच कौन ठहराई॥
दोउ कर जोडि सबन सो कहेऊ। बहुत अधीन आप तहँ भयऊ॥
होय अधीन तब शीस नवायी। सबसे बूझे मन चित लायी॥
सब मिलि कहों खुदाई सन्देशा। मेरे मनका मेटो अँदेशा॥
साहब बसे कौन से देशा। सो मुहि बात कहो दुरवेशा॥
दोऊ राह यह किनहि चलायी। किन वैकुण्ठ विहिस्त बनायी॥
एती सब मिलि कहो दिवाना। नातो दूर करो कुफराना॥
बिन देखे सबही दिल धरहीं। कान छिदाय अरु खतना करहीं॥
हमरे दिलका मेटो अँदेशा। हम माने तुमरो उपदेशा॥
हिन्दू सबे बैकुण्ठहि धावैं। मुसलमान विहस्त ठहरावैं॥
इनमें कहां खुदा का बासा। विन देखे कीनो विश्वासा॥
किनहु खुदाका घर नहिं पाया। झूठ झूठ सब द्वंद मचाया॥
खुदाकी खबर न कोइ बताहीं। सबको जडो कोठरी माहीं॥
दोऊ दीन यह किन भरमाया। खुदाकी खबर किनहु नहिं पाया॥

साखी–दोऊ दीन समझावहू, मो मन बहुत अन्देश॥
कौन खुदा दो दीन रचे, बसे कौन सो देश॥
कोपे इब्राहीम तब, ये सब भरम भुलाहिं॥
खुदा भेद कोउ ना कहे, डारो कोठरि माहिं॥

चौपाई

चली जो बात दशो दिशि जायी। षट दर्शनको साधु रोकायी॥
इतनी बात काशी सुनि पाई। तब उठि धाये आप गुसाईं॥
जिन्दा रूप गुसाईं कीना। जाइ शाह को दर्शन दीना॥
बैठे तख्त आप सुलताना। जिन्दा दुआसलामा कीना॥
दोआ सलाम हमरी नहिं माना। माया के मद गर्व भुलाना॥

सुलतान वचन

कहे सुलतान सुनो दुरवेशा। जिन्दा रूप कौन को भेशा॥
कहाँ से आये कहाँ तुम जाओ। कौन काज हमरे घर आओ॥
हम पूछें जो खुदाकी बानी। इल्म अल्लाहकी कहो निशानी॥
कुदरत की कोइ आदि बतावै। सोई मुर्शिद पीर कहावे॥
हमरे दिलमें विरह बहु आया। खुदा मिलन कोउ नाहिं बताया॥

जिन्दा वचन

जिन्दा कहे सुनो रे भाई। षट दर्शन तुम देहु छुडाई॥
तब हम तुम सों ज्ञान करावें। संशय तुम्हारो सकल मिटावें॥
षट दर्शन को छोडि तुम देओ। जो चाहो सो हमसो लेओ॥
अब जनि शंका मानो भाई। जो पूछो सो देउँ बताई॥

सुलतान वचन

कहे सुलतान सुनो दुरवेशा। कैसे मिटे हमार अँदेशा॥
ऐसी बात कहो अधिकाई। क्या तुम दुसरे आय खुदाई॥

जिन्दा वचन

तब हम एक कला दिखलायी। भैंसा पास यक साख भरायी॥
जब दुरवेश भैंसा लगि जायी। भैंसा से यक वचन सुनायी॥
भैंसा कहै सांचे दुर्वेशा। मानो शाह इनको उपदेशा॥
यहि दुर्वेश खुदा समजानो। इनसे कर्त्ता और न मानो॥

सुनिके शाह अचम्भो भयऊ। भैंसा साख सो कैसे भरेऊ॥
यह तो पीर औलिया आये। भैंसे पास इन साख दिवाये॥
शाहके दिल परतीति अस आयी। यह दुरवेश खुद आय रहायी॥
षट दर्शन को बन्ध छुडाये। बन्दी छोर कहि कहि सब जाये॥
साखी—बन्दीछोर कहाइया, शहर बलख मंझार॥
छूटे बन्ध सब भेषको, धन धन कहे संसार॥

चौपाई

तब सुलतान अपने मन जाना। यह दुर्वेश अविगत ठाना॥
भैंसा पास इन साख भराहीं। यह तो गति आदम की नाहीं॥
एती कला जान जब पाये। फिरि जिन्दा से पूछन लाये॥

सुलतान वचन

कहे सुलतान सुनो दुर्वेशा। जिन्दा रूप कौनको भेशा॥
कहाँसे आये कहाँ तुम जाओ। इतनी सुनद कही समुझाओ॥
तुम मुर्शिद पीर हमारा। हम अपने दिल कीन विचारा॥
साखी—कहाँ से आये जिन्द जी, फेर कहाँ तुम जाव॥
हिन्दु तुरक मैं कौन हो, मोहि कही समझाव॥

जिन्दा वचन—चौपाई

कहे दुर्वेश सुनो रे भाई। जिन्दा रूप खुदाको आई॥
अल्लाह आप सकल घटमाहीं। दोऊ दीन दोउ राह चलाहीं॥
हम दौजख तजि विहिश्तको जाये। सौंपन एक चीज तोहि आये॥
तुम हो दीन दुनी सुलताना। राखो मियाँ सुई सहिदाना॥
जब तुम आओगे विहिश्तके माहीं। तब हम सुई लेब तुम पाहीं॥
यही काज तुम्हरे घर आये। मियाँ सुई धरों तुव ठाये॥
दीन दुनी के बादशाह कहाओ। इतनी सनद हमारी लाओ॥
सुई देव जब विहिश्त मँझारा। तब हम माने सांच तुम्हारा॥
हँसकर शाह सुई कर लीना। सहस्र सुईका कौल तब दीना॥

सुलतान वचन

जाओ विहिश्त मानो विश्वासा । सहस्र सुई लेना हम पासा॥

सतगुरु वचन

इतनी गोष्टि शाह सो कीना । तब तहाँ से पयाना दीना ॥
एक सुई उन हम सो लीना । सहस्र सुईका कौल तब दीना ॥
साखी–इतना कहि हम उठि चले, चानक शाह लगाय ।
नीमशाम के वक्त में, जुडी अदालत आय ॥

चौपाई

सब मिलि आय जुडे दरिखाना । बैठे आय तहां सुलताना ॥
शाह के हाथ सुई जब देखा । तब वजीर मन कीन विवेखा ॥
हाथ जोडिके विनती लावा । कैसे सुई हाथ में आवा ॥

वजीर वचन

कैसे सुई हाथमें लीना । कारन कौन कहो हम चीना ॥

सुलतान वचन

कहे सुलतान सुनो दीवानां । बन्दा अल्लाह दिया सहिदाना॥
दुरवेश एक यहां चलि आया । जिन या सुई दीन हम पाया ॥
कहा दुरवेश विहिश्त तुम आव । तब या सुई लेब तेहि ठाँव ॥
ऐसे वचन कह्यो दुर्वेशा। सुई हम देन कही तेहि देशा ॥
एक सुई हम उनसे लीना । सहस्र सुईका कौल हम दीना ॥
इतना वचन कहे सुलताने । सुनत वचन विन्ती तिन ठाने॥

दीवान वचन

दीवान कहे सुनो हो साई । सुई विहिस्त कौन विधि जाई ॥
गाम परगना और ठकुराई । सबही धरा रहै यहि ठाई ॥
तात मातु सुत सुन्दर दारा । तन धन धाम सकल परिवारा॥

---

१ दीवान

अंत समय ये काम न आवैं । आपु चिन्हेतब जिव सुख पावैं॥
जहँ लगि जगमें दृष्टि दिखाहीं । सो सब विनशि जाय क्षणमाहीं
जतन करे बहुत सुख पावे । सो तन जले गडे मिटि जावे ॥
ऐसे कहि वजीर शिर नायौ । कैसे सुई संग लै जायौ ॥
समझि देखु अपने दिलमाहीं । सुई संग कौन विधि जाहीं ॥

सुलतान वचन

तब सुलतान वचन अस कहई । सुनो वजीर मता यक आहई॥
इतना लशकर संगलै जायब । हस्ती चार सो सुई भरायब ॥

वजीर वचन

हस्ती संग चले नहिं शाहा । खोजा करो तुम दिलके माहा॥
हस्ती घोडा माल खजाना । यह सब संग चले न निदाना ॥

सुलतान वचन

शाह तबै अस वचन सुनावे ।बैठि सुखपालविहिश्तको जावे॥
लेवँ बाँस में सुई भरायी । यहि विधि सुई संग ममजायी॥

वजीर वचन

तब दिवान कर जोरि सुनावें । यह सुखपालकबर लगि जावे॥
आगे कस तुम करहु साँई । सो मोहि वचन कहो समझाई॥

सुलतान वचन

आगे हम घोड चढि जायब । लेइ जीन में सुई भरायब ॥
अहो दिवान एसेई करिहौं । ले दरवेश के आगे धरिहौं ॥

कबीर वचन

सुना दिवान तबै हसि दीना । दोइ कर जोरिके विन्ती कीना॥
दादा बाबा तुम्हरे रहैया । घोडे चढि कोऊ ना गैया ॥
साखी–इतने में संग नहिं चले, सुनहु शाह चित लाय ॥
यह बजूद दिन चार है, सो भी संग न जाय ॥

चौपाई

मनमें चकित शाह तब भयऊ। झूठी माया हम चित दयऊ ॥
सुई संग चले नहिं जाही। झूठी राज पाट सब शाही ॥
सहस्र सुईका का परसंगा। एके सुई चले नहिं संगा ॥
अबतो खाना हम तब खावें। जब जिन्दाका दर्शन पावें ॥
इतना ज्ञान शाह घट आवा। जिन्दा दरशको सुरति लगावा॥
इबराहीम ऐसि मति ठाना। राज मांहि भक्ती जिन जाना ॥
साखी–जिन्दा जिन्दा रट लगी, हिरदय रहा समाय ॥
जो जिन्दा अबकी मिले, पूछू सब घर पाय ॥

चौपाई

ऐसी रटना शाह तब लावा। जिन्दा मिलन भयो उर भावा॥
बहुत दिवस रट लागी ऐसी। आगे कहूँ भयी गति जैसी ॥
शाह कीन माहँ बिचारा। जिन्दा मिले सो कौन प्रकारा ॥
सब सिद्धन को लाउ बुलायी। उनसे पूछो मति अस भाई ॥
जोई सिद्ध अजमत बतलावें। उनसे खबर जिन्दाकी पावें ॥
जबे शाह ऐसी मति ठानी। लिये बुला सिद्ध सब ध्यानी ॥
साखी–सब सिद्धनको टेरिके, शाह किये सन्मान ॥
देउ करामत सिद्ध मोहिं, तब मेरो मन मान ॥

चौपाई

सन्मुख शाह सिद्ध सब आनी। तबही शाह कहे अस बानी ॥

सुलतान वचन

अधिक प्यारे तुमही अल्लः को। करामात दिखलाओ अब हमको॥
ना मैं तुम्हको बांधि झुलाऊँ। ना तो तुम्हको छुरी मराऊँ ॥

सिद्ध वचन

तब बोले सिद्ध चौरासी। हम हरि के आहिं उपासी ॥
निशि दिन रामा नाम गुण गावें। करामात ढिग हम नहिं जावें ॥
यह सुनि शाह बहुत रिसियाना। हुकम कीन सब बन्दी खाना ॥

सुलतान वचन

तुम काफिर अल्लाह ते दूजा । भूत प्रेत चित लाये पूजा ॥
चक्की ढिग इनको बैठाओ । निशि दिन इनसे नाज दराओ ॥
जो नहीं करामात तोहि होई । क्यों कर सिद्ध कहाओ सोई ॥

सतगुरु वचन

बैठे सिद्ध सब चाक चलावें । चित विस्मय सब हरिगुण गावे ॥
त्रास देखि सुनि आयी दाया । ततछिन शाहद्वार चलि आया ॥
सोटा मारा चक्की माहीं । घूमहु सतगुरु दाया कराहीं ॥
बिदा सिद्ध भये हम भयगुप्ती । देख्यो आय शाहके जपती ॥
कहा साह सों तिन्ह कर जोरी । चक्की सब आपहिं चलि दौरी ॥

सुलतान वचन

सुनि के शाह कैफदिल आयी । कौन शख्श यह चक्कि चलायी ॥
वेगहि ढूँढि लाओ यहि वारा । चक्की चलायो सो अल्लह प्यारा ॥

सतगुरु वचन

ढूंढत नगर थके दिल जबहीं । नहिं पाये व्याकुल चित तबहीं ॥
जबहि शाह घर लगन विचारा । तब हम जीवदया उर धारा ॥
तुरतहिं जाय तहां पग्रु धारा । शाहके महलन चढे गोहारा ॥
महल पर देखत फिरों वहुँ खूठा । करों पुकार हेरानो ऊंटा ॥
सुनि के शाह क्रोधकरि धाये । कौन हमारे महलन पर आये ॥
कहो तुम कौन कहां से आवा । कौन काज महल पर धावा ॥
तब हम कहा ऊंट यक छूटा । ढूंढत फिरूं मैं अपनो ऊंटा ॥
बहुत अधीन ऊंट हम भायो । खोजत ऊंट महल पर आयो ॥
सुनिके शाह तबे हँसि दीन्हा । कैसे ऊंट महल पर चीन्हा ॥
जँगल माहिं तेहि खोजो जाओ । कैसे ऊंट महल पर आओ ॥
तब हम कहा सुनो तुम ज्ञाना । चढे तख्त अल्लह किन जाना ॥
ऐसी बूझ करो मन माहीं । सत्य वचन धरो मन ठाहीं ॥

साखी-तख्त चढे किन पाइया, सुनो शाह सुलतान ॥
हरदम साइब याद करु, रचा जिन सकल जहान ॥

महल न आवे ऊंट हमारा । तख्त ऊपर अल्लाह निहारा ॥
अल्लाह तख्त पर कैसे पावे । जहँ लगि घट महँ गर्व रहावे ॥
जब तुम छोडो राज शरीरा । अल्लाह लखो तुम अपनो पीरा॥
छोडो मान गुमान रे भाई । अल्लाह रूप तबही मिलि जाई॥
सुनत शाह सन्मुख जब आवा । तब जिन्दा से पूछन लावा ॥

सुलतान वचन

कौन रूप कौन नाम तुम्हारा ।कहो अल्लाह मिलेकौन विचारा॥

जिन्दा वचन

सांचे दिलसे सुरति लगाओ । प्रेम प्रीति लौलीन रहाओ ॥
सुख संपति की करो न आशा । निशि दिन दीया प्रेम प्रकाशा॥
मन अस्थिर करि सुरति लगाओ। तबहि दरश अल्लाह को पाओ॥
कहे कबीर खोजे सो पावे । खोजत खोजत अलख लखावे॥

साखी-प्रेम प्रीति करि खोजिये, हियमें आवे ज्ञान ॥
अलख अल्लाहकी खोजमें, जागत भये सुलतान ॥
जिन ढूढा तिन पाइया, गहरे पानी पैंठि ॥
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठि ॥

चौपाई

जब कीन मन शाह अन्देशा । नहिं तहँ ऊँट नहीं दुवेंशा ॥
ऐसे बहुत दिन बीता भाई । काल कला घट आन समाई॥
बहुरि एक दिन बलख मँझारा । शाहके महलनमें पशु धारा ॥
नौरोजा खेले सुलताना । गिलम बिछायबहूविधि जाना॥
महलन माहीं पहुँचे जायी । देखत फिरे महल चौपायी ॥
इब्राहीम अधम सुलताना । हमको देखत बहु रिसियाना ॥

सुलतान वचन

कहे शाह तुम कौन है भाये। केहि कारण तुम महलन आये॥

जिन्दा वचन

हम परदेशी दूर दिशारा। देखत फिरहिं सराय बसोरा[1]॥

सुलतान वचन

शाह कहे यह महल हमारा। कहाँ सराय जो करइ बसारा॥
जेहि महल हीरा जडा अपारा। तापर धुनी तुम कैसे बारा॥
अब तुम जाओ शहर बजारा। तहाँ जाइ करो सराय बसारा॥

जिन्दा वचन

कहे दुर्वेश सुनो तुम शाहा। करि विचार परखो दिल माहा॥
महल तुमारा तुम कहँ पावा। करो खोज यह किन निर्मावा॥
महल तुम्हारो होय न भाई। तुम भी मुसाफिर बसो सराई॥
सुनो शाह तुम चतुर सयाना। सुरति निरति बूझो तुम ज्ञाना॥
बहुत बादशाह तुम आगे भयऊ। महल न संग काहुके गयऊ॥
दादा बाबा तुम्हरा रहिया। महल काहूके संग न गैया॥
जा तुम थापा महल हमारा। अन्त काल सब छुटे घर बारा॥
यह जग सकल सराय बसेरा। इनमें नाहि कोउ केहि केरा॥
जहाँ के ताहाँ छूटहिं धामा। यह सबही दिनचार मुकामा॥
हरदम साहिबको पहिचानो। महल सराय एक करि जानो॥
ज्ञान दृष्टि दिलमें जब आवै। राज छोडि साहिब गुण गावै॥

साखी—ज्ञान[2] दृष्टि दिल आवई, सब तजि होय फकीर॥
कहे कबीर सुलतानसे, ज्ञानके लागे तीर॥

---

१ गुजारा, निर्वाह।

२ इस साखीके आगे एक प्रतिमें नीचे लिखे पद हैं। किन्तु यहाँ इनका मेल न मिलनेसे नोटमें लिखा है।

चौपाई

यक दिन शाह जु चले शिकारा। चुनि चुनि साथ लीन्ह असवारा
छोडे बाज पक्षी गहि आने। देखत शाह बहुत सुख माने॥
बहुविधि मारग करत कलोला। जहँ तहँ फिरे शिकारिन टोला॥
बहुत समय बीति जब गयऊ। एक शिकार हाथ नहिं अयऊ॥

चौपाई

ज्ञान दृष्टि जब दिलमें आही। छोडो राज पाट बादशाही॥
होय फकीर जंगलमें बासा। छोड़ी राज तख्तकी आसा॥
शाह जो बैठे जंगलमें जाई। नगरकी सब परजा चलि आई॥
काजी पण्डित शेख मुलाना। महंत महावत गुलामनफराना॥
सेठ सेनापति परजा आई। सबही धरे शाह की पाई॥

प्रजा वचन

ऐसी बात न करहु गुसाई। सबही राज भ्रष्ट होय जाई॥
जो तुम तजो तख्त औ राजू। सब परजा का होय अकाजू॥

सुलतान वचन

नाहीं तख्त निकट हम जावें। नहिं अपने शिर भार चढावें॥
यह बादशाही हमसे नहिं होवे। कौन तख्त चढि दोजख जोवे॥
हम छोडा तख्त बादशाही। फिरि संशय महँ हम नहिं जाहीं॥
बिना भक्ति मुक्ति किन पायी। राज करें सो दोजख जायी॥
हमको जाय मिले यक सांई। वहि साहब मुझको फरमाई॥
मैं अपराधी उनहि न चीन्हा। दिछ छाँडि उन हमको दीन्हा॥
अबतो करौं मैं कौन उपाई। सांइ मुझको कस मिलि है आई॥

परजा वचन

अब तुम चलो महलके माहीं। हम सब संग तुम होहु गुसाहीं॥
तुमको छाँडि एको नहीं जैहें। सब मिलि संग पयाना देहें॥
सबि मिलि लाये महल मँझारा। शाहके मनमें शोच अपारा॥
कैसे के जिन्दा मैं पाऊं। कैसेके मैं जिव मुक्ताऊं॥
झुठे झूठ मिल सब संसारा। दोजख कुंडमें नाखन हारा॥

साखी—बेर बेर हमको मिले, नाम जिन्दा सो आहि॥
अमरापन यक सुलतान है, किसविधि मिलेंगे आहि॥

तबै शाह बहुत रिसियाना । खोजु शिकार हुक्म फ़रमाना ॥
तबै शिकारी दुहुँ दिशि धावैं । पावें न शिकार मनहि पछतावैं॥
यहि विचलीला अस भइ भाई । सुनु धर्मनि तुम चित लगाई ॥
हरिन एक जो कनक रंग देखा । हीरा रतन मणि जडे विशेखा॥
देखि सरूप शाह ललचाई । यहि मिरगा कहँ घेरो भाई ॥
आज्ञा पाइ चले असवारा । घरयो हिरण सेन मझारा ॥
कहे शाह जो मिरगा जाई । तुमसे मिरगा लेहौं भाई ॥
सेना सब से तब कहे पुकारी । मिरगा भागि शाह तर गयऊ॥
शाह सब से तब कहे पुकारी । मिरगा मारि लाउँ यहि बारी॥
मिरगा संग सुलतान अकेला । नहिं कोइ सेना नहिं कोइ चेला॥
छिन में मिरगा देखि लुपाना । तेहि पीछे धावहि सुलताना ॥
लागी प्यास शाह को भारी । महा भयानक बनही मझारी॥
वट का वृक्ष तहाँ यक देखा । शीतल छाया बहुत विशेखा ॥
मिला फकीर एक तहँ वासा । कुत्ता दोय रहै उन पासा ॥
शीतल कलशा पानिहि भरिया। जापर ठिलिया मठका धरिया॥
खोजत नीर शाह चलि आये । दुआ सलाम करि वचन सुनाये॥

सुलतान वचन

कहे सुलतान प्यास मुहि भारी । जात जान तुम लेहु उबारी ॥

दुर्वेश वचन

हम फकीर दुर्वेश कहावैं । सुरति होय तो भरो पियावैं ॥
पियो शाह जल लियो निवासा। जिन्दे कीना अजब तमाशा ॥

---

१ दूर से आहू उसे आया नजर । पहुंचा उसपर शाह् घोडा मारकर ॥
होके वह् अपने सवारों से जुदा । पीछे दो फरसंग तक उसके गया ॥
जाते जाते हो गया आहू खडा । वाकहिसत आखिर अहम से कहा ॥
तुझको इस खातिर नहीं पैदा किया । वहशियों पर ता करे औरोजफा ॥
है गरज ईजाद से तेरे कुछ और । कर जरा तू दिलमें अपने आप गौर ॥
बात यह कहकर वह गायब होगया । नक्श उसका शाह के दिलपर हुआ ॥

साखी–गाकर कढी अगिनसे, मिश्री घृतहि मिलाय ॥
न्यामत धरी रिकाबमें, कुत्तासे कहे खाय ॥

चौपाई

कुत्ता न्यामत खाय न भाई । मार दुरवेश कुत्ता के ताई ॥
ऐसो चरित कीन दुर्वेशा । तब शाहके मनमें भयो अंदेशा ॥

सुलतान वचन

कहे शाह तुम सुनो दिवाना । यह पशु जीव न्यामत कहजाना ॥

जिंदा वचन

कहे फकीर सुनो बेनादाना । जैसा दिया तैसाही खाना ॥
जौसि करे करतूत कमाई । तैसि देह धरि भुगते भाई ॥
यामें फेर फार नहिं होई । जो बोवे लुनिहे वह सोई ॥

सुलतान वचन

दोयकर जोरिके विन्ती कीन्हा । साहब तुमरी गति हम चीन्हा ॥
वानी अगम कहो समझाई । आगे कौन हते यह साई ॥

दुर्वेश वचन

तब दुर्वेश कहे समझायी । सुनो शाह तुम मन चितलायी ॥
बलख शहर यक नगर रहाई । तहँके हैं यह दोनों राई ॥
इब्राहीम अहे यक राजा । एक बाप अरु दूजो आजा ॥
राज पाय कछु भक्ति न कीना । ताते जन्म श्वान को लीना ॥

---

१ यहां जो शाह इब्राहीम अद्धम साहबके बाप दादेको बलखका बादशाह लिखा है यह बात इतिहास और विचार द्वारा एकदम निर्मूल ठहरता है, क्योंकि बलखके बाद शाह इब्राहीमके बाप दादे नहीं थे वरन इसके उल्टा उनके पिता एक महान संत थे जो परम विरागमान और एकांतवास करने वाले थे । शाह इब्राहीमकी उत्पत्तिकी कथा बहुतही रोचक और आश्चर्य दायक है । यहां स्थानाभावसे नहीं दे सकता गुरुकी कृपा होगी तो कबीर साहबके जीवन चरित्रके सहित सुलतान चरित्र भी बृहत स्वरूपमें लिखेंगे । यहां दोनों कुत्तों को बलख के बादशाह और शाह इब्राहीम अद्धमको बाप दादा बतलाना बहुत ही भूल है इस हेतुसे जाना जाता है कि, इस पुस्तकमें भी उत्तरोत्तर मिलावट होती गयी है और मिलावट करनेवाले भी साधारण

सुल्तान वचन

तब सुल्तान कहे सुनु साई । एक बात और कहो समझाई॥
दोय खूंटे दोय श्वान बंधाये । तीजा खूंटा क्यों खालि रहाये॥

दुर्वेश वचन

कहे दुर्वेश सुनो रे भाई । याकी गतिहि कहूँ समझाई ॥
इब्राहीम नाम जेहि होई । बलख शहर का राजा सोई ॥
राज माहिं बहुत सुख करिहैं । भाव भक्ति नाहीं मन धरिहैं ॥
विना बन्दगी जिन छूटे देहीं । वे पुनि जनम श्वान को लेहीं॥
इसमें जड़ूं आनि के ताही । तब ये तीनों रहें एक ठाहीं ॥
इतनी सुन दुर्वेशहि बाता । शाह के मन में लागी घाता॥

सुलतान वचन

सुनि सुलतान अचम्भा भयऊ । तब दुर्वेश हि पूछन लयऊ ॥
श्वान योनि कस छूटे साई । ताका भेद कहो समझाई ॥

दुर्वेश वचन

कहे दुर्वेश भक्ति जो करई । सो नर श्वान देह ना धरई ॥
करे बन्दगी साहिब केरी । दया मिहिर की दशा जा होरी॥
प्रेम प्रीति परमारथ नीका । माया मोह जाने सब फीका ॥
सब सुख नामहि से लौलावे ।सो जिव श्वान जनम नहिं पावे॥

सुलतान वचन

शाह कहे जो लेइ बचाई । सो दुर्वेश साँच है भाई ॥
सो दुर्वेश खुदा का बन्दा । श्वान योनि का काटे फन्दा ॥

विचारके काम पड़ते हैं । ऐसी ऐसी मिलाव और भूलके कारण कबीरपंथी साहित्यकी निन्दा होती है। किन्तु बुद्धिमानों को विचार पूर्वकही उसे ग्रहण त्याग करना चाहिये ।

मन में शाह तब ऐसा जाना । यह दुर्वेश है खुदा समाना ॥
बार बार मोहि आनि चिताई । सोइ दुर्वेश आप है साँई ॥
तब अपने दिल कीन्ह विचारा । इनसे कारज होय हमारा ॥
जो यह कहे सोई चित दीजे । इनका वचन मान शिर लीजे ॥
इतना शाह मन करत अन्देशा । नहिं वहँ कुत्ता नहिं दुर्वेशा ॥
तबहि शाह मन कीन विचारा । निश्चय है यह सिर्जन हारा ॥
साखी—कहे शाह अबकी मिले, पुरवे मनकी आस ॥
कदमें शिरै छुआवहूँ, पलक न छाड़ूँ पास ॥

चौपाई

बन ते शाह नगर में जाई । मन जिन्दा में रहा समाई ॥

जिन्दा वचन

गुप्त रूप तब शब्द उचारा । इब्राहिम सुनु वचन हमारा ॥
नाहक जिव तुम मारि उडाई । तैसा हाल तुम्हारा भाई ॥
जाहि समय इजरोइल[1] ऐहैं । महा भयंकर रूप दिखैहैं ॥
हनिहैं मुगदर धरिहैं चोटी । उठे अगिन तब बोटी बोटी ॥
ताहि समय पुनि करिहो रोरा । काम न आवे सेन करोरा ॥
मारत पंछी दरद न आई । एक दिन ऐसा तुम पर भाई ॥
बैन सुनत मुरछित मन माहीं । गुप्त भये पछताने ताहीं ॥
कहे शाह खोजो तेहि जायी । जिन ऐसी मुहि बात सुनायी ॥
खोजि थके पुनि मुहि नहिं पाये । मुरछित शाह भवन चलि आये ॥
तबहि शाह मन ज्ञान समाना । जिन्दा बचन सांच कर माना ॥
राज पाट सुख सम्पति देहा । यह सब दीखत स्वप्न सनेहा ॥
ज्ञान दृष्टि दिलमें जब आही । छोडेउ तख्त तबे बादशाही ॥

---

१ मुसलमानी धर्मके विश्वासके अनुसार इजराइल एक फिरिश्ता है जो सब प्राणियोंकि आत्माको शरीरसे अलग करता है तब मृत्यु होती है ।

होय फकीर जंगल कियो बासा । राज काज की छाडी आसा ॥
सबही लोग नगर के आये । आइ शाह के लागे पाये ॥
काजी वजीर औ शेखमुलाना । महन्त महावत नफर गुलामा ॥
लागे सबही शाह के पाई । सबहि मिलि के विन्ती लाई ॥
ऐसी बात न कीजे साई । तुम विन यह परजा दुःख पाई॥
जो तुम तख्त न बैठो राजा । सब परजा को होत अकाजा ॥
राजा से परजा सुख पावे । जहां तहां आनन्द रहावे ॥

सुलतान वचन

कहे सुलतान सुनो रे भाई । हमतो तख्त के निकट न जाई॥
ना हम पावँ तख्त पर लावें । ना अपने शिर भार चढावें ॥
अब हम तख्त न बैठें आई । बैठें तख्त सो नरकहिं जाई ॥
अब हम राज तजी बादशाही । यम की मार सही नहिं जाही ॥
भक्ति विना जिव मुक्ति न पावे । राज करे सो नरकहिं जावे ॥
हमको आज मिले यक साई । सो साहिब ऐसी फरमाई ॥
मैं अपराधी उन्हे न चीन्हा । अधविच छोडि सो मोको दीन्हा॥
अब हम करिहैं कौन उपाई । वह अवसर मुझको कब आई ॥

प्रजा वचन

प्रजा कहे सुनो हो साईं । अब तुम चलो महल के माईं॥
जो तुम राज छाडि बन जैहो । तो सब संग तुम्हारे ऐहों ॥
साखी–यहां रहन को छोडि के, तुम सँग करिहैं प्यान ॥
ऐसे वचन प्रजा कहि, लाये गृह सुलतान ॥

चौपाई

जब आये शाह महल मँझारा । उठी बिरह मन माहिं अपारा ॥
अबमैं किस विधि जिन्दा पाऊँ । उन बिनु होय न मोर बचाऊँ ॥
यह सब लोक अहै संसारा । नरक कुंड में डारनहारा ॥

ऐसी करुणा भयि दिल माहीं । जिन्दा महल मिले केहिं ठाहीं॥
भयी शाह मन विरह अपारा । जिन्दा जिन्दा करइ पुकारा ॥
साखी-उन मनमें मुझको मिले, नाम न दिया बताय ॥
ईब्राहीम सुलतानको, भयो मिलनको भाय ॥

चौपाई

मुर्छित शाह मन चलि आवा । मनमें जिन्दा आनि बसावा ॥
थोडे दिन विरहा अधिकाई । फिरतो धरम जाल फैलाई ॥
माहिं पुनि राज तहँ सुख पाये । माया मोह देखि ललचाये ॥
गया ज्ञान सुखे में लपटाना । काल शाह घट आनि समाना॥
उरझे शाह स्वाद सुख रंगा । देखि रंग मन बहुत उमंगा ॥
पुनि कछु दिवस जो ऐसे बीता ।बिसरे शाह अल्लाहकी चिन्ता ॥
ऐसी चाल देखि हम राही । राज न छोडे लोभ मनमाही ॥
तब हम रूप जो कीन खवासा । जेहि ते तख्त की छाडे आशा॥
जैसा जिव तैसा तन धारा । कोइ विधि जिय उताहूँ पारा ॥
चतुर सहेली रूप अपारा । शोभा अंग अंग अधिकारा॥
होय खवास बागमें जायी । फूल लाय रचि सेज बिछायी ॥
बहु विधि फूलन सेज बिछावें । जहां शाह पौढन निज जावें॥
ऐसहि करत बहुत दिन गयऊ । तब हम एक अचम्भा कियऊ॥
एक दिवस चित ऐसी आयी । ताहि सेज हम पौढे जायी ॥
रूप खवासिन तहँ हम कीन्हा । घडी एक पौढी सुख लीन्हा ॥
आये महल सेज ढिग शाहा । पौढि सहेली करे सुखलाहा ॥
इब्राहीम देखत रिसियाना । मनमाहीं बहुते खिसिआना ॥
हमरी सेज आई पौढाना । हमरी त्राम तनिक नहिं माना॥
हांक मारि तिहि टेरि जगायी । देखत शाह मन क्रोध समाई ॥
शाह कहे क्यों पौढी नारी । बढचो क्रोध तब ताजन मारी॥

*छन्द—हुकुम कीन शाह तन छीन लाव ताजन मारिये ॥
ताहि पीछे शीश उतारो पकडि भुजा फटकारिये ॥
मारन लागेउ शाह तेही खन हम कौतुक कीन्हे ॥
हँसी सहेली रोवे नहीं त्रास अतिशय तेहि दीन्हे ॥
सोरठा—बूझे तेहि सुलतान, मैं मारी तैं क्यों हँसी ॥
कहो साँची सहि दान, कहो सत ना कुम्हलाय मुख ॥

चौपाई

बहुत क्रोध करि मारा जबही । बहुतै हँसी सहेली तबही ॥
हँसत सुलतान अचम्भा कीना । निकट बुलाय पूछि तब लीना ॥
निकट बुलाय आप सुलताना । बखश्यो चूक कर्‌यो जिवदाना ॥

सुलतान वचन

यह तुम मोहि कहो समझायी । मारत तोहि हँसी क्यों आयी ॥
सच सच बात कहो निःशंका । तुमतो जनि मानो हमारी शंका ॥

सहेलीवचन—चौपाई

तबहि सहेली करे बखाना । सुनो शाह तुम चतुर सुजाना ॥
एक घडी सुख हम जो लीना । ता कारण इतना दुःख दीना ॥

---

* इस छन्द और उसके नीचेके सोरठाका पुरानी प्रतियोंमें गन्ध भी नहीं है । बरन् आगेसे जो चौपाई चली हैं उसका ऊपरकी चौपाईके साथ सम्बन्ध है । यह छन्द और सोरठा किसी महात्माने वैरागके जोशमें आकर लिखमारा है किन्तु कविताकी कैसी मिट्टी खराबकी है उसकी बात पाठक छन्द और सोरठासे समझ जायँगे । देखिये सोरठाके प्रथम दोनों चरण तेरह २ मात्रासे पूर्ण हैं और तीसरे चरणमें भी १३ मात्रा हैं और चौथेमें पन्द्रह । कहाँ तक कहें इसी प्रकारसे उत्तरोत्तर भट्टाचार्य्योंने ग्रन्थोंके बिगाडनेमें ऐसा भाग लिया है कि; जिससे कबीरपन्थकी साहित्य मृतप्राय होरही है । मुझे सब ग्रन्थोंके शोधनेमें कैसी २ कठिनाइयाँ उठानी पडती है मैं ही जानता हूँ तिसपर भी मुझे कहाँ तक सफलता हुई है पाठक स्वयम् समझ सकते हैं । वर्तमानमें यद्यपि कुछ कुछ विद्याकी ओर झुकाव कबीर पंथियोंकी हो रही है तथापि अभीतक दो चारी को छोड़कर कोई भी ऐसा कबीरपन्थी नहीं है जो अपना कलंक और अपना विचार कबीर साहब कबीरपन्थी साहित्यके वे मत्थे न थोपता हो ।

सदा सर्वदा जो सुख करई । तापर मार किती सो परई ॥
कहा करूँ मोहि रही न जायी । ता कारण मोहि हाँसी आयी॥
उमर भरे सुख कीना ऐसा । ताका हाल होयगा कैसा ॥
या कारण हँसी हम शाहा । कीजे जो तुम्हारे दिल चाहा॥
राज करइ बहुतै सुख पावे । तन छूटे चौरासी जावे ॥
चौराशीमें है कष्ट अपारा । बिना नाम नहिं होय उबारा ॥
आखिर खाक होय तन तेरा । वचन मानि ले यह अब मेरा ॥
कहा तख्त शज्या सुख पाओ । राह खुदा में चित्त लगाओ ॥
देह मिलेगी खाक तुम्हारी । चतुर सहेली कहे विचारी ॥
सांची राह गहो तुम शाहा । जन्म पाय कछु लागो लाहा ॥
सतगुरु मिले तो भेद बतावै । जाते जीव मुक्ति घर पावै ॥
तहां जाय जिव करे अनन्दा । जनम जनम का मिटे सब फन्दा॥
साखी *सद्गुरु भेद जो पावई, होय मुक्ति घर बास ॥
जन्म मरन फन्दा मिटे, तब सुख पावें दास ॥

चौपाई

वचन सुन्यो जब शाह सुजाना । तब कछु दिल में उपज्यो ज्ञाना॥
तेरा वचन सही सुनु नारी । सब सुख छाँड़ि अल्लाह चितधारी॥
शाह विचार कीन मन तबहीं । निकसि जाउँ जंगल बिच अबहीं॥
कहे सहेली सुनु सुलताना । दिलमें धरो अल्लाह को ध्याना॥
जंगल बडा जेरी जिन देही । हवा हिर्स तजु निज मति एही॥
नेकी करो बदी तुम छाँडो । दया मिहर दिल अपने माडो ॥
परमारथ पर सब कछु वारो । पाक जात अल्लाह चित धारो॥
सुनत वचन लागा चित घाऊ । शाह वचन सुनि लागे पाऊ ॥
कहे सहेली ज्ञान अपारा । जो दिल धरो तो उतरो पारा ॥

---

* यह साखी भी पुरानी प्रतियोंमें नहीं है ।

*सुनि कर शाह अचम्भा भयऊ। ऐसो वचन कबही नहिं कहेऊ ॥
भयो ज्ञान शाह सुनि वानी। काल कला फिर आनि समानी॥
अरुझे शाह स्वाद सुख पायी। भयो मगन मन अति ललचायी॥
साखी–सखी सहेली सँग लिये, करत रंग अरु राग ॥
बिसरे ज्ञान विचार सब, मोह बान उर लाग ॥

चौपाई

यक दिन शाह सेजहीं सोया। तोशक झूल बिछौना जोया ॥
देह उष्ण छेइ अवसर ताही। नींद न आवे बहुत सिसाही ॥
कोई सखि पंखा पवन ढुरावे। कोइ चन्दन घसि अङ्ग लगावे॥
तबहू नींद न आवे शाहा। बहु व्याकुल अति तन भइ दाहा॥
एक चरित्र तहां हम कीना। साखी रूप धरि दर्शन दीना ॥
सुबुधि सखी जोरे दोइ पाना। सुनिये एक अरज सुलताना ॥
कहूँ वचन परमारथ जानो। सुनत क्रोध दिल जो नहिं आनो॥
यह तन पाय बहुत सुख कीना। कबहू धनी नहीं दिल दीना ॥
जिन साहिब यह देह बनावा। तख्त सेज सुख राज करावा ॥
कोठा कोट अमीरी भारी। गज औ तुरंग हरष संग नारी॥
ऐसा साहिब क्यों विसराये। राग रंग चित अति हरषाये ॥
जब वह साहिब कोप कराई। तेहि समय को होय सहाई ॥
साखी–साहिब रीझे जेहि समय, देइ विहिश्त को वास ॥
मालिक मेटे पलक में, करइ राज सुख नाश ॥

चौपाई

आखिर देह मिलेगी खाका। साहिब नेह करि होऊ पाका ॥
बचन सुनत चित गहबर भयऊ। आंसु बहुत चक्षु ते गयऊ ॥

---

१ इस चौपाईसे लेकर आगे जिस चौपाईके अन्तमें इसी प्रकारका फूल दिया है वहां तक पुरानी प्रतियोंमें नहीं है।

तबहि शाह दिल अपने जाना । नारी में अस होय न ज्ञाना ॥
यह तो मुर्शिद मालिक मेरा । धरचो रूप इन नारी केरा ॥
तबहि शाह दिलमाहि बिचारा । हम कारण इन यह तन धारा॥
जो यह कहे मानि शिर लीजे । जाते कारज अपना कीजे ॥
अब मैं वचन मानि शिर लेऊँ । चरण कमल में मस्तक देऊँ ॥
हम पुनि गुप्त भये तेहि थाना । देखत शाह बहुत अकुलाना ॥
कहे शाह कही अस बाता ।घाव अचानक किये मुहि जाता॥
कछु दिन शाह विरहमें रहेऊ ।बहुरि शाह दिल मोह सो गहेऊ॥
तब दिन एक श्वान यक आवा । जाके शीस माहि बड घावा ॥
कीन माथ देह भरि जाही ।कल बल करि व्याकुल तनताही॥
श्वान बिकल डोले चहुँ ओरा । आयो शाह ढिग तबही दोरा॥
सखी सहेली मारन धायी । शाह श्वान कहँ लीन बुलायी॥
कहे श्वान सुनु शाह सुजाना । हमहूँ रहे बडे सुलताना ॥
सुख सम्पति पुनि तिरियारंगा । जीव सतावे बहुत अस अंगा॥
सोना रूप कटक गज बाजा ।अंत समय कोइ आवे न काजा॥
साखी–मातु पिता सुत बाँधव, औरौ दुलहिन नारि ।
अंत समय सब बिछुरई,यह शोभा दिन चारि ॥

चौपाई

प्यासे जल नागे पट दीजै । भूके नाज मिहर दिल कीजै ॥
जैसी परी आप कहँ जानो । तैसी सकल जीव पहिचानो ॥
हवा हिर्स तन साधो भाई । साधो पीर मिटै दुचिताई ॥
इतना कही श्वान उठि धाया । सखी सहेली मोह लगाया ॥
पुनि हम कहा गैब की बानी । सुनहि शाह सह सखी सयानी ॥

आकाश बानी

यह नर नरकहि फेर बनाया । तुम तो बहुत नरक मन लाया॥
सखी सहेली काम न आवे । जबही धरि यम आनि सतावे॥

तात मात सुत नारि खजाना । काम न आवे सब बिलगाना ॥
झूँठे करें खुशामद तेरा । बांधे यम तब देख घमेरा ॥
उठि अकुलाय शाह चित लागा । देखे नहीं उपजे अनुरागा ॥
दया मिहर घट आन समाना । छोडे जीव घात अभिमाना ॥
पीर शाह के घटहि समायी । भूखे नंगे सब दीन बुलायी ॥
मनमां कहे करो सो पीरा । जिन दिन्ह मोही चेत शरीरा ॥
प्रेमविरह निशिदिन चित लागा । अहक नाम सुमिरन अनुरागा ॥
जेहि दिवस छूटे मम जामा । झूठा सुख नहि आवे कामा ॥
यक दिन शाह किये अशवारी । बलख शहर देखा निरुवारी ॥
कहवाँ देखों पीर सुजाना । जिन मुहि कहा भेद निर्वाना ॥
डेरा सहित सखी रंग सैना । चले बेगि चित नाहिं न चैना ॥
बैठा एक ऊँट तजि प्राना । पहुँचे आप तहाँ सुलताना ॥
देखि ऊँट दिल भये उदासा । रोवे बहुत विकल धरि स्वासा ॥
ऐसी गति यक दिवस हमारी । अपने मन में यही विचारी ॥
माया मोह अहे जंजाला । दिना चार का झूठा ख्याला ॥
इब्राहीम कह्यो गोहराई । जाहु सबैं अपने घर भाई ॥

* छंद—गजसे उतरी ठाढे भये सब दिये भूषण डारिहो ॥
चोला पहिर शिर ताज दे तब चले निर्धार हो ॥
सेना सकल विलखित वदन सब कन्हीं शोर सहेलियाँ ॥
मम खबर लय को सखी शिर कूटि मरहिं सहेलियाँ ॥

सोरठा—घेरि राह सब लोग, कोइ न छोडहिं शाहको ॥
ऐसे सबको सोग, पुत्र मरे जिमि विकल जग ॥

---

* पुरानी प्रतियोंमें समस्त ग्रन्थभरमें छन्दका गन्ध भी नहीं है किन्तु नयी प्रतियोंमें ये बेतुकी छन्द कई मिलते हैं। इसी प्रकारसे कई सोरठे और दोहे (साखी) को भी पाया है। पुरानी प्रतियोंमें तो यह है ही नहीं हैं किन्तु नई प्रतियोंमें एकदम बेतुक हैं।

छन्द-कहे शाहको समझ दिल हमरी खबर को लेइगा ॥
सब माहि दाता सबनको सो सबन भक्षण देइगा ॥
मां के रहे शिकेम[1] में तहाँ को खबर जग लेत है ॥
जल थल है घट सकल पूरण जो जहाँ तहँ देत है ॥
सोरठा[2]-साझ कहे भोरे एक हन, सुनत दिन बीति गये ॥
शाह दिये नहिं चैन, पिछले पहर उठि चले ॥

चौपाई

निकलत शाह कोइ नहिं जाना । उठि चल्यो जंगल कहँ सुलताना॥
नंगे पावँ पनही नहिं लीना । ऐसे शाह धनी दिल दीना ॥
स्वाद सलाह तजी सुख गेहा । राजपाट जान्यो सब खेहा ॥
साखी[2]-सोलहसे सहेलियाँ, तुरी अठारह लख ॥
साईं तेरे कारणे, छोडा शहरबलख ॥

चौपाई

सकल छोडि के भये फकीरा । लागे विरह बान गंभीरा ॥
पिव कारण तज्यो सब आशा । जगत नेह तजि भये उदासा ॥
शाह निपट बहुतहि सुकुमारा । तिन सुख तजि गह्यो दुःखपारा॥
क्षुधा लगे कोइ जांचे नाहीं । गहि संतोष रहे मन माहीं ॥
छन्द-पाँव छाले पडि गये चलि पंथ पग थहरावई ॥
कोइ संग आगे पाछे नाहीं धूप लगे कुम्हलावई ॥
अन्न विना दिन तीन बीते हरष शोक नहिं चित गहे ॥
शाह निशि दिन अति विरागी नाम अविचल पद चहे ॥

---

१ पेट । २ वर्तमानके अथवा इसके थोडे दिन प्रथमके परम भक्त महात्माओंके विद्वताके नमूनेके लिये यह सोरठा जैसाका तैसा रक्खा है।

२ पुरानी प्रतियोंमें इसी साखीसे पुस्तककी समाप्ति होती है किन्तु इसके प्रथम बहुत कुछ विषय है सो इस पुस्तकमें आगे आवेगा इस नोटमें इस विषयमें विशेष नहीं लिखा जा सकाता ग्रन्थके अन्तमें "ग्रन्थ विवेचन" नामक हैडिंगके नीचे लिखा जायगा।

सोरठा–तब साहब कछु दीन, रूखा सूखा टूकडा ॥
शीस नायके लीन, खरी कसौटी नामकी ॥

चौपाई

कछु भायो कछु औरहि दीना । मनमें नाहिं गुनावन कीना ॥
जो मुख पांचो अमृत पावत । सो मुख सूखा टुकडा खावत ॥
आसन वासन अभूषण नाना । सो सब तजे भूरि मनमाना ॥
जेहि लागी तिन ऐसी कीन्हा । कहे कबीर प्रेम मन चीन्हा ॥
प्रेम गली अति सांकरि भाई । राई दशवां भाग रहाई ॥
मनअहि रावत किस विधि जावे । विरले सत कोइ मारग पावे ॥

साखी–प्रेम बन्ध अति दुर्लभ, सब कोइ सके न जाय ॥
चढना मोम तुरंग पर, चलना पावक माय ॥

छन्द–मिही सुई को नाको जिमि तिमि इश्क मारग ठानिया ॥
ताही ते कोउ झीनि होइ के प्रेम अगम गम जानिया ॥
जिन करि फना मरो आपको सो लहें सुखको धामहो ॥
कहें कबीर आप जहां तहां नहिं मिलत अराम हो ॥

सोरठा–मन महँ शाह उदास, कबहुंक दरश मैं पाइहौ ॥
पुरवहिं मोरी आस, प्रगट रूप जब देखिहौं ॥

जबहि शाह घट विरह समायी । दोय कर जोरिके बिन्ती लायी ॥
दीन दयाल दया अब कीजे । अपना दर्शन मोको दीजे ॥
शब्द स्वरूप रहिरूप छिपाओ । प्रकटरूप मुहिदरश दिखाओ ॥
जब हम लगन शाह घट चीन्हा । तब हम रूप प्रकट तहँ कीन्हा ॥

धन्यो स्वरूप अंग उजियारा। जगमग ज्योति तेज चमकारा॥
उठत सुगन्ध अंग बहुताई। परिमल वास महेके सब ठाई॥
बहुत कान्ति दीसे उजियारा। देखि शाह भये हर्ष अपारा॥
तबही शाह चरण लपटाये। दोइ कर जोरिके विन्ती लाये॥
धन्य भाग मुहि दर्शन दीना। पतित जीव पावन करि लीना॥
लगे शाह सतगुरु के चरना। अब मुहि राखो साहब शरना॥
धन्य धन्य तुम आपु गुसाई। आपन भेद कहो समझाई॥
कहँ तुम रहो कहांते आये। वह सब गम्य कहो समझाये॥
साहिब अपना नाम बताओ। अपना जानि जीव मुकताओ॥
अबतो यह कला जानि हम पायी। साहिब हमको दरश दिखाई॥
तुम बिनु दया करे को ऐसा। जनम मरनका मेटे संसा॥
अब मुहिमुर्शिद भेद बताओ। तुम साहिब हम बन्दा आओ॥

कबीर वचन

कहे कबीर सुनो चित लाये। अमर लोकते हम चलि आये॥
नाम कबीर हमारा होई। हंस उबारन आये सोई॥

चौपाई

कहै सहेली ज्ञान अपारा। जो दिल धारो सो उतरो पारा॥
तबै शाह दिल अपने आना। नारीमें अस होय न ज्ञाना॥
यह तो है कुछ साहिब मेरा। धरा रूप इन ख्वासिन केरा॥
तबे शाह दिल माहिं विचारा। हम कारन इतना तन धारा॥
जो यह कहै मानि सो लीजै। जाते काज आपनो कीजै॥
जो मैं वचन मानि शिर लेऊं। चरण कमलमें मस्तक देऊं॥
जबै शाह घट प्रेम समायी। दोय कर जोरि उन विन्ती लायी॥
धन्य भाग मुहि दर्शन दीना। पतित जीव पावन करि लीना॥
शाह लगे सतगुरुके चरना। अब मुहि साहिब राखो शरना॥
दीन दयाल दया अब कीजे। अपना दर्शन मोकहूं दीजे॥
नारि रूप तुम लेहु छिपायी। पुरुष रूप धरि दरश दिखायी॥
इसके आगे जो पुरानी प्रतियों में आयी है सो यहाँ भी वही बात आयी है।

जो जिव माने शब्द हमारा। सो जिव उतरे भौजल पारा ॥
तबही शाह भये आधीना। शिर लेइ चरण कमल में दीना ॥
चरण पखारि चरणामृत लीन्हा। प्रेम भाव सतगुरु कहँ चीन्हा ॥

सुलतान वचन

अब कीजे मम साहिब काजा। जाते नहिं छेडे यम राजा ॥
सोई नाम मुहि देहु बतायी। जाते जीव अमर घर पायी ॥

कबीर वचन

कहें कबीर मुक्ति तब पावे। सुरति निरति ले शब्द समावे ॥
उन्मुनि ध्यान रहो लौ लाई। अजपा जपो सदा दिल भाई ॥
निशि दिन मनुवा अस्थिर राखो। नाम अमीरस रसना चाखो ॥
नाम प्रताप मुक्ति जिव पावे। जनम मरणको दुःख मिटावे ॥
गहो नाम सत्य लोक सिधावो। तहां जाय बहुते सुख पावो ॥
वहि घर हंसा करई आनन्दा। काटे कर्म कालको फन्दा ॥
बहुविधि शोभा रूप अनूपा। षोडश रवि सो हँसको रूपा ॥
किया चहो तुम अपनो काजो ❋। यम तृण तोरि आरती साजो ॥
सहज चौका करि दीनो पाना। यमका बन्धन हृदय उठाना ॥
अमर अंक जो परवाना पावे। काल कला तजि लोक सिधावे ॥
प्रथम पान परवाना लेई। पीछे सार शब्द तेहि देई ॥
तब सतगुरुने अलख लखाया। करि परतीत परम पद पाया ॥
ऐसी रहनी गहे जो कोई। सत गुरु पद पावे नर सोई ॥
तन मन धनका मोह बिसारे। सो हंसा सत्य लोक सिधारे ॥
सोरठा—शाह किये तन खाक, अपने पिव के कारने ॥
खाक मिली भये पाक, आदमते भये औलिया ॥

❋ इस आधी चौपाई तक तो पुरानी प्रतिके अनुसार है। इसके प्रथम जो गडबड है वह वहीं टिप्पणियों द्वारा दिखलायी चुका हूँ । अब यहांसे जो गडबड है सो नवीन प्रति की पंक्ति पूरी हो जानेपर ऐसी फूटके चिन्हके साथ उसे भी देदूंगा।

सुनो धर्मदास सुजान, शाह भये जीवन मुक्त ॥
पद पाये निर्वान, शब्द परखि करनी किये ॥

चौपाई

धरमदास चित अति हर्षाये । प्रभुलीला तुव वरणि न जाये ॥
शाह काज धारे प्रभु रूपा । सखी नाम धर कला अनूपा ॥
अमितकला जीवन सुख दाता । भव बूडत राखे शठ त्राता ॥
अधम उधारण नाम तुम्हारा । बहुत जीव कीने भव पारा ॥
महा नेह तुव चरण लगावा । यश रह्यो और परम पद पावा॥
साखी-सत्य कबीर समरथ धनी, दोऊ दीन के ईश ॥
सुयश सुन्यो सुलतान को, धर्मनि नायो शीश ॥

नवीन प्रतियोंमें पुस्तक यहां आकर समाप्त होती है किन्तु पुरानी प्रतियोंमें ७३२-२८ पृष्ठके पंक्ति की आधी चौपाई " किया चहो तुम आपनो काजो" के आगे की वाणी उपर्युक्त नवीन प्रतिसे एकदम विरुद्ध नीचे लिखे अनुसार है ।

और नवीन प्रतिसे पुरानी प्रतिके अंतके एक समान न मिलनेका कारण उसे पृष्ठकी टिप्पणीमें दे दिया है । और विशेष वृत्तान्त पुस्तककी समाप्तिमें देंगे ।

चौपाई

किया चाहो तुम आपना काजू । तुम्हारो राज छोडिदो आजू ॥
सतगुरु नाम गहो विश्वासा । जाते मिटत कालको त्रासा ॥
यहि सुनि शाह तख्त तब छाडा । प्रकटे ज्ञान हिया गुण बाडा ॥
तब सतगुरुने अलख लखाया । करी प्रतीति परम पद पाया ॥
साखी-सोलह से सहेलियां, तुरी अठारह लख ।
साई केरे कारणे, छोडा शहरबलख ॥

इति

यह साखी एक स्थान में और भी आयी है ।

ग्रन्थ विवेचन

इस ग्रंथकी कई प्रतियाँ मेरे पास उपस्थित हैं जिनमेंसे कोई पुरानी सौ वर्षसे अधिक की लिखी हुई भी हैं किन्तु पुरानी प्रति की अपेक्षा उत्तरोत्तर २ जैसे २ नवीन पुस्तक लिखी गयी है सबमें कुछ वृद्धि और प्रसंगका उलट फेर और छन्दोभंग का समावेश होता गया है नवीन प्रतियोंके अन्तमें कई पुस्तकोंमें किसी किसी महात्माओंने अपना नाम लिखकर अपने को पुस्तकका कर्ता सिद्ध करना चाहा है। चाहा तो सब कुछ है किन्तु लिखते लिखते दोहा और सोरठा भी शुद्ध नहीं लिख सके हैं। सबसे जो पुरानी प्रति मेरे पास मौजूद है वह नवीन सब प्रतियोंसे अधिक शुद्ध और छोटी है और उसका आरम्भ भी "बलख शहर एक अनूपा" से होता है ठीक उसके उल्टा नवीन प्रतियोंका आरम्भ "धर्मदास उठि विन्ती लाई" से होता है। इसी प्रकारसे पुरानी प्रतियोंकी अपेक्षा नवीन प्रतियों के मध्य मध्यमें अधिक कथाएँ इतनी मिलाई गयी हैं कि, पुस्तक डेवढी हो गयी है। इतनीही नहीं है कि विषय बढाया गया है किन्तु साथ ही साथ थोडे २ वचन किसीमें एक दोहा किसीमें एक छन्द (जो सब अशुद्ध हैं) बढाकर बढाने वाले महाशय ग्रन्थके कर्ता बन गये हैं यद्यपि मैंने इस पुस्तक को सब प्रतियोंके अनुसार ठीक कर दिया है तथापि जहां २ विषयों को उलट फेर अथवा घटाव बढ़ाव हुआ है वहां टिप्पणी देदी है। इस ग्रन्थकी पुरानी प्रतिमें कबीर पंथकी अन्य ग्रंथों के समान किसी कर्ताका नाम तो है नहीं किन्तु नवीन प्रतियोंमें कई कर्ताओंका नाम इससे किसी एक कर्ताका नाम निश्चय करनेमें अशक्ति होकर मैंने किसीका नाम

नहीं दिया है और यथार्थ में हैही यही बात कि कबीरपंथ की जैसी और पुस्तकोंमें कर्ताका नाम नहीं है किन्तु वह कबीरपंथी पुस्तक कहलाती है और कबीर साहब तथा धर्मदास साहबके सम्बादमें लिखी गयी हैं ॥

इस पुस्तकके अतिरिक्त और भी निर्भयज्ञान आदि अनेक पुस्तकोंमें सुलतान इब्राहीम अद्धमके विषयमें बहुत कुछ बात आयी है जिनमें परस्पर बहुतही भेद हैं और कितने विषय ऐसे हैं जो एकमें हैं और दूसरेमें नहीं हैं। इस कारण शाह इब्राहीम अद्धम साहेबका वृत्तान्त गद्यमें संक्षेप लिख देता हूँ क्योंकि विस्तारसे लिखनेके लिये एक स्वतंत्र पुस्तक लिखनेका विचार है।

सुलतान शाह इब्राहीम अद्धम साहिबका संक्षेप चरित्र

उत्पत्ति

इस सुलतान इब्राहीम शाहके पिताका नाम अद्धम शाह था। आप संसार त्यागी फकीर थे। अपनी फकीरी और तपस्यामें पूरे थे। वस्तीसे सदा अलग रहते थे। प्रारब्धसे जो कन्द, मूल, फल अथवा नाज मिल जाता था उसी पर अपना समय बिताते थे किन्तु कभी एक स्थानमें जमकर नहीं रहते थे। कभी उनने घर नहीं बांधा। कहा भी है कि,

साखी–बहता पानी निर्मला, बन्धा गन्दा होय।
साधू जन रमते भले, दाग न लागे कोय॥

कुछ समय तक तो ऐसेही निःसंग फिरते रहे। फिरते फिरते एक बार बलख शहरमें पहुंचे। ठहरनेके लिये तो शहरसे दूर उन्होंने जंगलमें निश्चय किया किन्तु नित्य शहरमें फिरनेके

लिये जाया करते। एक दिन संयोगसे बलखके बादशाहकी लड़-की को देख लिया। अब तो ज्ञान ध्यान सब वैरागभूल गया। उस शाहजादी पर उनका मन ऐसा आसक्त हुआ कि, उसीके विरहमें दिन रात फिरने लगे। अन्तमें उसके मिलनेका कोई उपाय न देखकर स्वयम् उन्होंने बादशाहके पास जाकर अपने विवाहके लिये प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना को सुनकर बादशाह तो सन्न होगया। वह शोचने लगा कि, ऐसे फ़कीर भीख मांगतेको कन्या देकर उसे दुखसागरमें डुबाना है। बादशाहने ऐसा मनही मन विचार तो किया किन्तु आस्तिक होनेके कारणसे दुर्वेशकी बद-दुआ (शाप) से डरकर कुछ बोल नहीं सका और उसने दूसरे दिन फिर उन्हें आनेको कहा। उनके चले जानेपर बादशाह और वजीरने परस्पर विचार करके अद्धमशाहको टाल देनेका उपाय निश्चय किया और जब नियत समय पर अद्धमशाह बादशाहके पास पहुँचे तब वजीरने उनसे कहा कि, शाहजादीने अपने वि-वाहके लिये यह प्रतिज्ञा की है कि, नमूनेके अनुसार जो कोई दूसरा मोती ले आवेगा उसीके साथ वह ब्याह करेगी। अद्धम-शाहने वजीरको बहुत कुछ समझाया बुझाया गिडगिडाये रोये कल्पे किन्तु वजीरने एक भी न मानी। अन्तमें वजीरसे शपथ पूर्वक वचन लेकर वह मोतीकी खोज करनेको निकले और दो वर्षतक देश २ नगर २ ग्राम २ भटकते फिरे अन्तमें यह सुनकर कि मोती खारे समुद्रमें उत्पन्न होता है खारे समुद्रके किनारे पहुँचे वहां पहुँचकर उन्होंने अपने खप्परसे पानी भरकर रेतमें फेंकना आरम्भ किया, इस प्रकारसे पानी फेंकते फेंकते जब उन्हें चालीस दिन बीतगये तब परम दयालु सत्यपुरुषकी आज्ञासे सद्गुरु उनके निकट समुद्रतटपर पहुँचे। वहां पहुँचकर सद्गुरुने अद्धमशाहसे पूछा कि,

हे भाई! तू यह क्या कर रहा है? समुद्रके पानीको उचलनेसे तुझे क्या लाभ है? अद्धमशाह तो अपने काममें ऐसे मग्न थे कि, उन्हें कुछभी सुधि नहीं हुई कि, कौन मुझसे क्या पूछता है। जब सद्‌गुरुने कई बार पूछा और निकट जाकर उन्हें सचेत करके कहा कि, तुझे जो चाहिये मुझसे कह तेरेही लिये सत्य-पुरुषने मुझे तेरे पास भेजा है। सद्‌गुरुकी इतनी बातको सुनकर अद्धमशाहको कुछ चेत हुआ और उन्होंने अपना सब वृतान्त आदिसे अन्त तक सुनाकर सद्‌गुरुसे कहा कि, यदि सत्यपुरुषने कृपा की है और आप मेरे दुःखको दूर करने के लिये आये हैं तब मुझको वैसाही मोती जैसा शाहजादीने मांगा है दीजिये। अद्धम-शाहकी ऐसी इच्छाको सुनकर सद्‌गुरुने उन्हें समझाया कि, तू सच्चे साहिबका भजन कर जिसने तुझे और शाहजादी दोनोंको उत्पन्न किया है। सद्‌गुरुने बहुत कुछ ज्ञान और विवेक वैरागका अद्धमशाहको उपदेश किया किन्तु उन्होंने एक भी नहीं माना वरन उलटकर उन ने उत्तर दिया कि, मैं तो मोतीका मिलना और शाहजादीसे विवाह करनाही परम भजन समझता हूँ मुझे दूसरेसे कुछ सम्बंध नहीं है"?

फिर सद्‌गुरुने कहा समुद्रका पानी तू क्यों उचलता है? तब अद्धमशाहने उत्तर दिया कि, इसी प्रकार से उचलते उच-लते समुद्रको सुखा दूँगा और समुद्रके सूखनेपर मोती लेकर जाऊंगा तब शाहजादीसे विवाह करूंगा। सद्‌गुरुने हंसकर कहा कि, भला यह कब सम्भव है कि, तेरे उचलनेसे समुद्र सूख जाय और तू मोती पावे अद्धमशाहने उत्तर दिया कि, समुद्र सूखे या न सूखे जबतक दममें दम है तबतक मैं अपने कामसे

पीछा न फिरूंगा। इतना कहकर उसने कहा यदि सत्य-पुरुषने आपको मेरा दुख दूर करनेको भेजा है तो आप मुझे उसीजोडके मोती दीजिये। जब सद्गुरुने देखा कि, अद्धमशाह अपने निश्चयसे नहीं टलता है और उसको मोतीके सिवाय दूसरा कुछ नहीं सूझता है तब सद्गुरुने कहा कि, हे अद्धमशाह ! आंख बन्द कर। सद्गुरु की आज्ञाको पाकर अद्धमशाह आंख बन्द करके अन्तरमें सदगुरुका ध्यान करने लगे। उधर तो वह ध्यानमें मस्त थे इधर सद्गुरुकी आज्ञा पाकर समुद्र लहर मारा और हजारों सीप रेतमें डाल गया। लहरके हट जानेपर जब अद्धमशाहने आंख खोली तब क्या देखा कि, सहस्रों मोतीके सीपोंका ढेर लगा है मोतियों का ढेर तो पड़ा है किन्तु सद्गुरुका पता नहीं है फिर तो अद्धमशाहने मोती देखना आरम्भ किया। देखते २ वह ऐसे आश्चर्यमें फंसे कि, उन्हें यह निश्चय करना कठिन होगया कि, किसको लेवें और किसको न लेवें। अन्तमें चालीस बडे २ मोती चुनकर अपने कमरमें रक्षापूर्वक बांधकर रवाना हुए। चलते २ कुछ दिनोंमें जब बलखमें पहुँचे तब सीधे धडधडाते हुए बादशाहकी कचहरीमें पहुंचे। उस समय बादशाहकी कचहरी लगी हुई थी इनके पहुंच-तेही बादशाह और वजीर दोनोंकी दृष्टि उनपर पड़ी। देखतेही वजीर आग बगोला बन गया। वजीरके क्रोध करनेका कारण यह था कि, जिस समय अद्धमशाह और वजीरसे इस बात की प्रतिज्ञा हुई थी कि मोती लेकर आनेपर शाहजादीसे उनका विवाह करा दिया जायगा उसी समय वजीरने अद्धमशाहसे ऐसी प्रतिज्ञा ली थी कि, यदि मोती तुम न ला सको तो बलख शहरमें फिर

दुबारा नहीं आना । और यदि आओ तो तुम्हारी गर्दन मारी जाय । वजीरको अद्धमशाहसे ऐसी प्रतिज्ञा लेनेका यह आशय था कि; अद्धमशाहको जैसे फकीरको न मोती मिलेगा न वह फिर आयगा और न उसका विवाह शाहजादीसे होगा । यही कारण था कि, अद्धमशाहको देखतेही वजीरने क्रोध करके कहा कि, ओ अद्धम ! तू अपनी प्रतिज्ञाको भूल कर फिर यहां आया है ? इस कारण प्रतिज्ञाके अनुसार तेरा शिर धड़से अलग किया जायगा । वजीरके अहंकार भरे वचनको सुनकर अद्धमशाहने कहा ओ बेखबर तुझे क्या खबर है कि, प्रभुने तेरे नमूनेके मोतीसे भी बढकर बहुमूल्य इतने मोती मुझको दिये हैं कि, जितना तेरे संकल्प में भी नहीं आ सकता है । प्रभुने तो बहुत दिये थे किन्तु मैंने चालीस चुनकर ले लिये हैं । अद्धमशाहने इतना कहकर अपनी झोलीसे चालीसों मोती निकालकर बादशाहके मसनदपर गिनके पंक्ति लगाकर रख दिये । मोतियोंके निकलतेही चारों ओर उसका प्रकाश फैल गया । जौहरियों और परखियोंसे आश्चर्यमें आकर अबाक रहने के अतिरिक्त कुछ न बन पडा । बादशाहकी तो बुद्धिही ठिकाने न रही वह शोचने लगा कि, अब तो अवश्य शाहजादीका विवाह इसके साथ करदेना पडेगा । अन्तमें बादशाहने तो यह निश्चय किया कि, अब शाहजादी का विवाह उसी फकीरसे कर देना अच्छा है किन्तु राजदर्बार का काम है । राजनीतिके नियमानुसार बादशाह एकान्तमें जाकर अपने वजीर और–परिवारोंसे इस विषयमें विचार करने लगा कि, शाहजादीको अद्धमशाहसे विवाहना चाहिये कि नहीं, उस समय उसी वजीरने जिसने प्रथम बार प्रतिज्ञा कराकर अद्धमशाहको मोती लानेके लिये भेजा था उस

समय भी विघ्न डालने के लिये कहना आरम्भ किया।

पूछी फिर शाहने वजीरोंसे सलाह।
सब सागीरों कबीरोंसे सलाह॥
जो कि औवलमें हुआ था नेशजन।
फिर हुआ इस प्रकार वह बेखकुन॥
उक्दसे माना हुआ फिर वह वजीर।
क्योंकि था हर अमरमें शाहका मशीर॥
हीला व हुज्जत ब्याँ करने लगा।
नुक्ता औ ऐब उनके अयाँ करने लगा॥
कुबह कुछ उसने किये ऐसे बयाँ।
होगया खामोश वह शाहे जहाँ॥

उस वजीरने फित्ने जो गेफिर कहा। आपघरमें हूजियेरोनकाफिजा।
अहदओपैमाँमुझसेहैदुवेंशका । आपअन्देशानकीजेकुछजरा।
सौंपिये यह काम मेरीरायपर। लाइये दिलमेंनकुछखौफोखतर।
यादराखियेआपयहमेरीहदीस । इसकेहैताबाकोईजिन्नेखबीज।
कअरसेदरियाके गोता मारकर। लादियेहैं उसने यह नादिरगोहर।
यहकरामतपरनहींइसकी दलील। हैबनावटइसकी ऐशाहेजलील।
ऐसे मरवादीदवरनःयह फकीर । लाताक्योंकरऐशहेआफाकागीर
हैनजरबन्दोमें भी यह दस्तगाह। गुर्देःनानको बना देते हैं माह।
योंकियाहै इसने यह मकरोदगल। पासइसके हैकोईसिफलीअमल।
संगरे जाजिससेआतेहों नजर । खल्ककीआँखोंमेंताविन्दःगोहर॥
यह जोयोंरोशनतरअज खुर्शेदहैं। यह बनावटहीके मरवारीद हैं॥
मोतियोंमेंयहदरखशानीकहाँ । यह चमक यह नूरअफशानीकहाँ॥
अबकुछइसकोनसमझेजन्नबद । नूरताविन्दःहैमर्दुमकीखेरद॥
मुझको आता है नजरउसनूरसे। मकरवहीलाइसगदाकादूरसे॥

सादिकोबरहकहैयहकौलेलबीव। हैंग्याने आदमी सिहरे अजीव॥
बादशाहसुनकरयहतकरीरेवजीर। होगयादामेतवहुममें असीर ॥
करकेआखिरकारतफवीजेवजीर। बादशाहघरमेंहुआरौनकपजीर॥
कह गया उससेकितूमुख्तारहै। नेकवबदकाइसकेतुझपरबारहै॥
लेकबदअहदी है इन्दुश्शाहबद। है नतीजा ऐ खेरदआगाहबद॥
किजियोकुछतदबीरऐसीवजीर। तंगजिससेहोनयहमर्देफकीर ॥
घरमेंअपनेबादशाहदाखिलहुआरहगयाउसकावजीरऔरवहगदा॥

इस प्रकारसे बादशाहको समझा बुझाकर वजीरने महलमें भेज दिया। अब अद्धमशाह और वजीर रह गये तब वजीरने अद्धमशाहसे कहा–

उसको धमकाकर लगा कहने वजीर।
क्या हुआ है तुझको ऐ मरद कफकीर॥

तूजो यों गुस्ताखेकरतोहकलाम। बरमलालेताहैशहजादीकानाम॥
तुझकोहकुछअक्कभी ऐ बेहया। शहजादीवहहै तूमुफलिस गदा॥
नाम शहजादीका गरतूने लिया। होगाहरहरबन्दतेराजुदा ॥
काटकर तेगोंसे मैं तेरी जुबाँ। दारपर खींचूँगा तुझको बेगुमाँ॥
जिस्तगर चाहे तो इश्तगफारकर। इसख्यालेखामसेअपने गुजर॥

वजीरकी धमकी और विश्वासघातकी बातको सुनकर अद्धमशाह बहुतही दुःखी हुए और फिर अपनेको सँभालकर वजीरसे कहने लगे–

जबसुनीअद्धमनेउसकीगुफ्तगू। बोलाऐबदअहदनासंजीदःखू॥
भूलताहै उसखुदायपाकको। जिसने यह रुत्बःदिया है खाकको॥
तूनेवहजामिनदियाथा दरम्याँ। जिससेकायमैंहजमीनोआसमाँ॥
आलिमोदामा व दारायजहाँ। कादिरे मुतलक शदे शाहनशाहाँ॥

क्या हुए वहअहदोंपैमा ऐ वजीर । कौलो एकरारेईमाँ ऐवजीर ॥
अहद करतेहैंवफाअपनाकरीम । फिज्ववदअहदीहेकिरदारेलईम॥
वक्तउसकागरमुझसेकरनानथा । अहदक्योंतूनेकियाऐबेवफा ॥

अद्धमशाहने वजीरसे कहा यदि तुझको अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनीही नहीं थी तो तूने मुझसे प्रतिज्ञा करके और मुझसे प्रतिज्ञा कराके दो वर्ष तक मुझे क्यों भटकाया । देख तूने ईश्वरको साक्षी रखकर प्रतिज्ञा की और करायी थी अब विश्वासघात मत कर इस विश्वासघातकाफल अच्छा न होगा । देख ! आज उच्च पदवी को पहुंचा है तो फकीरों और दीन दुखियोंको इस प्रकार दुःख देता है, विचार कर ! किसीका अभिमान आजतक नहीं रहा है। इस संसारमें आकर मायाके चमक दमकमें पडकर जिस जिसने गर्व किया है सबका गर्व टूटा है किसीका गर्व भी रहा नहीं है । अब तू विश्वासघात मत कर और जिस प्रकार मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है उसी प्रकार तू भी अपना वचन रख । इसी प्रकारसे परस्पर अनेक प्रकारकी नोक झोंककी बातें होनेके पश्चात् वजीर बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपने नौकरोंको आज्ञा दी कि, अद्धमशाहको इतना मारो कि, यह जीता न बचे। फिर क्या था वजीरकी आज्ञाको पाकर निर्दयी नौकर चारों ओरसे टूट पडे । किसी ने लकडी उठायी तो किसीने कोडा लिया । संक्षेपतः यह कि, जिसको जो मिला उसने वही ले लिया और चारों ओरसे अद्धमशाहके ऊपर मार पडने लगी । अन्तमें जब वह एकदम अचेत होगये श्वासोच्छ्वास की क्रिया रुक गयी जब मारनेवालोंने समझ लिया कि, वह मर गया है तब वजीरकी आज्ञासे बस्तीसे दूर जंगलमें डाल आये।

इधर अद्धमशाहकी यह गति हुई उधर बादशाहकी बेटीके

हृदयमें शूल उठा और उस दर्दने थोडीही देरमें ऐसा बल पकडा कि, हजारों वैद्य और उपाय करनेवालोंके रहते हुए भी शाहजादीको कुछ आराम नहीं हुआ। तीन चार घडीमें वह मर गयी। अब क्या था बलख शहर में हाहाकार मच गया। शोकने आकर समस्त नगर में निवास किया। यदि उस समयके शोकने शोका वर्णन लिखने लग जाऊं तो एक दूसरी और बडी पुस्तक बन जाये इस कारण संक्षेपमें लिखना यह है कि, बादशाहको सिवाय इस शाहजादीके दूसरी संतान न होने के कारण सर्वत्र शोकही शोक फैल गया। संक्षेपतः यह कि शाहजादी की मृतकको लेकर कब्रकी अन्तिम क्रिया करके सब लोग लौटकर चले आये।

इधर अद्धमशाहकी आयु शेष रहनेके कारण सद्गुरुकी कृपासे दिनभर अचेत पडे रहनेके पश्चात् दो घडी दिन रहते वह सचेत हुए सचेत होते ही शिर उठाकर देखा तो जंगलके सिवाय कुछ नहीं दीख पडा न तो शाही महल है, न वजीर कादर्बार, न उनके मोती। इस प्रकारसे चारों ओर शून्यही शून्य देख कर अद्धमशाह प्रथम तो आश्चर्यमें आये किन्तु उनका आश्चर्य जाता रहा और इश्कका जोश फिर अन्तःकरणमें उठा फिर तो अद्धमशाह सीधा शहरको पहुँचे। शहरमें पहुँचकर उनने चारों ओर शोक फैला हुआ देखकर जिससे पूछते वही कहता कि, शाहजादी मर गयी प्रथम तो उन्हें लोगोंके कहने का विश्वास नहीं हुआ किन्तु जब शाही महलके द्वारपर पहुँचे और वहां भी लोगोंको शोकमें विकल देखा और चारों ओरसे हाय ! हाय ! की ध्वनि सुनी तब उन्हें विश्वास हुआ कि, सचमुच शाहजादीका परलोकवास हो गया। इस बातके निश्चय होतेही उनके हृदयपर

ऐसा आघात लगा कि, जहां खडे थे वहाँ ही वह अचेत होकर गिर गये और उसी अवस्थामें उस समय तक पडे रहे जब तक बादशाह शाहजादी की अंतिम क्रिया करके कब्रस्थानसे फिर कर आये। बादशाहके कबरसे लौटकर एकबार फिर भी रोने पीटने और हाय बोय करनेकी वह धूम मची कि जिसका वर्णन करना कठिन है। उसी हाय बोय शोककी चिल्लाहटमें अद्धमशाहको चेत आया चेत आतेही उस समयकी सभा देखकर पागल विक्षिप्त चित्तके समान होकर वहाँसे वह चल पडे। एक तो अंधेरी रात दूसरे शोकसे कातर अद्धमशाह आधीरात तक तो जंगलमें इधर उधर भटकते औ ठोकर खाते रहे किन्तु आधीरातके पश्चात् प्रभु कृपासे भटकते २ शाही कब्रस्थानके निकट पहुँच गये। वहाँ जानेपर उनके हृदयको कुछ धैर्यसा हुआ और कुछ चेतना भी आयी फिर तो एक वृक्षकी आडमें खडे होकर उन्होंने कब्रके रक्षकोंको ध्यान पूर्वक देखना आरंभ किया। संयोगवश दिनभरके थके हुए पहरे वाले ऐसी निद्रामें अचेत हुए कि, उन्हें किसी बातकी सुधि न रही। पहरेवालोंको बेसुध देखकर इश्ककी तरंगमें एक ओरसे कनात फाड दिया और अन्दर पहुँचकर वह चोरोंके समान धीरे धीरे कबरतक पहुंचे। कब्रके निकट पहुंच कर वह प्रथम तो कब्रसे लपटकर थोडी देरके लिये अचेत होगये फिर चेत आनेपर उन्हें यह विचार आया कि, एकबार माशूकका दीदार कर लेना चाहिये। दीपक तो चारोंओर जलही रहे थे उसी प्रकाशमें उन्होंने कबरकी मिट्टी अलग करके ताबूतसे शाहजादीकी मृतक को बाहर निकाला और दीपकके सामने उसे लिटाकर उसके मुखको एकटक देखने लगे। देखते देखते उनके हृदयमें ऐसा तरंग उठा कि इसे अपने पर्णकुटीतक

लेजाना चाहिये। बस। फिर क्या था कब्रकी मिट्टीको ज्योंका त्यों करके वह शाहजादीकी लाश उठाकर अपनी कुटीपर पहुँचे सद्गुरुकी ऐसी कृपा हुई कि, जबतक यह अपनी कुटीतक नहीं पहुंच गये तबतक किसी पहरेदारने करवट भी नहीं ली। अद्धमशाहने अपनी कुटीमें शाहजादी की लाशको दीवारके सहारे बैठा दिया और जंगली लकडियोंको जलाकर उसीके प्रकाशमें उस मृतकको सम्बोधन करके कहने लगा।

होगयी आतश जब वहां शोआले जन।
बैठा उसके रूबरू यह खिस्तःतन॥
रोशनीमें आगके वह नीमजाँ।
देखता था हुस्न रूए दिलस्ताँ॥
बादिले पुरदर्द चश्मे अश्कबार।
देखता था उस परीरू की बहार॥
गोरे तनपर वह उसके पैठा कफन।
जामये शबनभमें गोया यासमन॥
चिहरेका आलम कफनमें जो कि था।
बिद कबदे चांदनीमें वह मजा॥
करके उसकी लाशको अद्धम खिताब।
यों लगा कहने जेराहे इजतराब॥
ऐबुते संगीं दिले ना आशना।
क्यों क्या मुझको बलामें मुबतिला?॥
क्योंकि दिखाकर दफतन अपनी फबन।
रंजमें डाला था ऐ नाजुक बदन॥
दर्द व गममें अपन करक मुबतला।
एक मुद्दत तक मुझे रुसवा कि किया॥

मुझमें क्यों चाहेथी वह नादिर गोहर।
दो बरसतक क्यों रखाथा बहू पर॥
अहद गर तुझको वफा करना न था।
मुझको जिन्दःछोडकर मरना न था॥
तुझमें कुछ बूए वफादारी नहीं।
यार होकर शवये यारी नहीं॥
तुझको गर दुनियांसे करना था सफर।
साथ लेना था मुझको ऐ सीम्बर॥
रूह तेरी बाद जन्नतको गयी।
देगयी इस रस्त जांको बेकली॥
हालकी मेरी खबर भी है तुझे।
कल नहीं पडती किसी करवट मुझे॥
बाग जन्नतमें किया तूने वतन।
मैं रहा बहरे अलम में गोते जन॥
हैफ़ है सद हैफ़ दीदारे हबीब।
बाद मरनेके हुआ मुझको नसीब॥
वाह ऐ चर्ख सितमगर वाहवाः।
तूने जालिम क्या सितम मुझपर किया॥
जीस्त में माना रहा दीदार से।
बाद मरनेके मिलाया यारसे॥
देखलेती यह भी मेरी बेकली।
जोबर आती सब तमन्नाये दिली॥
इसको भी शायद था कुछ मेरा कलक।
हो गयी जो दमके दम में जांबहक॥
खागयी इसको गमें पिनहानः इश्क।

आतशे उलफत तुफे सोजान इश्क ॥
कत्ल जालिम तूने दोनोंको किया ।
इस परी रूसे जुदा मुझको किया ॥
जान इसकी तो हुई तनसे बदर ।
जिन्दगी में मैं हूं मुर्दा से बतर ॥
यह तो मर कर हिज्रके गमसे छुटी ।
तलमलाहट मुझको है अबतक वही॥
वहशिया की तरह अपना माजरा ।
कह रहा था उस परीरू स गदा ॥
वा जबाने हाल तो देती जवाब ।
इश्क है आ सौ तरहके पेच ओ ताब॥
मुझसे अपने दर्द गम कहता है क्या।
मरगई मैं तूतो जिन्दा भी रहा ॥
इससे बरतर क्या है दर्द ओ रंज इश्क।
जीती मैंने बाजिये शतरंज इश्क ॥
जीको अपने करदिया उसमें फना ।
मुझसे तू कहता है क्या यह माजरा॥
देख कर अद्धम के यह रंजो महन ।
हो गया बहरे तरहुम मौजजन ॥
देख कर उस मर्दके दिलका कलक ।
जोश में आयी इनाय तहाय हक ॥
कुदरते हक्क ने किया असबाब जमा।
जिससे यह दोनों हुए अहबाब ॥

इस प्रकार अद्धमशाह शाहजादी के मृतकसे अपने विरह की बातें करता और रोता जाता था उसकी ऐसी दशाको देखकर

साहिबका कृपासागर लहराया। फिर क्या देर थी सब सामग्री इकट्ठी हो गयी। अर्थात्।

भूलकर जुल्मत से रहको कारवाँ। कुदरते हकसे वहाँ वादिद हुआ॥

अंधेरी रात के कारण कोई व्यापारी काफला राह भूल कर उसी वन में आकर उतरा। जाडेकी ऋतुके कारण जब काफलेके आदमी आगकी खोज करने लगे तब दूरसे आगके प्रकाशको देखकर एक आदमी अद्धमशाहकी कुटीपर भी पहुँचा।

कारवांमेंसे कोई मरदे खुदा। देखकर बनमें उजाला आगका॥
दिलमें अपने पुख्तः करके गुमाँ। खानए दुर्वेश है शायद यहाँ।
आग लेने को वहाँ आया चला। ताकरे वह अपनी कुछ हाजतरवा॥
मुतसिल हुजरेके जब पहुँचा वह मर्द। रंग अद्धमका हुआ दहशतसे जर्द॥

उसकी आहट पाकर अद्धम तो मारे डरके घबरा गये और कुटीके कोनेमें बने हुए गुफामें छिप गये। इधर तो यह हुआ, उधर वह आदमी जब कुटीमें आया तो भीतरके दृश्यको देखकर एकदम घबरा गया। अद्धमशाहने समझा था कि, कबरके रक्षकोंको सब हाल मालूम होगया है इससे उन्हींमेंसे कोई मुझे पकड़ने आया है और उस आदमीको मालूम हुआ कि, न जाने यह क्या चला है कि, शून्यसान घरमें कफनसे ढकी हुई मृतक देह बैठी हुई है और सामने आग जल रही है किसी जीवित पुरुष का पता नहीं है। वह अपने मनही मन बहुत डर गया और पिछले पाँव फिरकर अपनी मंडलीमें गया। वहां जाकर उसने अपने सरदारको सब देखी हुई बातें एक एक करके सुनायी जिसको सुनकर लोग बडे आश्चर्यमें आये। कुछ देरतक शोच विचार करके मण्डलीके सरदारने काफलेके साथके वैद्य और अन्य कई मनुष्योंको साथ लेकर अद्धमशाहकी कुटीपर जाने-

का विचार किया। और प्रथम मनुष्यको जो वह सब दृश्य देखकर आया था आगे करके कुटीपर जा पहुंचा ॥

थाकजाय कार उनमें एक तबीब। हाजिरकोदानाबहुशियारोलबीब॥
लेके साथ उसको अमीरे कारवाँ। सुनतेही इस बातके पहुंचा वहां॥
थी जहां रौनक फिजा वह हूरजाद ॥
पहुंचे यह दोनों वहां मानिन्द बाद ॥
बे तअम्मुलबेतव कुफ केदवाँ। यह गयेवहरोशनथीआतशजहां॥
जाके देख फिर हकीकत है वही। जिसतरहकहताथावहमरदेरही ॥
देखकर उस हालको शुसदर रहे। लबगुजाँ हैरत जदा मुजतररहे॥
आइनेसाँ शक्ल जब आयी नजर। होगये हैरान दोनों देख कर ॥
बोला आखिर वह हकीमें नुकतेदाँ। रंगमें मुर्देके यह रौनक कहाँ ॥

वहां जाकर उन्होंने सब दृश्य वैसेही ठीक ठीक देखा जैसा उपर्युक्त मनुष्य ने कहा था। प्रथम तो वैद्य सहित वह व्यापारी आश्चर्यमें आया किन्तु थोडी देर तक शाहजादीकी ओर ध्यान पूर्वक देखनेपर वैद्यने जब कहा कि, यह औरत मरी नहीं किंतु सकते के रोग से ग्रसित हो अचेत होगयी है तब तो उपरोक्त (काफलेके) सर्दार और भी अधिक आश्चर्य में आया उसने वैद्य से कहा क्या यह (शाहजादी) अच्छी भी हो सकती है? वैद्य ने उत्तर दिया अभी अच्छा करता हूँ! पश्चात् वैद्यने अपने पाससे नशतर निकाल कर शाहजादीके हाथ की रग को नशतर से छेदा जिससे रक्त बहने लगा। थोडी [illegible] तक लोहू निकलता रहा और जब दूषित रक्त शरीरसे निकल गया तब शाहजादी सचेत हो गयी।

सचेत होतेही शाहजादीने जैसेही आँख खोली अपने सामने दो अपरिचित मनुष्योंको खडे देखकर लज्जा और आश्चर्यमें

आकर घूँघट तानने लगी। तब तो अपने शरीर पर कफन देख कर भय और आश्चर्य में आई। फिर जब इधर उधर दृष्टि डालकर घरकी दशाको देखने लगी तब तो आश्चर्य, भय, लज्जा और व्याकुलता तथा शाही रोबह सबही उसके सन्मुख आकर खडे होगये। एक दो क्षण तक तो पत्थरकी मूर्तिके समान चुप बैठी रही फिर चकित दृष्टि सन्मुखके खडे आदमियोंसे शील और लज्जा पूर्ण वाणीसे इस प्रकार बात चीत करने लगी॥

शर्मसे सरको किया फरो।
पूछा उसने तुम बताओ कौनहो ?॥
मैं कहाँ हूँ और है यह किसका मकाँ।
घरसे मुझको कौन लाया है यहाँ॥
है कहाँ वह ताज व तख्ते जर निगार।
जामें लालो कूजेहाए आबदार॥
ख्वानए जरवफ्तपोश अपना कहाँ।
मखमलो दीबारका फर्श अपना कहाँ॥

शाहजादीने कहा, कि मेरे राजमहलसे उठाकर क्यों और किस प्रकारसे मुझे यहाँ जंगलमें कफन पहिना कर किसने बैठाया है ? इसका वृत्तान्त मुझसे कहो। शाहजादीकी बातोंको सुनकर हकीम और व्यापारीने उत्तर दिया कि, हम लोगोंने इन बातोंको कोई भी खबर नहीं है कि, तुम कौन हो ? तुम्हारा घर कहाँ है ? और यह घर किसका है ? तुम्हे कफन किसने पहिनाया है ? और यहां लाकर किसने बैठाया है ? हमारा कारवाँ अँधेरेके कारण मार्ग भूलकर इस ओर आ निकला था। हमारे साथ का एक आदमी आगको ढूँढ़ता ढूँढ़ता यहाँ आया और तुम्हें

मृतकके समान किन्तु बैठी हुयी देखकर उसने डर कर पीछे पाँव जाकर हमको समाचार दिया। जिससे आश्चर्यमें आकर कौतूहल वश हम यहाँ तुम्हें देखनेको आये। यहाँ आकर हमारे हकीम साहिबने तुम्हें देखकर कहा कि तुम मरी नहीं हो किन्तु सक्तेकी बीमारीमें अचेत होगयी हो। फिर उन्होंने तुम्हारी दवा करके अच्छा किया है जिससे अब तुम बात चीत करने को समर्थ हुयी हो। इतना कह कर व्यापारीने कहा इसके अतिरिक्त और हम कुछ नहीं जानते अब तुम अपना वृतान्त सच्चा सच्चा हमसे वर्णन करो कि, तुम कौन हो? तुम्हारे माता पिता का नाम ग्राम क्या है? औ तुम्हारे ऊपर क्या २ बीती है? ॥

कर ब्याँ किस गुल्सिताँ का गुल है तू।
पायी है किस बोस्ताँ में रंग व बू॥

इधर तो यह बातें होरही थीं उधर तहखानेमें बैठे हुए अद्धमशाह कबरके पहरेदारोंके भ्रमसे भयके मारे डरते हुए बडी सावधानी से कान लगाकर बाहरकी बातें सुन रहे थे। जब उन्होंने शाहजादीको बात करते सुन लिया तब उनकी और ही दशा होगई। अब बाहर निकलकर शाहजादीके पास जांनेको बार बार वह साहस करने लगे। फिर तो गारके द्वार से उन्होंने मुहँ निकाल कर दोनों आदमियोंको बडे ध्यानसे देखकर जब निश्चय करलिया कि, वे कबरके पहरेदार नहीं हैं तब एकदम बाहर निकल आये। बाहर निकलकर उन्होंने कुटीके बाहर अन्धेरेमें खडा होकर शाहजादी और व्यापारीकी बात चीत सुनने लगे। और जब उन आदमियोंके रूप रंग और शारीरिक लक्षणों से यह बात निश्चय होगई कि, वे न तो जासूस हैं न कोई बुरे आदमी हैं तब आनन्दके समुद्रमें गोते खाते हुए एकदम कुटीके भीतर

जाकर खडे होगये और उपरोक्त दोनों नवागत पुरुषोंको देश कालके आचारके अनुसार नमस्कार आदि करके शाहजादीकी ओर देखते हुए खडे होगये।

इनको वहाँ आता देखकर उनके वेष और स्वरूप परसे उन लोगोंने निश्चय किया कि, इस पर्णकुटी का स्वामी यही है। ऐसा निश्चय करतेही वहां और शाहजादीके पूर्ण वृत्तान्त जानने की पूरी इच्छा व आशा उनके हृदयमें निश्चय होगयी। उन लोगोंने अनुमानसे यह भी निश्चय कर लिया कि;हो न हो यह इस स्त्रीके ऊपर आशिक है जिससे प्रेममें पागल होकर इसके मृतक कहींसे यहां उठा लाया है अब क्षण २ में उनकी उत्कण्ठा बढने लगी जिससे अधिक समय तक न ठहर कर व्यापारी और हकीमने अद्धमशाहसे पूछा कि, ऐ बन्दः खुदा सच कहना तु कौन है ? और यह अनूप शोभामयी सुन्दरी कौन है ? तू इसे यहां कहांसे और किस प्रकारसे लाया है ? सब वृत्तान्त सत्य २ कहदे। उनकी बातको सुनकर अद्धमशाहने आदिसे अन्त तक शाहजादीपर आशिक होना; वजीरका मोती मांगना, दो-वर्षतक संसारमें भटककर मोती लाना, फिर वजीरकी प्रतिज्ञा भंग करके उन्हें मारकर फेकवा देना, चेत आनेपर शाहजादीकी मृत्युका समाचार पाकर कबर स्थानमें जाकर पहरे वालोंकी आंख बचाकर कब्र खोदकर लाश बाहर निकालकर लाना आदि सब वृत्तान्त कह सुनाया। अद्धमशाहके आश्चर्यमय वृत्तान्तको सुनकर उन दोनोंके सहित शाहजादी भी चकित होगयी। अपने लिये अद्धमशाहके महान कष्ट उठानेकी बात और उसके सच्चे प्रेमके वृत्तान्तको सुनकर शाहजादी भी मनही मन उनपर आशिक होगयी।

इश्कने अद्धमके वह तासीरकी ।
वह परीरू उस पैं आशिक हो गयी ॥
देखकर एहवाल अद्धमका तबाह ।
चश्म नम गमसे हुई वह रश्केमाह ॥
गुजरीजोजो उसपे थी तकलीफओ दर्द ।
सुनके दुखतर होगयी दहशतसे जर्द ॥
देखकर अद्धमको यों पज मुर्दँ हाल ।
आया दिलमें उस परीरूके ख्याल ॥
मोरी खातिर इसने यह रंजो बला ।
लेके सरपर कर दिया जीको फिदा ॥
खीचकर क्या २ अजीत औ बला ।
मिहनतो तकलीफो रंजे लादवा ॥
बाद मरनेके भी यह आशुफतः हाल ।
लाश मेरी कब्रसे लाया निकाल ॥
इसके बायस फिर खुदाने दी हयात ।
जीस्तका मेरी सबब है इसकी जात ॥
गर न होता मुझपै आशिक यह जवां ।
कब्रमेंसे क्यों यह फिर लाता यहाँ ॥
रुकके दम यकदममें मैं होती फना ।
जिस्म होता तमए मूरो मारका ॥
थी यह इसदुवेंशकी तासीर इश्क ।
मुर्दा जिन्दाहो है यह तदबीरइश्क ॥
जीस्त दुनियाकी है बसख्वाबोख्याल ।
इस जहाँकी इश्क पर तु खाक डाल ॥
तालिबे दुनिया न हो अब जीनहार ।

दिलसे करतूभी फकीरी अखतियार ॥
है यह जबतक यह जिन्दगी मुस्तआर ।
कर इसे मसरूफ यादे किर्दगार ॥
लज्जते दुनिया यहूँ से दरगुजर ।
यादहकमें बांध चुस्त अपनी कमर ॥
दमजो बाकी है न इनको यों गँवा ।
सीख इस दुर्वेश से राहेखुदा ॥
जीतेजी तू आपको मुर्दाबना ।
खाकमें इस जिस्म खाकीको मिला ॥
कर इसी दुर्वेशसे अपना निकाह ।
दोनों आलममें होता तुझको फलाह ॥

शाहजादी मनहीमन अद्धमशाहके साथ रहकर अपना जीवन व्यतीत करने का प्रण कर रही थी इनमें व्यापारीने अद्धमशाह और शाहजादी दोनोंको सम्बोधन करके कहा कि, तुम दोनों के वृतान्त ज्ञात हुए । तुम दोनोंकी दशा ऐसी है कि, परमात्माने दोनोंको परस्पर एक दूसरेके प्राण रक्षा का कारण बना दिया है, अब तुम लोग यह कहो कि,तुम्हारी इच्छा क्या है?अब तुमलोग क्या करना चाहते हो ? यदि तुम्हे हमारे साथ चलना हो तो संध्याको अपना कारवाँ यहां से जानेवाला है हमारे साथ चले चलो तुम्हे किसी प्रकारसे दुख न होगा । हम अपनी शक्ति अनुसार तुम्हारी सेवामें कदापि नहीं चूकेंगे । यदि हमारे साथ चलना स्वीकार न हो तो जो तुम्हारी इच्छा हो सो प्रकट करो ।

सौदागरकी बातको सुनकर परम कृतज्ञता प्रकट करते हुए अद्धमशाहने कहा कि, यदि मेरा रोम २ जिह्वा बनजावे तब भी तुम्हारी भलाईका पुरस्कार मुझसे नहीं दिया जा सकता ।तुम्हारी

ही कृपासे शाहजादी फिर जीवित होकर मेरे जीवनका कारण बनी है तुम्हारे इस पुण्यका फल परमात्मा तुम्हें देगा किन्तु जबतक मेरे शरीरमें प्राण है तब तक मैं तुम्हारा कृतज्ञ रहूंगा। अब मुझे सिवाय शाहजादीसे विवाह करनेके किसी प्रकारकी और इच्छा नहीं है। यदि यह स्वीकार करलेतो धर्मानुसार तुम दोनों अपने सन्मुख साक्षी बनकर हम दोनोंका सम्बन्ध जोड़ दो।

अद्धमशाहकी बातको सुनकर व्यापारीने शाहजादीको कहा कि, हे शाहजादी! यदि अद्धमशाह न होता तो तू कब्रकी कब्रमें मरकर संसारसे चलबसी होती। इसके अतिरिक्त उसने तेरे लिये कैसे २ कष्ट उठाये हैं अब उचित है कि, तू भी उसे स्वीकार करले इस प्रकारसे अनेक बातोंके समझानेपर शाहजादीने उत्तर दिया कि, आप लोगोंकी मैं बहुत कृतज्ञ हूँ आप लोगोंकी आज्ञा कदापि उल्लंघन नहीं कर सकती किन्तु अद्धमशाह इस बातका प्रण करे कि, वह कभी मुझसे अलग न होगा और न कभी मेरी आज्ञासे बाहर जायगा तब मैं इसको स्वीकार करूंगी और मेरे विवाह का यही मुहर होगा।

शाहजादीकी बातको सुनकर अद्धमशाह आनन्दके मारे उछल पड़े और शपथ पूर्वक शाहजादीके कहे अनुसार प्रतिज्ञा करके शाहजादीके उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगे। फिर शाहजादीने व्यापारी और हकीमसे कहा कि शरअ (मुसलमानी धर्मशास्त्र)

---

१ मुसलमानी धर्मानुसार विवाह करनेके समय वरकी ओरसे कन्याके लिये मुहर की रीतिपूरीकी जाती है। जिसमें वर अपनी प्रतिज्ञाके साथ २ नियत रुपया या अशरफी का दस्तावेज अपनी स्त्रीके नामसे लिख देता है कि, यह आजसे उसके इतने रुपयका ऋणी हुआ प्रथम तो कभी वह उस स्त्रीको छोड़ेगा ही नहीं यदि किसी कारनवश उसे छोड़ना चाहे अमुक रकम देकर केही छुटकारा पा सकेगा जब तक वह ऋण उसका न चुकावे तब तक वह उसको कदापि नहीं छोड़ सकता इसीका नाम मुहर है शाहजादीने अपना मुहर यही मांगा कि, यावज्जीवन अद्धमशाह छोड़कर कहीं न जावे।

के अनुसार विवाहके लिये दो साक्षीकी आवश्यकता है सो तुम दोनों हमारे विवाहके साक्षी हो जाओ जिसमें लोक परलोकमें हम पापके भागी न होवें तब मैं विवाहको स्वीकार करूंगी। उन दोनोंने शाहजादीके वचनको मानकर साक्षी बनना स्वीकार किया और दोनोंकी गांठ जोड़ (पाणिग्रहण) करा दिया। पश्चात् वे दोनों तो अपने कारवानमें चले गये और अद्धमशाह शाहजादीको पाकर परम आनन्दित हो अपनी पर्णकुटीमें वास करने लगे ॥

दोनोंमें परस्पर ऐसा प्रेम हुआ कि, कोई किसीके वियोग को क्षणमात्र के लिये भी सह नहीं सकता था। जङ्गलके फल फूल पत्ते और कन्द मूलपर वे अपना दिन बिताते और स्वर्गसे भी बढ़के आनन्दको मनाते थे ॥

कुछ दिनोंके पश्चात् शाहजादी गर्भवती हुयी और समय पूरा होनेपर परम सुन्दर पुत्रको प्रसव किया। उसी पुत्रका नाम अद्धम शाहने इब्राहीम रक्खा। किताबोंमें लिखा है कि, अद्धमशाहके संग के प्रतापसे शाहजादी भी सर्वशुभ गुणोंसे सम्पन्न महान् तपस्विनी और भजनानन्दी होगयी थी। जिस समय उसे गर्भ स्थित हुआ था उस समय समस्त वन नाना प्रकारके फल फूल और मेवोंसे सम्पन्न होगया था। सदा वसन्त ऋतुकाही आनन्द वहाँ दीखने लग गया था। नाना प्रकारके पशु पक्षियों ने आकर वहाँ वास किया था। जिससे वह वन कानन बनकर स्वर्गके समान सुख-दाई हो रहा था। इब्राहीमके जन्म लेनेपर उनकी आकृति सम्पूर्ण रूपसे हजरत इब्राहीम खली लुल्लासे मिलती थी इसी कारणसे उनका भी नाम इब्राहीम रक्खा। जिस समय शाह-इब्राहीम का जन्म हुआ वह एक सो एकसठ (१६१) हिजरी थी।

माता पिताने बड़े प्रेमसे इब्राहीमको पालना आरम्भ किया। दो वर्षके पश्चात् उनको अन्न प्राशन कराया ॥

दो बरस पूरेका जब वह होगया। और गिजाफिलजुमलेवहखानेलगा॥
गैबसेआनेलगेनादिरतआम। कुदरते एजिदसे उसको विलदवाम॥
उसकीबर्कतसेलगेअशजारपर। अच्छी अच्छीवजअकेशीरींसमर॥
कुदरते हकसे हुआ वह दश्तोबर। गुलशनों गुलजार पर भी फौकतर॥

आखिरकार देखते देखते बालक इब्राहीम सात बरसके होगये। अब अद्धमशाहको इस बातकी चिन्ता हुई कि बालकको विद्या अभ्यास कराना चाहिये सबसे पहले जैसा मुसलमानोंमें रीति है बालकको कुरान पढ़ाना आरम्भ किया। जब कुछ दिनों तक घेरमेंही पढ़ाकर देख लिया तब एक दिन बालकको गोदमें लेकर अद्धमशाह शहरमें गये वहां ढूँढते ढूँढ़ते एक सज्जन मोलवी साहेब मिले जिनके यहां इब्राहीमके पढ़नेको ठीक करके उनसे कह दिया कि, सबेरे मैं इब्राहीमको यहां रख जाया करूँगा और शामको आकर लेजाया करूँगा।

अलगरज हर सुबह वह मर्देनेको।
लाता उस मुकतबमें इब्राहीमको॥
उलफते कलबीसे अपने विलदवाम।
फिर उन्हें लेनेको आता वक्त शाम॥
था यही हररोज अद्धमका शआर।
आते जाते शहरमें विलइजतरार॥
थी जेबस शफकत उन्हें बेइन्तहा।
तनहा आना जाना दिलपर शाकथा॥

(इब्राहीम अद्धमका बादशाह बनना)

जबसे बलखके बादशाहकी इकलौती बेटीका उससे वियोग हुआ तबसे बादशाह बहुत उदास और दुखी रहने लगा।

उसका चित्त संसारसे उदास हुआ वह सदा दुर्वेश फकीर और ईश्वरके भक्तोंके संगमें रहने लगा। जहां किसी महात्माका समाचार पाता वहीं उनके दर्शनको चला जाता और अपनी शान्ति के लिये उनसे प्रार्थना करता। दूसरी आदत उसकी सदासे यह थी कि, जब कभी वह शहरमें निकलता तब मदरसे और मुकतबोंमें जाकर लड़कोंका पढ़ना सुनता और उन्हें मिठाई वगैरह देकर खुश करता और शिक्षकों को इनाम देकर लड़कोंको छुट्टी दिलाता। इसके अतिरिक्त एक संतने भी उसे कहा था कि, मुकतबके लड़कोंको खुश रखनेसे तेरी मुराद कभी न कभी पूरी होजायगी। सो एक दिन बादशाहकी सवारी संयोगसे उसी मुकतबके पाससे निकली जिसमें इब्राहीम अद्धम पढ़ते थे। जिस समय बादशाहकी सवारी मुकतबके पास पहुँची उस समय बादशाहके कानमें बहुत मीठा और रीतिके अनुसार कुरान पढ़ते हुए किसी बच्चेका शब्द सुनपडा। बादशाहने एकदम सवारी रोकली और कुछ देरतक वहाँ ही खडा खडा सुनता रहा। फिर तो उस शब्दपर इतना मोहित हुआ कि, सवारीसे उतरकर मुकतब में पहुँचा।

गुजराउसमुकतबकेआगे नागहाँ। मसहफइब्राहीमपढताथाजहाँ॥
बादशाहने जब सुनी उसकीसदा। दिलपेउसकेकछुअसरपेदाहुआ॥
करकेउजाअपनेउसघोडेकोखडा। पढना इब्राहीमका सुनतारहा॥

मुखरिजे इलफाज उसके मद्वशाद।
सुनके अश अश कर गया हर जीखरद॥
था हमेंशासे तरीका शाहका।
जिस जगह मुकतब सरेरह देखता॥
सुनता पढना जाके हरेक तिफ्लका।
करता फिर इन आम हरयकको अता॥

आता पढना जिसका खातिरमें पसन्द ।
उसको देता नकद औरों से दो चन्द ॥
देके जर उस्ताद को शाहे निकों ।
छुट्टी दिलवाता था फिर हर तिफ्लको ॥

अपने सदा की आदतके अनुसार बादशाहने मुकदबके हर एक लडके का पढना सुना और सबको इनाम भी दिया । परन्तु जब इब्राहीम की बारी आयी तब उस छोटेसे बच्चे का शुद्ध शुद्ध पढना, उसकी अदब के साथ बात चीत और उसके रंग रूप को देखकर बादशाह एकदम आश्चर्य सागर में गोता खाने लगा । उसके हृदयमें उस बच्चे का इतना प्रेम प्रवाह उमड चला कि वह हैरतमें पड गया । आखिर अपने प्रेम प्रवाह को रोक नहीं सका एक दम इब्राहीम को गोदमें उठाकर प्यार करने लगा । यद्यपि बादशाही रोब दाब से यह बात कदापि मुमकिन नहीं थी तथापि अन्तर्गत हृदयमें किसी अन-जानी शक्तिने ऐसा काम किया कि बादशाह अपना पद एक दम भूल गया और इब्राहीम को उठाकर गले लगा लिया । इब्राहीम के हृदय में भी खून ने जोश मारा वह भी बादशाह के हृदय से चिपट गया । अब बादशाहके हृदय पर और भी बडा भारी प्रभाव पडा ।

जुज्वको है जुज्वसे पैवस्तगी ।
खून को है खून से दिलबस्तगी ॥
दाब शाही से यह विलकुल दूर था ।
लेकवह इस अमरमें मजबूर था ॥
दिलको अपने जब्रगो उसने किया ।
जोश उलफतपर न उससे रुकसका ॥

जुज्वको है गर्चे जायद इजतरार।
कलको भी बेजुज्वके कबहो करार॥
गो नहीं जाहिरका पैगामों सलाम।
जुज्व कलमें है मगर पिनहाँ कलाम॥
दिलको हरेकके खलिश है जो यहाँ।
है अनासिरकी कशिशयह ऐ जवाँ॥
जज्व अपने जुज्वको करते हैं कल।
उस कशिशका है बदनमें शोरोगुल॥
हरबशरको है जो दिलमें इजतराब।
खींचती है उसको पिनहानीतनाब॥
रिश्तए उलफसे रहता है बंधा।
जुज्व अपने कुलके साथऐबाखुदा॥
जुज्व तनको है जो कुलके साथरब्त।
है कशिशसे उसकी तेरी अक्लखब्त॥
अपनी गुलफतसे तुझे है यह गुमाँ।
मुझको जोफे कलब और मादा है अयाँ॥

बादशाह दिल भरके इब्राहीमको प्यार कर लेने पर जैसे ही गौर से उसकी ओर देखने लगा वैसे ही उसे अपनी लडकी की याद आयी। लडकी की याद आतेही उसकी सूरत बादशाह के सामने आ खडी हुई। अब बादशाह देखता है तो इब्राहीमकी और उसकी लडकी की शकल में बाल बराबर भी भेद नहीं है। कहते हैं कि, उस समय बादशाह इतना रोया कि, उसका चेहरा लाल हो गया और आगे के कपडे आंसू से भीग गये। फिर जब मन कुछ ठहरा तब बादशाहने मुल्लाजीसे पूछा कि,—यह लडका कहां रहता है? इसका बाप कौन है? यह

यहां कितने दिनोंसे पढने आया है ? मुल्लाजीने बादशाहके प्रश्नोंका यथायोग्य उत्तर दे दिया ।

दस्त बस्तः यों मुअलिमने कहा । बाप इसका है फकीरे बेनवा ॥
रहता है सहरामें आबादीसे दूर । अहल दुनियासे निहायत है नफूर ॥
अद्धम उसका है लकबऐनेकपे । इस पेसरका नाम इब्राहीम है॥
एक बरस गुजरा कि पढनेको यहां । आताहै यहतिफलऐशाहेजहाँ॥
सुबहको लाता है बाप इसका यहां । शामको लेजाताहै आकर वहाँ॥
है जेबस दुर्वेश वह साफी निहाद । हैमुझे हद्दसे ज्यादाएतकाद ॥
जसतनअल्लाह इसेबहरेसबाब । याद करवाताहूँ रब्बानी किताब ॥

मुल्लाजीकी जबानी अद्धमशाहका नाम सुनतेही बादशाह चौंक उठा । उसे पहलेकी सब बातेंः—अद्धमशाहका शाहजादी पर आशिक होना, उसका मोती लाना, वजीरका उसे धक्का देकर निकाल देना उसके छातीपर मुक्का मारना और शाहजादीका मर जाना इत्यादि—याद आगयीं । तब बादशाहने अपने मनमें अनुमान किया कि, हो नहो इसमें जरूर कोई छिपा हुआ भेद है । नहीं तो इस बालकके ऊपर मेरा इतना प्रेम क्यों होता ? दूसरे इसका रूप मेरी बेटीसे पूरा पूरा मिल रहा है । सो इसमें अवश्य कुछ भेद छिपा हुआ है । इसलिये इस बालकको अपने महलमें लेचलकर बादशाह बेगमको दिखलावें जिसमें उसके हृदयमें कुछ संतोष हो । इतना सोचकर बादशाह इब्राहीमको गोदमें लिये हुए उठ खडा हुआ और मुल्लाजीसे कहा कि, जब इस लडके का बाप आवे तब उसे मेरे पास भेज देना वहीं से वह अपना लडका ले जायगा । फिर मुल्लाजीको बहुत कुछ इनाम देकर रवाना होगया ।

महलमें पहुंचकर बादशाहने बेगमको बुलाकर इब्राहीमको

उसकी गोदमें रख दिया। बेगमने जैसेही इब्राहीमको गौर करके देखा वैसेही लडकीकी शकल देखकर एकदम बेहोश होकर गिर पडी। फिर तो महलमें धूम मच गयी। बेगमको होशमें लानेके सैकडों उपाय किये गये। जब वह होशमें आयी तब इब्राहीमको गोदमें लेकर बार बार बलाएँ लेने और नाना प्रकार के संकल्प विकल्प मनमें करने लगी।

गोदमें फिर उसको लेकर नागहाँ। सांस ठंडीभरके करती थी ब्याँ॥
ऐ मेरे लखते जिगरके हम शबीह। ऐ मेरे नूरे बरसके हम शबीह॥
ऐ मेरे रशके कमरकेहमसिफत। ऐ मेरे गुल नगंतरकेहम सिफत॥
ऐ मेरे उस गुलबदनके हम अनां।ऐ मेरे शीरी दहनके हमनिशाँ॥
ऐ मेरे उस लाबुते चींके करीं। ऐ मेरे आहुये मिराकीके करीं॥
ऐ मेरे ताबिन्दः अखतरकी शबीह।ऐ मेरे मेहरे मनौवर की शबीह॥
ऐ मेरे नादीदः दुनियाके मिसाल।ऐ मेरे फरजन्द जेबाके मिसाल॥
ऐ मेरे युसुफके हमतजोंतराश। ऐ मेरे लैलाकेहमवज अवकमाश॥
ऐ मेरे जाने जहांके हम अनाँ। ऐ मेरे गुंचः देहाँके हम अनाँ॥
ऐ मेरे उस मूकभरके हम कमर। ऐ मेरे याकूत लबके हम गोहर॥

देताहै हर जुज्व तेरा बे गुमाँ।
युसुफे गुमगश्तः मेरे का निशाँ॥
है जो हर हर जुज्व तेरा बिलएकीं।
यादगार लैलीय महमल नशी॥

इस प्रकार अनेक तरहसे बेटीका स्मरण कर लेनेके पश्चात् बेगम ने इब्राहीम से पूछा कि, तेरी मां और बापका नाम क्या है? इब्राहीमने बापका नाम अद्धमशाह और मांका नाम वही बतलाया जो बादशाह की लडकीका नाम था।

शाहकी दुखतरका जो कुछ नाम था।वही इब्राहीमने मांका लिया॥

और बतायानामअद्धम बापका।दश्तमें अपनीकहीरहनेको जा ॥

अद्धम शाहके नाम को बलख निवासी स्त्री पुरुष बच्चे से बूढे तक सभी जानते थे। क्यों कि वह शाहजादी पर आशिक था। और शाहजादीका मरजाना भी अद्धमशाहके ही शापका फल लगाना मान रखा था। यही कारण है कि, अद्धमशाहको सब लोग महात्मा सिद्ध समझते थे। इब्राहीमके मुखसे बादशाहजादी और अद्धम दोनोंका नाम सुनकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाह और बेगमके अन्तःकरणमें न जाने कितनी कल्पनाएँ आती थीं और कितनी आशा और निराशा उनके चारों ओर फिर रही थीं। आखिर बादशाह बेगमने अपने हाथसे इब्राहीमको स्नान कराकर अच्छे २ कपडे पहनाया और उत्तम उत्तम पदार्थ उसे खानेको दिया। फिर बादशाह इब्राहीमको बेगमके पास छोडकर अपने खानगी स्थानमें जा बैठा और इस भेद पर विचार करने लगा। अन्तमें बादशाहने निश्चय किया कि, अद्धमशाहसे इनका वृत्तान्त पूछना चाहिये वह संसार त्यागी फकीर है वह कदापि झूठ नहीं बोलेगा।

बादशाहके दिलमें आया यों ख्याल ॥
पूछिये अद्धमसे उस दुखतर का हाल ॥

फर्कऊसकीरास्त गोयीमें नहीं।जो कहेगा वह सच्चहै बिल यकीं॥
मर्द हकहै पाय बन्दे रास्ती। झूठ हर्गिज न बोलेगा कभी॥

इतना विचार कर बादशाहने दरवान को बुलाकर हुक्म दिया कि अगर कोई लड़का लेने आवे तो उसे द्वारपर मत रोकना बल्कि उसे सीधा मेरे पास पहुँचाना। उसको प्रतिष्ठापूर्वक ले आना, खबरदार उसके मनमें किसी प्रकारसे बुरा न लगने पावे इतना हुक्म देकर बादशाह अद्धमशाहकी इन्तजारी करने लगा।

उधर अपने नियत समय पर जब अद्धमशाह इब्राहीमको लेनेके लिये मुकतबमें आया तब उसे मालूम हुआ कि, इब्राहीमको बादशाह अपने महल में ले गया है और कह गया है कि अद्ध-मशाह वहाँही से उसको लेजावे। उसे किसी प्रकार डरना नहीं चाहिये जिस समय वह आयेगा उसी समय अपना लडका ले जायगा। यह सुनते ही अद्धमशाहने बेकरार होकर सीधे बाद-शाहकी ड्योढ़ी पर जा खडा हुआ और दरवानसे कहाकि, बाद-शाहसे जाकर कहदे कि, इब्राहीमका बाप उसे घर लेजाने आया है। जल्दी उसे बाहर भेज दो।

जैसेही अद्धमशाहके आनेकी खबर बादशाहको पहुंची वैसेही बादशाहने उसे अन्दर अपने पास बुला लिया और बडी प्रतिष्ठा के साथ उच्चासन पर बैठाकर ईश्वरका शपथ देकर उनसे पूछा कि सच बता तुझकोसौगन्देखुदा। नामहैइसतिफ्लकीमादरकाक्या हैवहकिसकीदुखतरेआलीगोहर। रास्तकहदेकौनहैउसकापदर ॥

बादशाहकी बातको सुनकर अद्धमशाहने कहा = "ऐबादशाह वह वही तुम्हरी लडकी है जिसपर मैं आशिक हुआ था"।

सुनकरअद्धमनेकहाऐबादशाह। हैवहदुखतर आपकीबेइश्तवाह॥
मादरइसकीहैवहीरशकेकमर। जिसपेमैंआशिकहुआथादेखकर॥
नामभीउसकादियाउसकोबता।दुखतरेसुलतानकाजोकुछनामथा॥

अद्धमकी बातको सुनकर बादशाहके आश्चर्यका पारावार नहीं रहा उसने आश्चर्य मुद्रासे अद्धमशाहसे कहा कि मेरी बेटी को मरे हुए तो मुद्दत होगयी। उसको हम लोगोंने कब्रमें गाड दिया उसकी तो हड्डी तक गलगयी होगी। वह अब तुम्हारे घरमें कहांसे आगयी? क्या कोई आज तक मर करके भी जिया है।

बादशाहकी बातको सुनकर अद्धमशाहने शाहजादी के जीने और विवाह होने आदिका सब वृत्तान्त कह सुनाया।

जबकहा अद्धमने ऐआलमपनाह। मुवतलासकतेमेंथीवहरश्कमाह॥
खल्क उसदुखतरकोमुदाजानकर। कब्रमेंचुपरखकेआयीअपने घर॥
कब्रमें उसको किया था दफनजब। एकपहरभरसेसिवागुजरीथीतब॥
मिट्टी जो डाली थीं उससन्दूकपर। जिसकेअन्दरथीवहमाहेसीमवर॥
कुदते हकसे हवाका रास्ता। रह गया था कब्रके अन्दर खुला॥
था जिलाना बसकिमञ्जूरे खुदा। इस सबबसे कब्रमें रखना रहा॥
मुझको जज्वे इश्कमें आयी तरंग। कब्रपर उसके गया मैंबे दरंग॥
पासबान कब्र सोते देखकर। लाशदुखतरकोकिया मैंनेबदर॥
लाशको मैंने निकाला कब्रसे। फिर कियाहमवारमिट्टीडालकर॥
मैं वले मुर्दाहो उसको जानकर। रखकेउसकीलाशकोबलायसर॥
जल्दतर उस दश्तोबरमें लेगया। थी जहां ऐ शह मेरी रहनेकीजा॥
करके रौशन आग मैं बैठा वहां। बा हजारों दर्द वअन्दोहो फिगा॥
देखता था हुस्नकी उसके बहार। और रोताथा निहायत जारजार॥
कुदरते हकसे हुआ बारिद वहां ऐन। उस हालतके अन्दर कारवाँ॥
देखकर आतशको रौशनएकजवां। आगलेनेके लिये आया वहाँ॥

पास वाने कब्र उसको जानकर।
फर्त दहशतसे हुआ दिलमें मुनतशिर॥

दश्तमें मुर्दे को तनहा देखकुर। होगया दहतसे लरजाँ वह बशर
कारवाँमें जाके दी उसने खबर। उसमें था मर्द तबीबे पुर हुनर॥

साथ लेकर उसको मीरे कारवां।
सुनतेही उस बातके आया वहां॥

देखकर दुखतरको उसने यों कहा। है यह सकते के मर्जमें मुबतला॥

कहके विसमिल्हाह नशतर को लिया।
उससे की झट पट रगे कफान वा॥

जबकिनिकलाउसकेतनमेंसेलहू। होगयीहुशियारवहफर्रखुन्दःखू॥

करदियाआंखोंकोउसनेअपनेबा। पूछा उन दोनोंसेक्याहैमाजरा ॥
कौन हो तुम और यह किसका है मकां ।
घर से मुझको कौन लाया है यहाँ ॥
मैं भी आखिर सुनके उनका मकाल ।
अन्दर आया करनेको दरियाफ्त हाल ॥
देखकर जिन्दा मैं उसको ऐ शहा ।
लाया सिजदए शुक्र यजदांका बजा ॥
पूछा मुझसे फिर उन्होंने माजरा ।
मिन व अन एह वाल मैंने कह दिया ॥
मेरा और दुखतरका एजावोकबूल। होगया पेशे गवा हानैं अदूल ॥
फिर हुआ जो लुफवइन आमेंखुदा।पैदा इब्राहीम यह उससे हुआ॥
माजरा है यह बेला कम और कास्त ।
जो कहा मैंने यह है सब रास्त रास्त ॥

अद्धमशाहके द्वारा अपनी बेटीका सब वृत्तान्त सुनकर बादशाह मारे खुशीके उछल पड़ा । वह उसी समय उठकर महलमें गया और बादशाह बेगमसे सब वृत्तान्त कह सुनाया । बेगमने बेटीके मिलने की खुशीमें दान पुण्य खैरात करना आरम्भ कर दिया उधर बादशाह ने शाहजादीके बचपनकी सखी सहेलियों और उसको दूध पिलानेवाली बुढियों को पालकी पर सवार करा करा कर शाहजादीकी जांच करनेको भेज दिया । तब तक आप अद्धमशाह को बातोंमें फंसा रखा ।

थोडीदेरमें जांच करने वालियों ने आकर बादशाहसे कहाकि सचमुच वही शाहजादी है। फिर तो बादशाहने बेगमको साथ लेकर उसी समय बेटी से मिलने के लिये जंगलमें जाने की तैयारी की। आगे आगे बेगमोंके सुहाफ और पीछे सब

दरवारियों सहित बादशाहकी सवारी रवाना हुई। जब अद्धम-शाहकी कुटीके निकट सवारी पहुँची तब बादशाह नीचे उतर पडा और बेगम को साथ लेकर पाय प्यादे झोपडी की ओर चला। बादशाहने देखा कि, एक टूटी फूटी झोपडीमें सैकडों जगह से फटे हुए कपडे पहनी हुई घास की टूटी चटाईपर बैठी हुई शाहजादी निमाज पढ रही है। जब वह निमाज पढ चुकी तब लौंडियों ने हाथ जोडकर कहा कि, आपके पिता और माता आपसे मिलने को आये हैं। दासीकी बात सुनतेही शाहजादी दौडकर माता पिताके पग पर गिर पडी। फिर दोनों ने उसे उठाकर गले लगाया और शकुन के आंसू बहा-कर उसे शाही महल में अपने साथ ले जाने की इच्छा प्रकट की। शाहजादीने कहा आपकी आज्ञा मेरे शिर पर है किन्तु पतिकी आज्ञा विना मैं यहां से एक पग भी आगे नहीं बढ सकती। बादशाहने अद्धमशाह से आज्ञा दिला दी। फिर तो उसके वह फकीरी वेष को उतार कर शाहाना कपडोंसे उसे सजाया और बेगम ने अपनी पालकीमें साथ ही बैठाया। वैसे ही अद्धमशाह और बादशाह एक ही सवारीमें बैठ कर शाहीमहल को रवाना हुए। बादशाहने महलमें पहुँच कर उत्सव करने की आज्ञा दी।

राह हकमें माल व जर बिलकुल दिया।
इस कदर खैरात की बेइन्तहा॥

इस प्रकार खूब धूम धामके साथ आनन्द मनाया गया। चौथे दिन अद्धमशाहने बादशाहसे कहा कि, फकीरों का एकान्तमें रहना ही अच्छा है इसलिये मुझे तो जंगलमें ही जाने दीजिये। अगर आप चाहें तो मेरी स्त्री और मेरा लडका आपकी सेवामें रहेगा। बादशाह ने बहुत प्रकारसे समझा-

कर अद्धमशाह को अपने पास रखना चाहा किन्तु उन्होंने एक भी नहीं माना आखिर मजबूरीसे बादशाहने उन्हें बिदा किया। अद्धमशाह अपनी उसी कुटीमें जाकर रहने लगे जब उनका जी चाहता तब आकर अपने लडके और स्त्रीको देख जाते। कहते हैं कि, जबतक जीते रहे तबतक उनकी यही रीति रही।

बादशाहने अपने घर लाकर इब्राहीमको पढाने के लिये अच्छे अच्छे शिक्षक सब प्रकार की विद्या और गुणसे पूर्ण देश देशसे बुलाकर रखा "होनहार बिरवानके होत चीकने पात" के अनुसार इब्राहीमकी बुद्धि ऐसी तीव्र थी कि शिक्षक लोग यदि एक बात बतलाते तो इब्राहीम उससे दश अधिक निकालते इस प्रकार सद्गुरू की कृपा द्वारा इब्राहीमने थोडे ही वर्षोंमें अनेक विद्या और कला कौशल तथा राजनीतिमें योग्यता प्राप्त कर ली। समय पाकर बादशाहने इब्राहीमको राज्य सिंहासन पर बैठाकर बलख का बादशाह बना दिया।

नाना की गद्दी पर बैठकर इब्राहीम अब इब्राहीमशाह हुये। राज्यके कामको इस योग्यता से किया कि, शत्रु और राज्य के लालची दूसरे बादशाह लोगोंने स्वयं प्रशंसा करके उनसे दोस्ती कर ली।

इस प्रकारसे रामराज्य सा राज्य करने पर भी इब्राहीमशाह को फकीरों दुर्वेशों की संगति का ऐसा चसका लगा था कि, दिन रातमें राजकाजसे जभी अवकाश मिलता तभी साधु सन्तों के पास पहुँचते। चाहे कितने ही दूर पर किसी अच्छे महात्मा के रहने का समाचार पाते जरूर वहाँ जाकर उनसे सतसंग करके लाभ उठाते। इसी प्रकार राज्य करते हुये कई वर्ष

बीतने पर उनके नानाका जिन्होंने अपना राज्य इन्हें देकर आप भजनके लिये एकान्त वास किया था देहान्त हो गया।

नानाके मर जाने पर इब्राहीम शाहके मन पर बडा धक्का लगा उनका चित्त संसारसे एकदम वैराग्यको प्राप्त हुआ अब उन्हें दिन रात परलोक की चिन्ता रहने लगी।

याने इब्राहीमशाहे दो जहाँ ॥
करता था जाहिरमें गो कारे शहां ॥
लैक था दुनियासे दिलबरदाशता ॥
बेवफा व बेबका पिन्दाशता ॥
कारदुनियाँस नथी चसपीदगी ॥
कुछ तहेदिलसे नथी गरवीदगी ॥
जानता था कार दुनियाँ मुस्तआर ॥
करता था बहरे जरूरत कारो बार ॥
मुल्करानी उसनेकी वबा आब ताव ॥
दसबरस वल्लाह आलम बिलसवाब ॥
अदल अपने असिरमें ऐसा किया ॥
महो मुतलक होगया जौरो जफा ॥
शम आपरवानेको देत कलीफ अगर ॥
किताजल्द उसका करे गुलगीर सर ॥
जुल्मसे तोडे जो बुज ठन्नी हरी ॥
फेर दे कस्साब गरदन पर छुरी ॥

इसके आगे नानाकी मृत्यु देखकर इब्राहीमशाहके हृदयमें विरागका अंकुर विशेष वृद्धिको प्राप्त हुआ और सद्‌गुरुने जिस प्रकार उन्हें उपदेश देकर सत्य पदको प्राप्त कराया उसका

विशेष वृत्तान्त सुलतानबोधमें लिखा है। यद्यपि और और लिखने वालोंके विचार और लिखनेसे सुलतानबोधमें बहुत कुछ भेद पडता है तथापि सबका लक्ष एकही है और सबने अन्त में फल भी एकही दर्शाया है। इस कारण और यहाँ पुस्तक बढ जानेके भयसे अधिक न लिख कर शाह इब्राहीम अद्धमके फकीर हो जाने पश्चात् की करामात औ प्रचार की बातों में से थोडी सी बातें यहाँ लिखकर यह ग्रंथ समाप्त किया जायगा।

शाहइब्राहीम अद्धम का स्फुट वृत्तान्त

वार्ता १

कहते हैं अद्धम हुए जिस दम फकीर।
छोड सुलतांनीका सब तांजो शरीर॥
मांलोजर जितना खजांने बीच था।
लेके दरियामें दिया सारा डुबा॥
पूछा एकने क्या किया यह ऐ मालिक।
क्यों न हर एकको दिया यह ऐ मालिक॥
दरजबांब उसको कहा यह मालोजर।
यांदये बोग्जंब हसदं नखवंत का घर॥
यों सुना है मैं बुजुंर्गोंसे कलाम।
जानते हैं इस मिस्लको खास व आम॥
आप पर जो चीज होवे ना पसन्द।
गैरंपर उसको मत रखना पसंद॥

---

१ बादशाही, राज्य। २ राजमुकुट। ३ राजसिंहासन। ४ धनदौलत। ५ बादशाह। ६ उत्तर में। ७ पूंजी। ८ कीना गुस्सा, क्रोध, आंटी। ९ ईर्षा। १० अभिमान। ११ वडॉल। १२ दूसरा।

* वार्ता २ ।

बादशाहत छोडकर अद्धम चले ।
कोहं व सिहरांकी तरफको शहरस ॥
बेटेको अपने किया कायमंमुकाम ।
बादशाहत वह लगा करने तमाम ॥
आपली फिर राह सिहरा की गरज ।
कुछ न रखी माल दुनियाकी गरज ॥
साथ एक प्याला लिया और बोरियां ।
एकमिसवांक और एक सकिया लिया ॥
एक सोजनं खलकां सीनेके लिये ।
साथ यह असबाब जरूरी ले लिये ॥
शहरसे बाहर निकल जो की नजर ।
सोते देखा एकको वा खाकपर ॥
बोरिया फेंका वहाँ औ यह कहा ।
खाकसारोंको जमीन है बोरिया ॥
आगे जा देखा तो एक बेचारः आंष ।
ओंकस पीता है बैठा वे हिजाब ॥
हाथसे प्यालेको भी फोडा वहीं ।
यानी पी लेवेंगे हम पानी योहीं ॥
आगे देखा एक सोता है गरीब ।
हाथको रखे सिन्हाने बेनसीब ॥
तकिया भी छोडा फजूली जानकर ।
यानी एक यह भी है मुझपर बाँरसर ॥

---

* इस वार्तामें जिन २ शब्दोंपर अंक दिये गये हैं उनका अर्थ वार्ताके अन्तकी टिप्पणी में देखो ।

आगे जाकर देखा तो एक नेकं खो।
उंगलियोंसे मांजता है दांतको॥
हाथसे मिर्वाक भी तब फकदी।
मिस्ल ईसों एक सोजनही रखी॥
सैर करते करते आखिरं एक जॉं।
एक पहाड पर गुजर उनका हुआ॥
आदमी वाँ था न वाँ है वॉन था।
यातो था वह कोहं या मैदान था॥
दूरसे एक झोपडी आयी नजर।
देखा एक दुर्वेश को उस कोह पर॥
करके इश्क अल्लाह पर बैठे वहां।
बैठना इनका हुआ उस पर गिरां॥
बोला वह दुर्वेशं ऐ दुर्वेश ? तू।
रातको रहना न यां दिलरेशं तू॥
यां न दाना है न पानी है कहीं।
मसलेंहत तेरा यहां रहना नहीं॥
तब यह बोले उससे ऐ हौसंला।
रिज्कंका हरंगिज न करियो तू गिलॉ॥
तेरा मैं महिमाँ नहीं ऐ तकियेदार।
जिसका महिमा हूँ वही हैगमगुसार॥
जिसने दी है जान वह देवेगा नानं।
गर नहीं बावर तो करले इमतहांन॥
जो किसीके पास आता है अंजीज।
किस्मत अपनी साथ लाता है अंजीज॥
है खुदा सबका नहीं करता शरीकं।

रिंज्कमें बाहँम किसीको लाशरीकँ ॥
देख आते मत किसीको सहँम जा ।
उसकी किंसमतका है साथ उसके धरा ॥
कहके यह और हंट वहांसे जा रहे ।
सामने तकियांके जा सुस्ता रहे ॥
शामको एक लोटा और दो रोटियाँ ।
तकियाँवालेको वहां पर उतरियाँ ॥
और उनके वास्ते खंवाने तआम ।
यक पुलाओंकी रिकाबी एक जाम ॥
जर्फ चीनी और उनपर ख्वाँन पोश ।
यक तकल्लुंफसे उनमें नाय नोश ॥
खाके इब्राहीमने पानी पिया ।
शुक्रँने आमतकाफिरकसिजदा किया ॥
यह तो ने अमत लेकबस चलते रहे ।
वह जो तकियादार थे जलते रहे ॥
शाम जब आयी वही फिर उतरियाँ ।
साथ यक लोटाके वा दो रोटिया ॥
मारे गुस्साके उन्होंने यों कहा ।
मैं नहीं खानेका खाना आपका ॥
एकको तुम भजो कुलियाँ और पुलाँओं ।
मुझको जौकी रोटियाँ रुखी खिलाओ ॥
जैसा वह दुर्वेश मैं दुर्वेश हूँ ।
जैसा वह दिलरेश मैं दिलरेश हूँ ॥
क्यों बढ़ायी एककी यह इंज्वशाँ ।
है फकीर आपसमें सब एकसा ॥

जब किया यह शिकवः उसने आशकार ।
तब हुआ उसपर खतांबे किर्दगा ॥
कि ऐ फकीर! इतना न भूल अपने तईं।
तुझको शरम इस बात पर आती नहीं॥
उसकी गर पछे तो वह तो बादशाह ।
मेरी खातिर तज दिया ताजो कुलाह ॥
छोड़ कर लज्जात दुनियाकी तमाम ।
वह शर बऔवहकबाब औवहत आम ॥
वह हुकूमत साहिबी सब अपनी छोड़ ।
बन्दगीमें मेरी आया हाथ जोड़ ॥
साहिबी जो छोड़ कर होवे गुलाम ।
क्यों न दूँ मैं उसको यकखंवाने तआम ॥
तेरी इस रोटीसे यह खाना है कम ।
याद कर उसके वह नांजो नअम ॥
और अपना वक्त भी तू याद कर ।
किस तरह औकात होती थी बसरं ॥
एक घसियारा था तू मर्दं गरीब ।
खोदता था घास तू ऐ बेनसीब ॥
जङ्गलोंमें खोदता फिरता था घास ।
एक टका आता था उसका तेरे पास ॥
तू हुआ था छोड़कर उसको फकीर ।
मां न बेगम थी न बाबा था अमीर ॥
उस मुशक्कत से बसंर करता था तू ।
सर पर गट्ठे लेके नित मरता था तू ॥
तुझको मैं पक्की पकायी रोटियाँ ।

भेजता हूँ साथ पानीके यहां ॥
गर राजा पर मेरी तू राजी नहीं ।
तो ठिकाना अपना कर यांसे कहीं ॥
दिल फकीरीसे अगर तेरा फिरा ।
जाली और खुरपा यह है तेरा धरा ॥
आशकीसे तू हमारे बाज आ ।
लेके खुरपा घास अपनी खोद खा ॥
जो खुदा किस्मतमें देवे बेश ओ कम ।
मत रजाँसे उसकी रख बाहर कदम ॥
तरफ से अपने कर बाहर तलब ।
खींच मतले फायदा रंजो तअब ॥
उसने जो समझा है सोई खूब है ।
तालिबोंको नित रजा मतलूब है ॥
अपने तई सबके बराबर तू न जान ।
फहँम कर यह मोलबीकी बात मान ॥
हम भी ऐसे हैं यह कहना है बुरा ।
इज्जमैं वह आदमी गर है भला ॥
यां खुदीमें और खुदामें बैर है ।
किस तरफ भटका फिरे है खैर है ॥
वन्दँगान हक्क हैं मिसकीनों गरीब ।
कुब्रसे दूर और जिल्लँत से करीबँ ॥
इज्जँत व गुरबत ही वहां मंजूर है ।
कुब्रँ है जिसम सो हकेस दूर है ॥

पकके गिर पड़ता है मेवा खाकँ पर।
खाँम है जब तक रहे इफलाकँ पर॥

साखी

दास गरीबी बन्दगी, सतगुरुका उपकार।
मान बड़ाई गर्वका, पचि पचि मरै गवाँर॥
मान बड़ाई कूकरी, धरमराय दरबार।
दीन लकुटिया बाहिरे, सब जग खाया फार॥
मान बड़ाई कूकरी, संतन पाई जान।
पाण्डव जग पान न भई, सुपच विराजे आन॥

---

१ राज्य। २ पहाड। ३ जंगल। ४ स्थानापन्न। ५ टाट। ६ मुर्दं। ८ गुदड़ी। ९ जमीन मिट्टी। १० पानी। ११ अहली। १२ लज्जा, शरम। १३ बोझ। १४ नेक = अच्छा। खो = स्वभाव। अर्थात अच्छे स्वभावको भलेमानस आदमी। १५ ईसा पैगम्बर इसाई धर्मके प्रवर्त्तक मूल पुरुष। १६ अन्तम। १७ जगह। १८ वहां, उस जगह। १९ फकीर दो प्रकार के होते हं। एक तो गदा (भीख मांगनेवाले) जिनको संसारी वैभवकी बहुत लालसा है मगर उनको मिलता नहीं। दूसरे दुर्वेश जिन्होंने संसारको अपने विचार द्वारा त्याग दिया है। २० इस जगह। २१ दिल = हृदय; रेश = जखम घाव। आशय हृदय पर चोट खाये हुआ अर्थात् संसारसे उदास हुआ पुरुष। २२ बिहतरी, भलाई, नसीहत, उपदेश, उत्तम उपाय। २३ हौंसला = हिम्मत, उत्साह, कम हौंसला = कमहिम्मत, अनउदार॥ २४ रोजी, भोजन। २५ कदापि नहीं; कभी नहीं। २६ शिकायत, उलाहना। २७ अतिथि। २८ दुःख मिटाने वाला। २९ सहानुभूति दिखाने वाला। ३० रोटी। ३१ विश्वास, यकीन। ३२ परीक्षा ३३ निकट। ३४ प्यास। ३५ भाग्य। ३६ एकसाथ। ३७ साथ। ३८। डरता। ३९ हटकर। ४० मठ। ४१ थाल। ४२ गिलास। ४३ वर्तन। ४४ थालीका ढकन। ४५ तैयारी, बनावट। ४६ खानेपीने के सामान। ४७ धन्यवाद। ४८ मुसलमानी एक खाना। ४९ प्रतिष्ठा। ५० बराबर, समान ५१ निन्दा, शिकायत। ५२ जाहिर प्रकट। ५३ क्रोध, कोप। खतावे किर्दगार = ईश्वर का कोप। ५४ कर्ता ५५ लेना। ५७ खुशीके लिये। ५८ लज्जात = स्वाद। लज्जात बहुवचन है लज्जातको अर्थात् बहुतसे स्वाद। लज्जात दुनिया॥ संसारी विषय वासनाका सुख। ५९ पीनेकी चीज। ६० भोजन, खाना। ६१ लाड। ६२ प्यार। ६३ समय। ६४ करना; गुजरना। ६५ परिश्रम। ६६ अधिक। ६७ मर्जी, इच्छा, आज्ञा। ६८ दुख। ६९ चाहने वाला। ७० चाह। ७१ लभक्ष। ७२ यहां मौलवीसे मतलब है मौलाना रूम। ७३ अधीनता। ७४ अभिमान। ७५ ईश्वरके भक्त। ७६ गरीब। ७७। अभिमान ७८ अपमान। ७९ निकट। ८० गरीबी, दीनता। ८१ सत्य। ८२ कच्चा। ८३ आसमान।

माया तजे तो क्या भया, मानहिं तजा न जाय।
मानहिं बड मुनिवर गले, मान सबन को खाय॥
कबिरा अपने जीवते, ये दो बातां धोय।
मान बडाई कारने, अछता मूल न खोय॥

वार्त्ता ३

शाह इब्राहीम अद्धम संसार त्याग देनेके पश्चात् मस्त फकीरों के वेषमें इधर उधर फिरा करते थे। न कोई उनका विशेष वेष था न चिह्न। इसलिये लोग उनको पहचान नहीं सकते थे। एकबार ऐसेही फिरते हुए किसी अमीर आदमीने उन्हें पकड-कर अपने बाग में माली के काम पर लगा दिया। सद्गुरु की इच्छा जानकर वे अच्छी तरह बाग का काम करने लगे। एक वर्ष जब बागवानी करते उनको होगया तब एकदिन बाग का मालिक अपने कई मित्रोंको साथ लिये हुए बागमें आया। शाह इब्राहीम साहबने उस समय बागमें जितने फल फूल थे सबमें से थोडा थोडा लेकर एक डाली बनायी और मालिक बेगके पास ले गये। जब उस अमीर ने डाली में से अनारों को लेकर खाया तब सब अनार खट्टे निकले। उसने शाहसाहब को बुलाकर पूछा कि, मेरे लिये ये खट्टे अनार क्यों लाया ? उन्होंने जवाब दिया कि, मुझे खट्टे मीठे की कुछ खबर नहीं है। उस अमीरने कहा कि, तुम कितने दिनसे इस बाग में रहते हो ? उन्होंने कहा एक वर्षसे। अमीरने कहा एक वर्षसे बागवानी करके भी तुमने आजतक बागके खट्टे मीठे अनारों को नहीं पह-चाना ? शाह इब्राहीमने उत्तर दिया तुमने मुझे बागकी रक्षा करने के लिये रखा था कि, फलों को खाने के लिये ? अमीरने

कहा रक्षाके लिये ? उन्होंने कहा तब मैं फल कैसे खा सकता था ? अगर रक्षक भक्षक बन जाय तब तो रक्षाका नामही संसारसे उठ जाय। आपकी बातको सुनकर वह अमीर बडे आश्चर्य में आया। फिर जाँच करने पर उस अमीरको मालूम हुआ कि, वह तो शाह इब्राहीम अद्धम हैं तब तो वह हाथ जोडकर उनके पैर पर गिर पडा और अपना अपराध क्षमा कराने लगा। तब वे हँसकर उस अमीरको उपदेश देकर चल दिये।

वार्त्ता ४

कहते हैं कि, बादशाहत त्याग देने के पश्चात् सुलतान इब्राहीम अद्धम शाह दस वर्ष तक नेशापुर जंगल की एक गुफा में रहकर भजन करते रहे। आठवें दिन गुफा से निकल कर जंगलकी लकडियां इकट्ठी करके वस्तीमें ले जाकर बेच आते और उससे जो कुछ मिलता उतनेही में आठ दिनके भोजन का सामान खरीद कर ले आते और आठ दिनतक बैठे भजन करते.

लिखा है कि,इस दस वर्षकी तपस्या और एकान्त बाससे उन्होंने अपने मन तथा इंद्रियोंको पूर्ण रीतिसे जीत लिया था। इसके प्रमाणमें लिखा है कि, जब नेशापुरसे शाह इब्राहीम अद्धम रवाना हुए तब एक जहाज पर चढ कर अरब को चले। संयोगसे उस जहाज पर एक अमीर भी जा रहा था। उस अमीरके साथ सब अमीराना सामान नाचराग वगैरह थे। ठट्ठा मसखरीसे अमीरों को खुश करने वाले भांड भी उसके साथ थे। एक रातको भांडोंने कहा अगर कोई आदमी मिलता तो उसपर से हमलोग अपनी मसखरी उतारते। उस अमीरने हुक्म दिया कि, देखो

जहाज में कोई गरीब भूखा मिल जाय तो उसे रुपया दो रुपया देकर अपना काम निकाल लो। आखिर कार ढूंढते ढूंढते उस अमीर के आदमियोंने शाह इब्राहीम अद्धमको किसी कोने में बैठा हुआ पाया। इनका विचित्र वेष और बढी हुई दाढी वगैरह देखकर सबने पागल समझ कर उन्हें पकड लिया और अमीरके मजलिस में लाकर बैठा दिया। फिर तो भांडों ने मनमानी की। जितने खेल खेलते अन्तमें सब उन्हीं पर उतारते अंतमें जब उन्हें बहुत तकलीफ हुई तब आकाश बानी हुई कि, अगर तुम कहो तो इस जहाजको डुबाकर इन सब मूर्ख बदमाशोंको इनके किये का दण्ड देदूँ। शाह इब्राहीमने बडे धीरज के साथ कहा कि,

खींच कर सीनेमें अपने एक आह।
बोला इब्राहीम ऐ मेरे अल्लाह॥
कुछ नहीं इस अमरमें इनकी खता।
करता अगरबसीरत इनको तू अता॥
कजरवी क्यों करते ऐ दानायराज।
फेल बदसे आप करते एहतराज॥
राह में गर बेबसर के चाहहो।
जो न रोके उसको वह गुमराह हो॥
मर्द बीना को है लाजिम दे बता।
वरन गोया उसका खून उसने लिया॥
वह है या रब्ब जुर्म असियांसे बरी।
कुछ नहीं उसमें खता उनकी जरी॥
क्योंकि गफलतसे है मसलूबुल हवास।
जेहल नादानी से मकलूबुल हवास॥

फिर उनने कहा कि, हे प्रभु! क्या मैं तेरा वन्दा इसका बिलहूँ और ऐसा नापाक हूँ कि, मेरे स्पर्श के पाप से इतने बडे जहाज को डुबाकर इतने निष्पापोंका अन्त करेगा। प्रभु! तू तो दयालु है अधम धारन है ऐसा क्यों नहीं करता कि यदि केवल मेरे ही लिये तुझे इतनी हत्या करनी पडती हो तो मुझको ही डुबादे अगर नहीं तो इन सबोंको वह ज्ञान दे कि ये तेरी बडाईको समझें और इनका हृदय दया और ज्ञानसे पूर्ण हो जावे। उनके इस प्रकार आशिर्वाद करने के पश्चात् तत्काल ही अमीर सहित समाज के सब आदमियों का हृदय शुद्ध और ज्ञान से पूर्ण हो गया। उस समय सबने उनको पहचाना। फिर तो सब उनके पगपर गिरकर क्षमा कराने लगे। उन्होंने सबको उपदेश देकर संतोष दिलाया॥

वार्ता ५।

एक बार एक स्मशान में बैठे हुए शाह ईब्राहीम अद्धमसे किसीने पूछा कि, बादशाही छोडकर मरघटों में क्यों बैठते फिरते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि, संसार के मनुष्यों को मैं चार प्रकार का देखता हूँ॥ १॥ कोई तो जीता है और संसार में मोजूद है॥ २॥ कोई मांके पेटमें है॥ ३॥ कोई अपना कर्म पूरा करके आनेही चाहता है॥ ४॥ कोई मर गये हैं इनमें से मरे हुए लोग पुकार रहे हैं कि ओ संसार के आदमियों! जल्दी जल्दी मरो कि, क्यामत जल्दी हो और हमलोग कब्रकी कष्ट से छूटें। जो माताके पेट में आचुके हैं और जो आने वाले हैं वे पुकार रहे हैं कि, ओ संसार के मनुष्यो! जल्दी संसारको छोड़ो कि, हमारे आनेको स्थान मिले। आशय यह है कि एक ओर से भागते हैं और

दूसरी ओरसे बुलाते हैं। इस दशा में संसारमें रहने की इच्छा किस प्रकार हो सकती है। इसलिये मैंने मौतको और मरघट को अन्तिम स्थान जानकर सेवन करना आरम्भ किया है।

वार्ता ७

एक बार फकीर हो जाने के बहुत दिन पीछे शाह इब्राहीम अद्धम बलखमें गये और शहरसे बाहर एक जलाशय के किनारे बैठे। आने जाने वालों ने उन्हें देख कर पहचाना और उनके बेटे को जो उस समय वहां के बादशाह थे उनके आने की खबर दी।

बादशाह बापके आने की खबरको सुनकर चट सवारी मँगाकर बहुतसे मुसाहेब और नौकर चाकरों को साथ लिये हुये वहाँ पहुँचा। शाह इब्राहीम के आनेका समाचार जैसे ही बलख के लोगों को पहुँचा वैसे ही जो जिस दशामें था अपना अपना काम छोडकर दौड पडा। थोडी ही देरमें शाह इब्राहीम के निकट बडा भारी मेला लग गया।

सुलतान इब्राहीम के पास में सिवाय एक गुदडी के दूसरा वस्त्र या पात्र आदि कुछ नहीं था। कठिन तपस्या के कारणसे उनका शरीर भी बहुत दुबला पतला और कमजोर देख पडता था। बापकी वह दशा देखकर बादशाह बने हुए आत्म दृष्टिसे शून्य बेटेने कहा पिताजी! आपने बादशाहत छोडकर संसार भरका कष्ट अपने शिर उठाके क्या लाभ उठाया ?।

जो आपका शरीर मखमल और फूलोंकी शय्या पर सोने-वाला था अब उसके लिये टाट भी आपके पास नहीं है जिसके सम्मुख हजारों दास दासियाँ सेवा करनेके लिये हाथ जोडे खडे रहते थे आज वही इस प्रकार बेकस और लाचारके समान

भूखे प्यासे जमीन पर सोता और दुःख उठाता फिर रहा है। पूज्य पिताजी ! एक चीज को छोडकर मनुष्य दूसरी वस्तुको उन्नति की आशासे स्वीकार करता है। आपने तो उलटा प्राप्त सुख को भी खोकर अपनी ऐसी दशा बना ली है जिसे देखकर मुझे शरम आती है और आपकी यह प्यारी प्रजा आठ आठ आसूं रो रही है। इसी लिये मैं आपसे पूँछता हूँ कि, आपको इस त्याग में क्या प्राप्त हुआ है ?।

बेटेकी बातको सुनकर उसे कुछ उपदेश देने के विचारसे सुलतान ने कहा, बेटा ! मैंने जो कुछ कमाया है वह तो पीछे बतलाऊंगा पहले तू बतला कि, बादशाही पाकर तूने अपनी उन्नति कहां तक की है ? बापकी बात को सुनकर बेटा हँसकर बोला कि, देखिये आपके राज्य छोडकर चले जानेके पश्चात् मैंने अमुक अमुक देश अपने बाहु बलसे जीतकर स्वाधीन कर लिया है और अमुक अमुक सुधार राज्य में फैलाया है। मेरे अधिकारमें क्या नहीं है ? जिसको चाहूँ आज गरीब बना दूँ जिसको चाहूँ आज कुबेर कहला दूँ। जिसको चाहूँ उसका जान बखशी कर दूँ जिसको चाहूँ मार डालूँ। मेरे नाम को सुनकर शत्रु डरते हैं। मेरी आज्ञा को कोई तोड नहीं सकता।

इतना सुनकर सुलतानने कहा कि, बेटा ! अगर सच मुच तुममें ऐसी सत्ता आगयी है तो ले मेरी यह सुई इस तलाव मेंसे निकलवा दे। इतना कहकर गुदडी सीनेकी सूईको तालाबमें फेंक दिया।

यह देखकर बेटा (बादशाह) ने हँसकर कहा यह कौन-बडी बात है। एक नहीं लाखों सुई आपको मँगवा देता हूँ। सुलतान ने कहा मुझे दूसरी सुई नहीं चाहिये मुझे तो मेरी ही सुई चाहिये।

बादशाह ने उसी समय वजीर को आज्ञादी और आनन फानन में देखते ही देखते हजारों पानी में डुबकी मारनेवाले और जाल डालने वाले हाजिर हो गये। यद्यपि सूईका निकाल लेना बादशाह सहल काम समझता था तथापि सब उपाय करने पर भी सूईका पता नहीं लगा। तालाब के तह में जमें हुए सब काँदों कीच साफ हो गये। मगर सूईका पता नहीं लगा। तब तो बादशाह अपने मनमें शरमाकर पिताके पास जाकर कहने लगा कि, वह सूई तो नहीं मिली उसका मिलना असम्भव है दूसरी सुइयां हाजिर हैं जितनी चाहिये लीजिये। सुलतान इब्राहीमने कहा कि, बेटा तूने यह क्या उन्नति की कि, एक सुई भी तालाबसे नहीं निकलवा सकता ? खैर अब मेरी कमाई को भी देख और अपनी कमाई से मिला। इतना कहकर सुलतान ने आंख बन्द करली एक क्षण के बाद आंख खोल कर तालावकी ओर देखा तब अगनित जलचर मछली आदि जीवधारियों को किनारे जलमें खडा देखा। बादशाहने उनसे कहा प्यारी ईश्वरकी सृष्टिकी मछलियो ! क्या तुम मेरा एक काम कर सकोगी ? सब जलचरोंने एक जबान होकर कहा जो आपकी आज्ञा हो करने को तैयार हैं। जलचरों को बोलते सुनकर बादशाहसे प्रजा तक सब आश्चर्य में आगये। सुलताननें मछलियोंसे कहा कि मेरी एक सूई पानीमें है उसे ढूँढकर ला दो। इतना सुनते ही मछलियां गोता लगा गयीं। थोडी देरमें एक मछली सुई मुँहमें लिये हुई किनारे आयी। बादशाहने अपने हाथ से सुई लेकर देखी तो वही सूई थी। फिर तो वह बापके पगपर गिरकर रोते और अपनी अज्ञानता के अपराध को क्षमा कराने लगा। प्रजा

चारों ओर से जय जयकार वाणी उच्चारने लगी। इतने में सुलतान इब्राहीम अद्धमसाहब वहां से अन्तरध्यान हो गये।

वार्त्ता ८

कहते हैं कि, जब सुलतान इब्राहीम अद्धम मक्का के निकट पहुँचे तब सुना कि मक्काके पुजारी और यात्री लोग उनकी अगुवानी को आ रहे हैं। तब वो जमात से निकल कर अलग होकर आगे चले गये जिसमें उनको कोई पहचान न सके मक्का के महात्माओंके सेवक लोग जो अपने अपने मालिकों से आगे आरहे थे पहले सुलतान इब्राहीम अद्धमसे मिले। उन लोगोंने आपसे पूछा क्या सुलतान इब्राहीम अद्धम यहांसे नजदीक हैं? सब महात्मा लोग उनसे मिलनेको आरहे हैं। आपने उत्तर दिया कि; वे उस अधर्मीसे क्या चाहते हैं? सेवकोंने गाली देते सुनकर आपको खूब मारा और गरदनियां दीं और कहने लगे कि, तू ऐसे महात्मा को अधर्मी कहता है? असलमें तूही अधर्मी है। आपने कहा हां भाई सोई तो मैं भी कह रहा हूँ वे सब तो आपको मारकूटके आगे बढे और आप अपने मनसे कहने लगे कि, क्यों ओ दुष्ट तूने अपने किये का फल पाया या नहीं? अभी कैसा खुश हो रहा था कि, मक्का के महात्मा लोग हमारी अगुवानी को आ रहे हैं। इसी प्रकार से आप ही आप अपने मनको समझा रहे थे इतने में लोग आगये और आपको पहचान कर आपसे क्षमा मांगने लगे। फिर आप मक्का में जाकर बहुत दिनों तक रहे। आपके बहुत से चेले भी हो गये। आपके चेले गुदड़ी ओढते और खडी टोपी पहनते थे।

वार्ता ९

जब आप बलख छोड़ कर फकीर हुए थे उस समय आपका एक छोटा पुत्र था जब वह लडका बड़ा हुआ तब उसने अपनी मांसे पूछा कि मेरा बाप कहां है ? मांने सब हाल कह सुनाया और यह भी कहा कि सुननेमें आता है कि, आजकल मक्कामें रहते हैं। लड़केने मांसे कहा "अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं भी मक्का जाऊं तीर्थ भी करूँगा और पिताको ढूँढकर उनका दर्शन भी करूँगा" मांने कहा अकेले तू क्यों जायगा मैं भी मक्का की जेयारत को जाऊँगी। फिर तो लडकेने वजीरों को हुक्म दिया कि, शहर भर में डौंडी पिटवा दो कि, जिसको मक्का चलना हो वह चले उसका सब खर्च मेरी ओरसे दिया जायगा। फिर चार हजार आदमी मक्का जाने को तैयार हुये। सबको साथ लेकर लडका मक्का पहुँचा। वहाँ जाकर गुदडी वाले फकीरों की एक जमात देख कर उनसे पूछा कि, तुम लोग इब्राहीम अद्धम साहब को जानते हो ? उन्होंने कहा वे तो हमारे गुरु हैं। फिर पूछा वो कहां हैं ? उत्तर मिला कि वो लकडियों के गट्ठे लाने जंगलमें गये हैं। क्योंकि जब वो जंगल से लकडी लेकर आयेंगे और बेचकर रोटी लायेंगे तब हम लोग खायेंगे। इतना सुनकर लडका जंगल की ओर रवाना हुआ। आगे जाकर एक बुड्ढे को लकडियोंका गट्ठर शिर पर रखे हुए आते देखा। लडका सुलतानकी वह दशा देखकर रोने लगा। फिर उनके पीछे पीछे बाजार तक गया। जहां जाकर उन्होंने लकड़ी रखकर पुकारा कि कोई है जो माल हलाल (सुकृति की कमाई) को माल हलालके बदले लेवे। एक आदमी आया उसने

आपसे लकड़ियाँ लेलीं और उसके बदले में रोटियाँ दे दीं। आप रोटी लेकर जमातमें आये और साथियों के आगे रख दीं। लोग रोटी खाने लगे और आप भजन में लगे।

सुलतान इब्राहीम अद्धम साहेब सदा अपने चेलोंसे कहा करते थे कि, 'देखो बेदाढी मूँछके लडके और स्त्रियों से सदा सचेत रहना उनकी ओर कभी ध्यान देकर मत देखना"। उनके शिष्यवर्ग सदा उनकी आज्ञाका पालन करते थे।

काबाकी परिक्रमाके समय संयोगसे सुलतान इब्राहीम अद्धम का लड़का उनके सन्मुख आगया। आपने दृष्टि भरकर उसकी ओर देखा। शिष्य लोग उनके उस कामसे आश्चर्यमें आये। जब परिक्रमा कर चुके तब आपके शिष्योंने आपसे हाथ जोड़-कर विनय किया कि दीनबन्धु हमको तो आपने आज्ञा दी है कि बिना मूँछ डाढी वाले बालकों और स्त्रियोंकी ओर दृष्टि मत करना किन्तु परिक्रमाके समय आपने स्वयम् एक बालककी ओर टकटकी लगाकर देखा था इसका क्या कारण है?

शिष्योंकी बातको सुनकर आपने उत्तर दिया कि जिस समय मैं बलख छोडकर चला था उस समय मेरा एक छोटा लडका था मुझे इस लडकेको देखते ही ऐसा जान पडा कि यह वही लडका है। आपकी बात सुनकर आपके शिष्योंमें से एक शिष्य यात्रियोंके स्थानमें गया और बलखके यात्रियोंको ढूँढते ढूँढते आपके पुत्रके पास पहुँचा। उस समय वह लडका अपने खीमेंमें बैठा हुआ पुस्तक पढ रहा था और रो रहा था उस शिष्यने जाकर उस लडकेसे पूछा कि आप कहाँसे आये हैं। लड़केने कहा—बलखसे आया हूँ। फिर उसने पूँछा आप

किसके लड़के हैं ? उत्तर मिला कि, इब्राहीम अद्धमके उसने पूँछा कि, आपने उनको देखा है ? लड़केने कहा कलके सिवाय मैंने उनको कभी नहीं देखा किन्तु मुझे यह भी निश्चय नहीं है कि, जिनको मैंने देखा है वह मेरे पिता हैं कि, नहीं। उनसे इस डरके मारे कि वो तो हम ही लोगोंसे भाग कर यहाँ आये हैं कहीं हमको जानकर यहांसे भी कहीं भाग न जावें कुछ न पूँछा। आपके उस शिष्यने कहा कि, आप मेरे साथ आइये मैं आपको आपके पितासे मिला दूँ। फिर तो दोनों मां बेटे और बहुतसे आदमी उस शिष्यके साथ चले जब सब आपके सामने आये तब आपकी स्त्रीने आपको देख लिया देखते ही वह विकल होगयी और रोने लगी। फिर लड़केसे बतलाया कि, देखो तुम्हारे बाप यही हैं ? लडका भी रोने लगा। उस समयकी दशा ऐसी करूणापूर्ण थी कि आपके सब शिष्य भी उनके साथ रोने लगे। मोहने करूणाके स्वरूपमें सबके ऊपर अपना जाल फैलाया।

लडका रोते रोते बेहोश होकर गिर पडा जब चेतमें आया तब बापके पग पर गिरकर प्रणाम किया। आपने उसे गले लगाया फिर उससे उसके पढने लिखने और धर्मकी बातोंको पूछकर आपने चाहा कि, वहांसे उठकर चले जावें किन्तु आपके स्त्री और पुत्रने न छोडा तब थोडी देरतक चुप रहनेके बाद आपने आसमानकी ओर मुहँ करके कहा हे प्रभु ! तू मेरी सहायता कर आपका इतना कहना था कि, पुत्र आपहीके गोदमें मृत्युको प्राप्त हुआ।

शिष्योंने लडकेको मरते देखकर पूछा या सतगुरु ! यह क्या हुआ ? आपने कहा जिस समय मैंने इस लडके को गले

लगाया था उस समय मेरे हृदयमें मोहका संचार हो आया था तब परमात्माकी ओरसे आज्ञा हुई थी कि, ऐ इब्राहीम तू मेरे प्रेम और भक्तिका दम भरता है और स्नेह दूसरोंसे करता है। जिस बातके लिये शिष्योंको सबसे अलग रहनेको कहता है उसीको तू आप पकडता है। जब मैंने यह सुना तब मैंने आशीर्वाद किया कि, हे प्रभु मेरी रक्षा तेरे ही हाथमें है, यदि मेरे पुत्रका मोह मुझे तुझसे अलग करनेवाला है तो मुझे मृत्यु दे दे या उसीको। बस जो कुछ साहबने किया सब ठीक किया। इतना कहकर आप वहांसे शिष्यों सहित उठकर चले गये बलखवाले लोग रोते पीटते लाशको दफन करनेके लिये ले गये ❋

वार्ता १०

एकबार हजरत इब्राहीम अद्धमके पास कोई आदमी एक हजार दिरम लाया और विनय पूर्वक प्रार्थना की कि आप इसे स्वीकार कर लीजिये आपने उससे कहा कि मैं मँगतोंसे कुछ नहीं लेता। उस आदमीने कहा मैं मँगता नहीं हूँ बल्कि बडा धनवान हूँ। तब आपने उससे पूछा कि, जितना तेरे पास है उससे अधिक मिलनेकी इच्छा तेरे हृदयमें है कि नहीं ? उसने कहा हां अधिक तो जरूर चाहता हूँ। तब आपने कहा कि, तब तो तू बडा भिखमँगा है इसलिये मैं तुझसे कुछ नहीं ले सकता। मैं उसीसे लेता हूँ जो इतना पूरा है कि, कुछ नहीं चाहता।

❋ वर्तमानके त्यागके अभिमानी साधु और महंतोंको विचार करना चाहिये क्यों कि, ये भी तो अपनेको सुलतान इब्राहीम अद्धमसे बढ़कर त्यागी बतलाते हैं।

वार्त्ता ११

एकबार एक आदमी दसहजार अशरफियाँ लेकर आपके पास आया और उनको स्वीकार करानेके लिये हठ करने लगा। आपने उससे कहा कि, तू इस थोड़ेसे सोनेके बदले मेरी साधुता मोल लेके मुझे त्यागियोंकी जमाअतसे निकलवाना चाहता है ? इतना कहकर आप वहांसे उठकर चले गये।

धन्य है इस त्यागको। आजकलके वैरागी भी अपनेको महान त्यागी मानते हुए भी एक एक पैसाके लिये संसारी तुच्छ जीवोंके पास दीनता करते और झूठी खुशामद किया करते हैं क्या कोई सच्चा विचारवान उन्हें वैरागी कह सकता है कदापि नहीं।

वार्त्ता १२

एक आदमी ने आपसे विनय किया कि, आप मुझे ऐसा उपदेश दीजिये जिसपर अमल करके मैं सन्त पदवी को पा सकूँ। आपने उससे कहा-सन्त बनने के लिये सबसे पहली बात यह है कि, लोक और परलोक दोनोंसे चित्त उठा करके-वल साहबमें लगादे। साहब के सिवाय अपने हृदयसे दूसरा सब कुछ निकाल दे। दूसरे-हरामकी कमाई छोडकर सुकृति कमाईसे उदर निर्वाह कर। क्योंकि जिसका आहार शुद्ध है उसका हृदय शुद्ध होता,और जिसका हृदय शुद्ध होता है;उसीके अन्तःकरणमें साहबका सच्चा प्रकाश प्रकट होता है जिसने अपना आहार शुद्ध किया है वह अवश्य अपने पदको पहुंचा है। तीर्थ व्रत और नाना प्रकारके ऊपरी तपस्यासे चित्त शुद्ध नहीं होता वरन आहार शुद्ध होनेसे ही अन्तःकरण शुद्ध होता है।

वार्त्ता १३

एक बार लोगोंने हजरत इब्राहीम अद्धमसे कहा कि अमुक सन्त बड़ा सिद्ध और ईश्वरतक पहुंचा हुआ है। वह सदा ध्यान में ही रहता है और दूर दूर देशकी बातोंको कह देता है। और सदा तपस्या में ही रहता है। आपने उन लोगोंसे कहा कि, मुझे उसके पास लेचलो मैं उसका दर्शन करूंगा। लोग आपको उसके पास ले गये। आपने वहां जाकर देखा कि; वह उससे भी बढकर सिद्धिवाला है। उस सिद्धिने आपसे प्रार्थना की कि; आप तीन दिन तक यहां रहिये आप रह गये। उसके व्यवहार-को देखकर आपने विचार किया तो मालूम हुआ कि, उसका भोजन आदि निर्वाह दम्भकी कमाईसे चलता है। तब आपको उसकी दशा पर दया आयी। तीन दिनके बाद आपने उस सिद्ध को नेवता देकर अपने कुटी पर बुलाया जब वह आप के पास आया तब दूसरे ही दिन उसकी सिद्धि लुप्त होने लगी तीसरे दिन तो वह कोरा सन्त रह गया। तब उसको बडा आश्चर्य हुआ उसने आपसे कहा कि आपने मेरे ऊपर क्या कर दिया मेरा सब चमत्कार जाता रहा ? आपने उसको उत्तर दिया कि; पहले तुम हरामकी कमाईसे अपना पेट भरते थे इस कारण कालने तुम्हारे हृदयमें प्रवेश करके तुम्हें अनेक प्रकारकी सिद्धिका लालच दिखाकर साहब के देशसे काल देशमें लेगया था। अब तुम तीन दिनसे सुकृति की कमाई का भोजन करते हो इस कारण कालका राज्य तुम्हारे हृदयसे उठ गया है। अब तुम चाहो तो साहिबका भजन कर सत्य लोक का साधन कर सकते हो।

सुलतान इब्राहीम की बात उस समय तो उसको अच्छी नहीं

लगी परन्तु जब वह लौटकर अपने स्थानपर आया और सुल-तान इब्राहीम अद्धम साहेब के आचार विचार को अपने कर्त्तव्यों से मिलाने लगा तब उसे प्रत्यक्ष ज्ञात होगया कि, वह तो अपने उचित परिश्रम द्वारा अपनी संसार माया चलाते हैं और वह अपनी संसार यात्राके लिये नाना प्रकार के वेश और दम्भकी बातोंसे संसार को बहकाकर अपना नाम बढ़ाता है। जिन बातोंके भेदको वह स्वयम् नहीं जानता उसको जानने का डौल बनाकर लोगोंको ठगता और भ्रममें डालता है। इस प्रकार से बोध होते ही उसने पश्चात्ताप करके अपने सब स्वांगों को तिलाँजली देकर काल देशसे निकलने और सत्यराज्य में प्रवेश करनेके लिये सच्चे संतोंका संग करना आरम्भ किया।

वार्त्ता १४

एक दिन परिश्रम करने पर भी आपको भोजन नहीं मिला। आपने साहिब को धन्यवाद दिया। इसी प्रकार सात दिन तक आपको भोजन नहीं मिला और बराबर आप साहिब को धन्यवाद करते रहे। आठवें दिन निर्बलता बहुत बढ गयी तब आपके मनमें कुछ भोजन मिलने की इच्छा हुई। साहिब की कृपासे एक मनुष्य आकर खड़ा हुआ और विनय करने लगा कि, आप मेरे यहां भोजन करने चलिये उसके प्रेम और भक्ति भावको देखकर आप उसके साथ गये जब आप उस आदमी के घर पर पहुँचे तब उसके अमीराना ठाट और मकानात के देखनेसे मालूम हुआ कि, कोई बडा धनी आदमी है। उसने आपको एक सजी हुई कोठरीमें ले जाकर बैठाया फिर वह आपके पैरों पर गिरकर विनय पूर्वक कहने लगा कि, मैं

आपका मोल लिया हुआ दास हूँ सो यह सब वैभव आपकी सेवा में अर्पण करता हूँ, इसे स्वीकार कीजिये। आपने उसी समय उससे कहा कि, आजसे मैं तुझे दासत्व से स्वतंत्र करता हूँ और यह सब माल असबाब भी तेरे ही को देता हूँ। इतना कहकर आप वहांसे उठकर जंगल में चले आये और साहिबसे प्रार्थना करने लगे "हे प्रभु! आजसे तेरे सिवाय दूसरा कुछ न चाहूँगा। तू तो टुकडे रोटीके बदले संसार भरकी माया मेरे गले बांधना चाहता है"। कहते हैं कि, आपने मनका दण्ड देनेके लिये कई दिनों तक और भी भोजन नहीं किया।

सद्गुरु ने सबसे अधिक मनके ऊपर ही ध्यान रखने को बारंबार कहा है। यथा-

साखी-मनके मते न चालिये, छाडि जीवकी बानि।
कतवारीके सूत ज्यों, अलटि अपूठा आन॥
मनके मते न चालिये, मनका मता अनेक।
जो मनपर असवार है, सो साधू कोइ एक॥
चिंता चित विसारि कै, फिरी न बूझिये आन।
इन्द्री पसारा मेटिये, सहज मिले भगवान्॥
मनको मारो पटकिके, टूक टूक ह्वै जाय।
टूटे पीछे फिर जुटे, बीच गांठ रहि जाय॥

मनका विशेष वर्णन मन बोध ग्रन्थमें देखनेसे मालूम होगा

वार्त्ता १५

सुलतान इब्राहीम अद्धमसाहबको निद्रा नहीं आती थी। एक बार बहुतसे आदमियोंने मिलकर इस बातकी परीक्षा ली। आपने पूछा कि, आपको निद्रा क्यों नहीं आती? आपने उत्तर दिया जिस कालने बडे बडे ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर

और औलियाओंको साहिबसे विमुख कर दिया। वह सदा जाग कर सत्यपथके जीवोंको भटकानेकी युक्ति रचता रहता है, तब हमको सोनेकी फुरसत कैसे मिल सकती है ?

सच है। साहबने कहा है।

काल खडा शिर ऊपरे, जागु विराने मीत।
जाको घर है गैल में, सो कस सोवै निचिंत॥

वार्त्ता १६

एक बार सुलतान इब्राहीम अद्धम साहब एक टूटे हुये मकानमें ठहरे हुए थे। उसमें और भी बहुतसे मुसाफिर उतरे थे। रातको ठंढी ठंढी हवा और साथ ही साथ पानीके छींटें भी पड़ने लगीं।

उस मकानका द्वार टूटा हुआ था। इससे मकानके अन्दर ठंढी हवा और पानी आकर मुसाफिरोंको कष्ट पहुँचा रहे थे। आपसे उनका कष्ट देखा न गया। आप चुपचाप उठकर द्वार पर जाखड़े हुए। जिससे अन्दरके मुसाफिरोंको तो आराम हुआ किन्तु आप ठंढसे ठिठुर गये। सबेरा होनेपर लोगोंने देखकर पहचाना और आगसे सेकनेपर जब आपको होश आया, तब लोगोंने पूछा कि, आपने ऐसा क्यों किया ? तब आपने कहा कि, बहुत सी जानोंको बचानेके लिये एक का जान काममें आवे और बहुतोंकी तकलीफ दूर करनेके लिये एकको थोड़ी तकलीफ उठानी पडे तो इससे बढकर अच्छा काम क्या होसकता है। इसलिये मैं द्वार पर खडा हो गया जिससे एक मेरी तकलीफ के बदले इतने मुसाफिरों को आराम होवे। सच है।

दया भाव जानै नहीं, ज्ञान कथे बेहद।
तेनर नरकै जायँगे, सुनि सुनि साखी शब्द॥

वार्त्ता १७

सहलबिन इब्राहीम नामक संतने कहा है कि एकबार वो सुल्तान इब्राहीमके साथ सफर में थे, संयोगसे वो बीमार पड-गये। सुल्तानके पास जो कुछ वस्त्रादि था बेंचकर उनकी रक्षामें लगा दिया अन्तमें जब कोई सवारी भी नहीं रही तब सहलबिन इब्राहीमने कहा " मैं बहुत कमजोर हो गया हूँ अब आगे कैसे जासकूंगा ? " आप उन्हें अपनी गर्दनपर बैठाकर तीन मंजिल-तक लेगये, जबतक वो अच्छे भी हो गये *

वार्त्ता १८

सुल्तान इब्राहीम अद्धमके साथ जो कोई रहनेकी इच्छा प्रकट करता था। आप उससे तीन वचन ले लेते थे तब उसको अपने साथ रखते थे।

१ पहला नियम उनका यह था कि, आप किसीसे सेवा नहीं कराकर सबकी सेवा आप ही करते थे।

२ दूसरा नियम यह था कि, भजन करनेके समय का सबको सूचना देना अपने ऊपर रक्खा था।

३ तीसरा नियम यह कि, मण्डली का कोई आदमी भी सुकृति की कमाई से जो कुछ कमा के लाता था उसको मण्डली में समान उपयोगमें लगाते थे।

इन नियमोंमें से एक भी नियम जिसको अस्वीकृत होता था उसको अपनी मण्डली से बाहर करदेते थे।

---

* नोट—धन्य है इस पर उपकारको। आजकलके साधुओंको ध्यान देकर इस बातको विचारना चाहिये। क्यों कि, वर्तमान में साधुओंकी यह नीति हो गई है कि, सफर तो सफर किसी विशेष स्थान पर भी कोई बीमार पड़जाय तो उसे एक गिलास पानी तक देना बुरा समझते हैं। मैंने बहुतसे ऐसे दृष्टान्त देखे हैं और स्वयं भी उसके संग रहकर भोग लिया है।

आज कलके महंतोंको इस बात पर ध्यान देना चाहिये क्यों कि, वर्तमानके महंत या मण्डलीके मुखिया साथके साधुओंकी पूजा और भेंटको भी हड़प जाते हैं।

वार्ता १९

एकवार किसीने सुलतान इब्राहीम अद्हम साहबसे पूछा कि, आपका पेशा (धन्धा) क्या है ? आपने उत्तर दिया "मैंने संसारको तो उसके चाहने वालों पर छोड दिया है और परलोकको परलोकके चाहने वालोंके लिये। किन्तु अपने लिये मैंने केवल साहबका भजन रक्खा है। सच है साहबने कहा है।

साखी—माला जपूं न कर जपूं, मुखसे कहूं न राम।
मेरा हरी मोंको जपे, मैं पाऊं विश्राम॥

वार्ता २०

एक वार किसीने सुलतान इब्राहीम अद्धमसे पूछा कि आपने ऐसी अधीनता और दासापन कहाँसे सीखी। आपने उसे उत्तर दिया कि "एक वार मैंने एक दासको मोल लिया। जब उसे साथ लेकर अपने स्थान पर आया तो उससे पूछा कि, तेरा नाम क्या है ? उसने उत्तर दिया कि, जिस नामसे आप पुकारें वही मेरा नाम है। फिर मैंने पूछा तू खाता क्या है ? उसने कहा जो आप खिलावें। फिर मैंने पूछा कि, तू पहनता क्या है ? उसने जवाब दिया जो आप पहनावें। फिर मैंने कहा तू करता क्या है ? उसने कहा जो आप हुक्म देवें। फिर मैंने कहा तू चाहता क्या है ? उसने कहा जो दास है उसको अपनी इच्छा कहां है ? जिसको अपनी इच्छा है वह दास ही नहीं है। आप फरमाते हैं कि, उस दासकी बातोंको सुनकर उसी दम उसको दासत्व से मोक्ष दे दिया

और उसीदम से अपना सब कुछ साहबको सौंप दिया। फिर जैसा वह चाहता है करता है। मैं न तो आधीनता करता हूँ न दासापन जो कुछ है साहबका है मेरा कुछ नहीं।

नोट—वर्तमान कालके दास पदवी के अभिमानी कबीर पंथी साधुओंको उपर्युक्त सुलतान के दासके वचनों पर ध्यान देना चाहिये क्योंकि यद्यपि आजकलके कबीरपंथी साधुओंके नाममें दास शब्द अवश्य जुटा होता है और उनके मनमें भी दास शब्दका बडा भारी अभिमान रहता है यहां तक कि, यदि किसी कबीर पंथीके नाममें दास शब्द न जुटा हो अथवा किसी का नामही ऐसा हो कि, उसके नामके साथ दास शब्दका जोड न मिलता हो तो उस दास शब्दसे हीन सच्चे दासको भी वचनों और व्यंगोंके मारे तंग करते रहते हैं और बल पूर्वक उसके सुन्दर प्रसिद्ध नामको बिगाडने का प्रयत्न करते हैं और आप दास कहलाकर भी स्वामीपनेके ऐसे दम्भ और अहंकार में पडे रहते हैं कि, अपने गुरु (जैसे माता पिता, दीक्षा गुरु आदि) से भी मान चाहते और उनसे अपना पग पुजवाते हैं। और सतगुरुके बचनका ध्यान भी नहीं रखते क्यों कि, सतगुरुका वचन है।

गुरुको नीचा करि जानई, गुरु से चाहे मान।
सो नर नरके जायगा, जन्म जन्म होय स्वान॥
दासापन तो हृदय नहिं, नाम धरावै दास।
पानीके पीये विना, कैसे मिटै पियास॥
नाम धरावै दास जो, दासापन हो लीन।
कहै कबीर लौलीन बिनु, स्वान बुद्धि कहि दीन॥
दासापन हृदय बसै, साधन सों आधीन।

कहै कबीर दास सो, दास लक्ष लौलीन ॥
स्वामी होना मोहरा, दोहरा होनादास ।
गाडर आनी ऊनको, बांधी चरै कपास ॥
निर्बन्धन बन्धा रहै, बन्धा निर्बंध होय ।
कर्म करै कर्ता नहीं, दास कहावै सोय ॥

वार्ता २१

एक ने आपसे एकदिन प्रार्थना की कि, आप मुझे उपदेश दीजिये । आपने उसको कहा कि, एक साहिब को याद रख और संसार को भूल जा । एक दूसरेने भी आपसे उपदेश मांगा आपने उसे कहा कि, बन्धे को खोल और खुलेको बांध । उस आदमीने कहा मैंने इसका अर्थ नहीं समझा । तब आपने उसको समझाया कि, थैली का मुंह खोल अर्थात् जो कुछ तेरे पास है उससे परमार्थ कर और-जबान को बांध अर्थात् बहुत बोलना छोडादे । सत्य है सत्य गुरुने कहा है ।

जिह्वाको दे बन्धने, बहु बोलना निवार ।
सो परखीसे संग करु, गुरुमुख शब्द विचार ॥

इसी प्रकार से सुलतान इब्राहीम अद्धम साहब के विषयमें हजारों वार्ता प्रसिद्ध है । यहाँ ग्रन्थ बढ जानेके भयसे मेरे पास जितनी वार्ताओंका संग्रह है उन सबोंको नहीं लिख सकते । आपकी जीवनीके साथ अधिक लिखने का प्रयत्न किया जायगा ।

इति सुलतान इब्राहीम अद्धम साहबका संक्षिप्त
जीवन चरित्र समाप्तः
इति बोधसागर पूर्वार्द्ध समाप्तमिदं